नहीं मिलती तो मैं एकबारगी हां करने जा रही थी।'

'बिलकुल याद है।' मैं बोला, 'लेकिन आप एकदम इंकार कर बैठीं।'

'मैं हां इसलिए करने जा रही थी, क्योंकि मुझे लगा था कि मेरी नकाबपोशों वाली झूठी कहानी को सच्चाई का बल मिल जाएगा। किन्तु तभी मेरी अन्तरात्मा से आवाज आई कि किसी निर्दोष को फंसाने का काम मुझे नहीं करना चाहिए—इसलिए मैंने तुरन्त इन्कार कर दिया।'

'आपके इस उपकार के लिए मैं आपका आभारी हूं।'

'उपकार तो तुमने किया है मुझ पर। मुझे अपना खून देकर।'

'किसने किस पर उपकार किया है, इसका फैसला तो बाद में होता रहेगा। नकाबपोशों का बयान तुम्हें याद कराने के बाद क्या हुआ?' मालती बोली।

'दस बजे के करीब सुलोचना अपना काम निपटाकर ऊपर बरसाती में सोने चली जाती थी। जाने से पहले वह एक चाय पीती थी—यह मुझे मालूम ही था। उस रात मैंने किसी बहाने से किचन में जाकर उसकी जानकारी के बिना उसकी चाय में नींद की दवाई मिला दी थी, ताकि रात में किसी कारण से उसकी नींद न खुल जाए। रात को ग्यारह बजे के करीब तेरे फूफा ने मेरे हाथ-पैर और मुंह बांधकर डाल दिया। फिर वे बाहर चले गए, अपना बाकी का काम निपटाने के लिए। उन्हें कब्र खोदकर उसमें लाश डालने के बाद तेजाब डालकर कब्र को पाट देना था और फिर बहुत ही आवश्यक सामान साथ लेकर वहां से चले जाना था। लेकिन जाने से पहले वे अन्तिम बार मुझसे मिलकर अवश्य जाते। मैं बंधी पड़ी इन्तजार करती रही, लेकिन वे अन्तिम बार मिलने के लिए नहीं आये। उसी हालत में पड़े-पड़े मुझे कब नींद आ गई, कुछ नहीं पता।

जब जागी तो सुलोचना मेरे बन्धन खोल रही थी। उसके मुंह से जब तेरे फूफा की हत्या की बात सुनी तो मैं यही समझी थी कि वे अपना काम पूरा करके चले गए हैं और उस अजनबी की विकृत लाश मिली होगी जिसे कपड़ों के कारण मोहन साहब समझ लिया होगा। यह तो मेरे ख्वाबो-ख्याल में भी नहीं था कि किसी ने उन्हीं की हत्या कर दी होगी।

जब पुलिस मेरा बयान लेने के लिए आई तो मैंने योजना-नुसार वह नकाबपोशों की कहानी सुना दी, जोकि तेरे फूफा ने मुझे याद कराई थी, जब जय यहां आया तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह काठमांडू नहीं गया। हालांकि उसके रुक जाने से सारी योजना बिगड़ जाने का डर था कि कहीं वह किसी खास पहचान के आधार पर यह न कह दे कि वह उसके डैडी की लाश नहीं है। किन्तु मैं उस समय कुछ नहीं कर सकती थी, इसलिए मुझे यही कहना पड़ा कि उसका काठमांडू न जाना अच्छा ही हुआ। क्योंकि मुझे पक्का विश्वास था कि जो भी लाश मिली है वह तेरे फूफा की नहीं है, इसलिए मैंने भी लाश को देखने के लिए कोई जल्दी नहीं दिखाई। किन्तु जब मैंने लाश देखी तो मेरे होश उड़ गए और मैं पछाड़ खाकर गिर गई।

दोबारा जब होश में आई तो तू भी आ चुकी थी और मेरे पास ही थी। उस समय मेरी हालत कुछ सोचने-समझने लायक नहीं थी। दिमाग काम ही नहीं कर रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया। योजना तो कुछ और थी, वह गड़बड़ा कैसे गई? उनकी हत्या किसने कर दी? यह सवाल मेरे दिमाग में घुमड़ रहे थे, किन्तु इनका कोई जवाब मेरे पास नहीं था।

उसके बाद जय कर्नल चोपड़ा के साथ लाश लेने के लिए शहर चला गया। तू मेरे पास से इधर-उधर हुई तो मैंने चुपके से तलघर में जाकर देखा। उस अजनबी की लाश वहां पड़ी हुई थी। मैंने सोचा कि अभी तक तो इस लाश का पता पुलिस को नहीं लगा है। अगर यह लाश पुलिस ने यहां बरामद कर ली तो क्या होगा? ब्रेहन हाऊस का सारा मान-सम्मान मिट्टी में मिल जाएगा। सब-कुछ भूल-भालकर मैं सिर्फ यही सोचने लगी थी कि उस लाश से छुटकारा कैसे पाया जाए? एक बार यह बात भी दिमाग में आई थी कि लाश को कार में डालकर कहीं दूर जंगल में फेंक आऊं। किन्तु मन का चोर सिर उठाकर डरा रहा था कि अगर कहीं मैं लाश के साथ पकड़ी गई तो क्या होगा? और जब कुछ समझ में नहीं आया तो मैंने मालती को विश्वास में लेने का निश्चय किया।'

अन्तिम वाक्य मिसेज ब्रेहन ने मुझे सम्बोधित करके कहा।

था।

फिर वे मुझे ही सम्बोधित करते हुए आगे बोली—'किन्तु मालती को भी मैं सब-कुछ यानी बीस साल पहले की वह घटना तो नहीं बता सकती थी, क्योंकि तब यह अपने देवता स्वरूप फूफा के बारे में न जाने क्या कुछ और सोचती। मैंने इसे कुछ बात गोल-मोल रखकर बाकी सब-कुछ सच-सच बता दिया। मुझे खुशी है कि मालती ने मेरा विश्वास किया और ज्यादा सवाल पूछे बिना सहयोग देने को तैयार हो गई। हम दोनों के बीच यही फैसला हुआ कि लाश को कहीं दूर डालकर आने का खतरा मोल न लें। क्योंकि कहीं कोई जरा-सी गड़बड़ हो गई तो मामला सम्हालना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए आपस में यही निर्णय लिया गया कि अन्धेरा होने के बाद लाश तलघर से निकालकर बाहर बगीचे में उसी जगह डाल दी जाए जहां त्रेहन साहब की लाश पुलिस को मिली थी। इससे पुलिस यही समझेगी कि यह भी उसी का काम है जिसने त्रेहन साहब की हत्या की है और हमारे बारे में किसी को शक न होगा।

ऐसा ही किया गया। अंधेरा होते ही सुलोचना को सब्जी खरीदने के बहाने से बाजार भेजा गया और बाद में हम दोनों ने मिलकर तलघर में से लाश निकाली और बाहर बगीचे में डाल दी। उसके बाद जो कुछ भी हुआ, वह सबको ही मालूम है।'

सब-कुछ बताकर मिसेज त्रेहन ने एक दीर्घ निःश्वास ली और मैं बैठा हुआ सोचता रहा कि मनुष्य का जीवन भी कितनी विचित्रताओं से पूर्ण है। जयन्त कोठारी हुस्न को चमक और जवानी के जोश में अन्धा होकर एक भयानक अपराध कर बैठा। दूर देश में जाकर उसने जगत त्रेहन के नाम से एक नई जिन्दगी शुरू की। अपनी पिछली जिन्दगी को शायद वह पूरी तरह भूल भी गया था। बीस साल का लम्बा अन्तराल कोई थोड़ा तो नहीं होता। किन्तु जगत त्रेहन चाहे सब-कुछ भुला चुका था किन्तु उसके अपराध ने उसे नहीं भुलाया था। तभी तो काठमांडू में उसकी तबियत खराब रहने लगी तो डाक्टरों ने उसे किसी समुद्र-तटवर्ती इलाके में रहने के लिए कहा। बहुत कुछ सोच-समझकर भरतपुर जैसी गुमनाम जगह में रहने का फैसला किया। लेकिन किस्मत का खेल भी कैसा खेल है कि वही

राधा देवी जिसकी वजह से, उसने बीस पहले एक कत्ल किया था यहां उसकी पड़ौसिन थी। बीस साल पहले जिस राधा देवी के सौंदर्य पर मोहित होकर वह उसे किसी भी कीमत पर हासिल करना चाहता था, बीस साल बाद वही राधा देवी उसे ब्लैकमेल करने लगी।

विचित्र—किन्तु सत्य।

'सारा रहस्य तो खुल गया।' मैंने अपनी सिगरेट पीने की इच्छा संयत रखते हुए पूछा—'लेकिन यह अभी भी पता नहीं चला कि त्रेहन साहब की हत्या किसने की?'

'रमला ने स्वीकार तो कर लिया है कि हत्या उसने की है?' मालती बोली।

'स्वीकार तो उसने कर लिया है।' मैंने कहा—'लेकिन जो हालात बताए जा रहे हैं, उनमें नहीं लगता कि उसने हत्या की होगी।'

'उसने हत्या की या नहीं, यह देखना पुलिस का काम है।' मालती बोली—'तुम मुझे यह बताओ कि अब जब कि तुम सच जान गए हो और यह मालूम हो गया है कि फूफी निर्दोष हैं—अब तुम्हारा क्या इरादा है?'

'मतलब?'

'क्या तुम पुलिस को जाकर यह बताओगे कि वह दूसरी लाश कहां से आई?'

'कौन-सी लाश?'

मेरी बात सुनकर मिसेज त्रेहन के पीले और कमजोर चेहरे पर पहली बार एक हल्की-सी मुस्कराहट उभरी और वह बोली—'अगर तुमने त्रेहन हाऊस के सम्मान को बदनाम होने से बचा लिया बेटे तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगी।'

'मैं इस बारे में खामोश रहूंगा यह बचन देता हूं आपको।' मैंने कहा—'किन्तु यह नहीं जानता कि त्रेहन हाऊस का सम्मान बच पाएगा या नहीं।'

'वह क्यों?'

'अगर कहीं यह साबित हो गया कि जय ने ही अपने पिता की हत्या की है…।'

'ऐसा कभी नहीं हो सकता।' मिसेज त्रेहन ने लगभग तड़पकर कहा—'जय सब-कुछ कर सकता है। किन्तु अपने

पिता की हत्या नहीं कर सकता।'

'इस बात का पूरा भरोसा है आपको?'

'अगर भरोसा न होता तो उसकी गिरफ्तारी की खबर सुनते ही यूं बेहोश होकर सीढ़ियों पर से न लुढ़क पड़ती मैं।' मिसेज ब्रेहन ने कहा—'मैंने चाहे उसे जन्म न दिया हो किन्तु उसे पाल-पोसकर बड़ा किया है। मैं उसकी मां हूं। अपने पिता की तो क्या, वह किसी की भी हत्या नहीं कर सकता। बड़ा कोमल स्वभाव है उसका। दूसरे को दुख देने की बजाए स्वयं दुख झेलने की आदत है उसे।'

'फिर भी एक खतरा और है।'

'कौन सा?' मालती ने पूछा।

'मलखान का?' मैंने कहा—'बशेशर उसके हीरे लेकर भागा था। मलखान को यह भी मालूम है कि अन्तिम बार बशेशर ब्रेहन साहब की कार में बैठते हुए देखा गया था। अगर उसने यह बात कहीं पुलिस को जाकर बता दी तो…'

'लेकिन उस आदमी के पास हीरे नहीं थे।' मिसेज ब्रेहन ने अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा—'मैंने खुद ब्रेहन साहब के साथ मिलकर उसके कपड़े उतारे थे और मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि उसके पास हीरे नहीं थे।'

'हीरे उसके ओवरकोट में लगे प्लास्टिक के बटनों में छिपे हुए हैं। उसके उतारे हुए कपड़े कहां हैं?'

'वे तो हमने एक भारी पत्थर के साथ लपेटकर पिछवाड़े के एक पुराने कुएं में फेंक दिए थे।'

'उन्हें वहां से निकालना होगा।'

दोनों में से कोई कुछ नहीं बोली।

'जाहिर है, जब आपको हीरों के बारे में कुछ मालूम ही ही नहीं है तो वे बटन ओवरकोट में लगे होने चाहिए और उनमें हीरे होंगे ही! वे हीरे अगर मलखान को वापिस मिल जाएं तो वह शायद कोई गुल-गपाड़ा न मचाए।'

'तो तुम वहां से वे हीरे निकालकर उसे दे दो।' मिसेज ब्रेहन ने विनती भरे-से स्वर में कहा—'नहीं जानती कि तुम्हारे इस एहसान का बदला मैं कैसे चुका पाऊंगी। तुमने अपना खून देकर मेरी जान बचाई है। अब इस बेकार की मुसीबत से और बचा लो तो मैं जीवन भर तुम्हारा उपकार

नहीं भूलूंगी।'

हम लोगों के बीच यह तय हुआ कि अन्धेरा होते ही सुलोचना को खरीदारी के बहाने से बाजार भेज दिया जाएगा और उसके बाद मैं रस्सी के सहारे कुएं में उतरकर कपड़े निकाल लूंगा। मिसेज त्रेहन इमारत में ही रहेंगी, ताकि कोई मौके बेमौके शोक प्रगट करने के लिए आए तो उसकी शोक संवेदनाएं ग्रहण कर सकें।

मालती को कुएं के पास रहना था, ताकि कोई गलती से उधर आए तो उसे रोक सके और मुझे सावधान कर सके।

▭ ▭

हम लोग सब-कुछ निश्चय करके उठने ही वाले थे कि तभी सुलोचना चाय की ट्रे लेकर आ गई। साथ में कुछ बिस्कुट वगैरह भी थे।

पैर से एक छोटी-सी मेज पलंग के पास को सरकाकर उस पर चाय का सामान रखती हुई वह मुझसे बोली—'आपने जो हमारी मालकिन को अपना खून देकर बचा लिया, सो बहुत अच्छा किया बाबूजी! भगवान आपको इस पुण्य का फल जरूर देगा।'

'वह तो मेरा फर्ज था।' मैंने औपचारिकता से शब्द दोहरा दिए।

'मालती बिटिया, एक-दो बिस्कुट मालकिन को भी खिला देना।' जाने से पहले सुलोचना ने कहा—'तीन दिन से अन्न का दाना नहीं छुआ है।'

सुलोचना के जाने के बाद मालती के इशरार पर मिसेज त्रेहन ने एक बिस्कुट उठा लिया।

चाय डालने के बाद मुझे और मिसेज त्रेहन को देने बाद स्वयं भी अपना कप उठाते हुए बोली—'वैसे फूफी एक बात बताओ।'

'क्या?' चाय का घूंट लेने के बाद मिसेज त्रेहन ने पूछा।

'फूफा ने जो बीस साल पहले वह हत्या का अपराध किया था, क्या उसकी सजा जय को मिलनी चाहिए।'

'नहीं—कदापि नहीं।'

'तो फिर राधा देवी के अपराध की सजा शिल्पा को क्यों मिले?'

मिसेज त्रेहन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चाय से उठती हुई भाप को देखती रही।

'जरा सोचो तो फूफी।' मालती समझाने के-से स्वर में बोली—'जय शिल्पा से प्रेम करता है। अगर वह उससे विवाह करना चाहता है तो कर लेने दो।'

'नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।' मिसेज त्रेहन ने दृढ़-स्वर में इंकार करते हुए कहा—'कम से कम अपने जीते जी तो यह शादी नहीं होने दूंगी।'

'मगर क्यों?'

'क्योंकि वह उस औरत की बेटी है जिसने तेरे फूफा की जिन्दगी खराब करके रख दी।'

'लेकिन इसमें बेचारी शिल्पा का क्या दोष?'

'यह सब मैं नहीं जानती। मुझे सिर्फ इतना पता है, कि बीस साल पहले तेरे फूफा ने जो ब्रह्म हत्या का अपराध किया था तो इसी राधा के लिए किया था बल्कि इसके उकसाने पर ही किया था। आज बीस साल बाद भी इस घर पर जो बज्रपात हुआ है उसका कारण भी यह चुड़ैल राधा ही है। उसकी बेटी त्रेहन हाऊस की बहू बनकर आए यह मैं कभी बर्दाश्त न कर सकूंगी। जब-जब भी मुझे उस लड़की की शक्ल दिखाई देगी तब-तब अतीत की सारी दुखद घटनाएं मेरी आंखों के सम्मुख उभर आएंगी। यह त्रास दी मुझसे बर्दाश्त न होगी। इसीलिए मैं किसी भी हालत में यह शादी न होने दूंगी।'

'लेकिन जय इस बार दृढ़-निश्चय कर चुका है। मुझे लगता है वह तुम्हारे रोके न रुकेगा।'

'अगर जय ने इस लड़की से शादी कर ली तो जैसा कि मैं कह चुकी हूं जय से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। अपनी दौलत में से एक पाई भी उसे नहीं लेने दूंगी। सब-कुछ दान करके काशी चली जाऊंगी मैं।'

मुझे लगा कि इस मामले में मां-बेटे का टकराव होकर रहेगा। क्योंकि दोनों ही अपने-अपने निश्चय पर दृढ़ दिख रहे थे।

▭ ▭

मिसेज त्रेहन को आराम करने की सलाह देकर जब मैं और मालती बाहर निकले तो दिन का तीसरा पहर था। अन्धेरा

होने में अभी देर थी।

वक्त काटने की गरज से मैंने मालती से कहा—'क्या ख्याल है, एक नजर जय को देख आएं कि अब कैसी तबियत है उसकी। जब छोड़कर आया था तो बहुत तेज बुखार था उसे।'

'चाहती तो हूं किन्तु फूफी से डर लगता है।'

'क्यों?'

'देखा नहीं, उस घर के प्रति कैसी भयानक नफरत है उनके दिल में। मेरा वहां जाना शायद उन्हें अच्छा न लगे। तुम्हीं देख आओ और आकर बताना कि अब कैसा है जय।'

कुछ वक्त काटना था इसलिए जय के हालचाल पूछने के बहाने मैं राधा देवी के यहां पहुंच गया। वास्तविकता तो यह थी कि मैं उस औरत को एक बार फिर से भरपूर नजर देख लेना चाहता था जिसके लिए आज से बीस साल पहले जगत यानी जयन्त कोठारी ने कत्ल कर दिया था और अब बीस साल बाद उसे उस कत्ल के लिए ब्लैकमेल भी कर रही थी जो कि उसी के उकसाने पर किया गया था।

भीतर घुसकर मैंने देखा कि उदास शिल्पा जय के सिरहाने बैठी हुई थी।

'अब कैसी तबियत है?'

'जब से डाक्टर इंजेक्शन लगाकर गया है तभी से बेहोश पड़ा है।' मेरे सवाल के जवाब में राधा देवी ने जवाब दिया।

मैं बात तो जरूर कर रहा था किन्तु मेरी आंखें राधा देवी का ही निरीक्षण कर रही थीं और मैंने पाया कि खंडहर बता रहे हैं इमारत बुलंद थी वाली बात राधा देवी पर बिलकुल सटीक बैठती थी। अपनी जवानी के दिनों में वह निश्चित रूप से अनिद्य सुन्दरी रही होगी। शिल्पा से भी ज्यादा खूबसूरत। इतनी खूबसूरत कि अगर उसे हासिल करने के लिए जगत ने हन यानी जयन्त कोठारी ने कत्ल कर दिया तो कोई ताज्जुब नहीं।

लेकिन क्या इसने जगत ने हन का कत्ल किया है?'

'शायद।

लेकिन नहीं, यह जगत ने हन का कत्ल नहीं कर सकती। किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि इस कारण कि यह जगत ने हन को ब्लैकमेल कर रही थी इतनी बेवकूफ वह दिखाई नहीं

दे रही थी कि जगत श्रेहन सरीखी सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी को वह खद हलाल कर देने की मूर्खता करेगी।

फिर जगत श्रेहन की हत्या किसने की?

इस सवाल का फ़िलहाल कोई जवाब मुझे नहीं सूझ रहा था।

काफी देर तक इधर-उधर की बातचीत होती रही। लेकिन अपनी बातचीत में न मैंने बीस साल पहले वाली घटना का जिक्र किया, न यही जाहिर होने दिया कि मुझे ब्लैकमेलिंग वाली बात मालूम है।

जब मैं चलने को हुआ तो मुझसे राधा देवी ने पूछा—'जय क्या यहीं रहेगा?'

'हां, अभी तो यहीं रहेगा।' मैंने कहा—'क्योंकि मिसेज श्रेहन अभी काफी गुस्से में हैं।'

'लेकिन यहां इसका रहना क्या ठीक रहेगा?'

'क्यों यहां क्या बात है?'

'नहीं, बात तो कुछ नहीं। लेकिन हम लोगों की तो पहले से ही काफी बदनामी हो रही है। अब रात भी होने वाली है। ऐसे में जय का यहां रहना···लोग बे मतलब की बातें उड़ायेंगे।'

'लोग बातें उड़ायेंगे तो उड़ाने दो।' शिल्पा बोली—'देख नहीं रहीं क्या हालात है इनकी। अभी तक बेसुध पड़े हुए हैं। ऐसे में क्या इन्हें उठाकर सड़क पर रख दें हम लोग। ऐसा तो कोई दुश्मन के साथ भी नहीं कर सकता, फिर यह तो हमारे।'

शिल्पा ने वाक्य पूरा नहीं किया तो राधा देवी बोलीं—'बोल-बोल बात क्यों अधूरी छोड़ दी···बेवकूफ लड़की क्यों वह सम्बन्ध जोड़ रही है जो होने वाला नहीं···क्या तू कुछ देर पहले की बात भूल गई जब मेरे मना करने के बावजूद भी तू जय के साथ वहां चली गई और उस औरत ने तुम दोनों को अपमानित करके निकाल दिया···मेरी बात गांठ बांध ले··· वह औरत अपने जीते जी यह सम्बन्ध न होने देगी···आप ही बताइए, क्या मैं गलत कह रही हूं।'

'अभी तो गुस्से में वह भी यही कह रही हैं कि अगर यह शादी हुई तो वह अपनी सम्पत्ति दान देकर काशी चली जाएंगी। लेकिन मेरा ख्याल है कि यह सब गुस्से की उत्तेजना में कही गई बातें हैं। जब क्रोध शान्त होगा, तो सब ठीक हो

जायेगा।'

'आप नहीं जानते, वह बहुत जिद्दी औरत है।' राधा देवी ने कहा—'और फिर वह कोई जय की सगी मां थोड़े ही है। सौतेली है—सौतेली। उसके लेखे जय मरे या जिए, वह अपनी जिद नहीं छोड़ेगी।'

निकलने से पहले मैंने जय की ओर देखा, जो अभी तक बेहोश था। उसके सिरहाने बैठी शिल्पा को देखा। उसके अपूर्व सौन्दर्य को देखा।

और सोचा कि शिल्पा के लिए जय भी शायद अपनी जिद नहीं छोड़ेगा।

घर से बाहर निकला तो सांझ हो गई थी।

कुछ ही देर में अन्धेरा घिर आने वाला था।

मैं एक सिगरेट सुलगाता हुआ त्रेहन हाऊस की ओर बढ़ गया जहां मालती मेरा इन्तजार कर रही थी।

▭ ▭

अन्धेरा होते ही मिसेज त्रेहन ने कुछ आवश्यक खरीदारी के बहाने से फिर सुलोचना को बजार भेज दिया। उसके जाते ही मैं और मालती एक रस्सी लेकर कोठी के पिछवाड़े के उस पुराने कुएं की ओर चल दिए। मालती ने तो टार्च भी साथ ले चलने के लिए कहा था किन्तु मैंने मना कर दिया कि वाटर प्रूफ टार्च उपलब्ध नहीं है और साधारण टार्च कुएं के पानी के भीतर बेकार रहेगी।

'लेकिन अन्धेरे में देखने के काम तो आएगी?'

'अगर अन्धेरे में वहां टार्च जलाते फिरे तो हो सकता है कि उसकी चमक देखकर कोई उधर आ जाये। तुम रहने दो। उस काम के लिए मेरे पास पेंसिल टार्च है। आओ अब देर मत करो।'

रस्सी लेकर हम कुएं के निकट पहुंचे।

पहले तो मैंने रस्सी का मजबूत फंदा बनाकर कुएं की जगत के एक मजबूत से उभार में फंसाया और फिर अन्डर वीयर के अलावा सब-कुछ उतारकर मैं रस्सी के सहारे कुएं में उतर गया। एक पेशेवर चोर होने के कारण मुझे इस काम में कोई दिक्कत नहीं आई।

मेरा ख्याल था कि कुएं में पानी काफी होगा। किन्तु उसके

विपरीत वह लगभग एक सूखा-सा ही कुआं था, जिसमें इतना पानी था कि मुश्किल से मेरे घुटनों तक पहुंच रहा था।

इससे मेरा काम और भी अधिक सहज हो गया था और मैं कुएं के भीतर पहुंचते ही कपड़ों के उस पुलिंदे की तलाश में जुट गया।

भाग्य जैसे सहायक था। भारी से पत्थर के गिर्द लिपटे कपड़ों का वह पुलिंदा-सा मुझे शीघ्र ही मिल गया।

मैं उसे खोलने ही जा रहा था कि तभी मुझे ऊपर से मालती ने खतरे का संकेत दिया और पुलिंदा फिर से वहीं कुएं में फेंककर मैं बन्दर की-सी फुर्ती के साथ ऊपर चढ़ गया।

'क्या है ?' मैंने फुस-फुसाकर मालती से पूछा।

'कोई है जो इधर ही आ रहा है ?' मालती ने एक ओर को संकेत करते हुए मेरी ही तरह फुस-फुसाकर कहा।

मैंने देखा तो काफी दूरी पर किसी टार्च की रोशनी इधर-उधर रेंगती दिखाई दी—जो हमारी ओर ही बढ़ी आ रही थी।

'यह कौन हो सकता है ?'

'पता नहीं ।' मालती घबराये-से स्वर में बोली—'लेकिन अब क्या करें ?'

मैंने कोई जवाब देने की बजाए फुर्ती से कुएं की जगत में से रस्सी का फंदा निकालकर उसे समेटा और फिर उसके साथ ही अपने कपड़े उठाकर दूसरे हाथ में मालती का हाथ पकड़ा और कुएं से कुछ दूर की घनी झाड़ियों के बीच घुस गया।

परिस्थिति ऐसी थी कि मालती बिना कोई आवाज किए मेरे साथ खिंचती चली गई।

वह जो कोई भी था, उसके टार्च जलाए रखने का मतलब यही था कि उसकी अपने आपको छिपाये रखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने अगर हमारा सम्बन्ध कुएं से जोड़ लिया तो गड़बड़ हो सकती थी।

मैं और मालती सांस रोके झाड़ियों के बीच दुबके बैठे थे।

कदमों की आहट झाड़ियों के निकट आकर रुकी और न जाने कैसे उसे हमारी वहां उपस्थिति का आभास लग गया कि वह टार्च की रोशनी सीधी झाड़ियों पर डालता हुआ बोला—

'कौन है ?'

पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई कि वह कर्नल चोपड़ा की ही आवाज़ थी। उसके सवाल के जवाब में हम दोनों ही पत्थर की तरह खामोश बैठे रहे।

मगर तभी कर्नल ने फिर कहा—'जो भी है चुपचाप बाहर निकल आओ वरना मैं गोली मार दूंगा।'

अब छिपे रहना असम्भव था। फिर भी मैंने मालती को वहीं छिपे रहने का संकेत किया और मैं झाड़ियों से रेंगकर बाहर निकल आया।

'ओह, तो तुम हो।' कर्नल ने मेरे अन्डरवीयर के अलावा सम्पूर्ण उलंग शरीर को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा—'अब तो बेटा तुम रंगे हाथों पकड़े गये। मुझे इन्स्पेक्टर से मालूम हो चुका है कि तुम चोर हो। लेकिन तुम सिर्फ चोर ही नहीं कातिल भी हो।'

'आपको गलतफहमी हुई है।'

'मुझे अगर गलतफहमी हुई है तो तुम इस वक्त यहां झाड़ियों में छिपे क्या कर रहे थे ?'

'म···मैं कातिल की तलाश में था ?' सही बहाने की खोज में मैंने अपनी खोपड़ी के घोड़े पूरी तेजी के साथ दौड़ाते हुए कहा।

'हूं···तुम और कातिल की खोज में थे।' कर्नल चोपड़ा मुझे घूरता हुआ बोला—'यानी खुद कातिल···कातिल की खोज में था···अब पुलिस सब उगलवा लेगी तुमसे।'

'मैं यह काम मिसेज त्रेहन की इजाज़त से कर रहा था।'

मेरी इस बात पर कर्नल थोड़ा-सा चौंककर बोला—'मिसेज त्रेहन की इजाजत से कर रहे थे !'

'जी हां।' सही बहाना मिल जाने की खुशी में मैं उत्साह के साथ बोला—'मिसेज त्रेहन की इजाजत से···वह उस रात अन्धेरा होते ही एक और लाश मिल गई थी न उस दिन···सो मिसेज त्रेहन को खतरा था कि आज भी कहीं कोई भयानक बात न हो जाये···इसलिए उन्होंने मुझे निगरानी करने के लिए कहा था।'

'मैं अभी मिसेज त्रेहन से ही मिलकर आ रहा हूं।' कर्नल

चोपड़ा के स्वर में अविश्वास की झलक थी—'उन्होंने मुझे बताया कि नौकरानी सुलोचना कुछ सामान लेने के लिए बाजार गई है और उसके जाने के बाद उन्हें याद आया कि डॉक्टर द्वारा बताई कोई दवाई भी मंगानी थी, सो मालती वह दवाई लेने गई है। मगर उन्होंने तुम्हारा कोई जिक्र नहीं किया।'

'अगर आपको मुझ पर शक है तो चलकर मिसेज त्रेहन से बात कर लेते हैं।'

'वह तो करनी ही पड़ेगी। मैं भी उन्हें घर में अकेली देखकर आस-पास की जांच-पड़ताल करने के लिए निकला था। क्योंकि मुझे भी यही शक था कि जैसे उस दिन मेरी और जय की, गैर मौजूदगी में उस अजनबी की लाश कहीं से आ गई थी आज भी कुछ ऐसा न हो जाये। शक सही निकला मेरा और तुम मिल गए। अब तुम्हारे सच-झूठ का पता भी चल जाएगा मिसेज त्रेहन के सामने।'

और जैसे ही हम चलने को हुए, तभी न जाने क्या हुआ कि मालती एक चीख-सी मारती हुई झाड़ियों से बाहर निकल आई।

उसे देखते ही कर्नल के चेहरे पर गहनतम आश्चर्य के भाव उभरे और वह बोला—'मालती···तुम तो मिसेज त्रेहन की दवाई लेने गईं थीं और यहां···तुम जैसी पढ़ी-लिखी लड़की और इस चोर के साथ···छिः···छिः···छिः···छिः···सोचते हुए भी घिन आती है मुझे···।'

मालती के मुंह से कोई जवाब नहीं निकला।

और तभी त्रेहन हाऊस की ओर से अजीब-सी एक चीख सुनाई दी किसी स्त्री की।

हम तीनों पहले तो चौंके, फिर एक साथ हीइमारत की ओर भाग लिए।

▭ ▭

इमारत के भीतर प्रविष्ट होने पर एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा।

सीढ़ियों के ऊपर वाले हिस्से में मिसेज त्रेहन एक ओर को सहमी और घबराई हुई-सी खड़ी थीं और उनके निकट ही दो औरतें आपस में उलझी हुई थीं। एकाएक वे औरतें पहचान में न आईं। जब पहचाना तो मैं विस्मित-सा किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा

खड़ा रह गया।

वह दोनों और कोई नहीं राधा देवी और शिल्पा थीं।

अचानक शिल्पा झटके से अलग हुई और मिसेज ब्रेहन की ओर झपटी। उसके हाथ में एक बड़ा-सा चाकू था। उसे अपनी ओर झपटते देखकर मिसेज ब्रेहन भय के मारे एक साथ कई कदम पीछे हट गई।

तभी राधा देवी के हाथ में शिल्पा की चुटिया आ गई और उसने उसे ही पकड़कर जोरदार झटका दिया जिससे शिल्पा का संतुलन बिगड़ा और वह बुरी तरह लड़खड़ाकर सीढ़ियों पर गिर पड़ी। अपने आपको सम्हालने के लिए उसने रेलिंग पकड़ने की कोशिश की किन्तु असफल रही। नतीजा यह हुआ कि वह फुटबाल की तरह सीढ़ियों से होती हुई नीचे आ गिरी।

उसका सिर तरबूज की तरह फट गया और वह बिन पानी की मछली की तरह तड़प रही थी। मैं और कर्नल उसे उठाने के लिए एक साथ उसकी ओर झपटे, किन्तु हमारे देखते-ही-देखते वह कुछ क्षण तड़पने के बाद एकदम निश्चल हो गई। सिर फट जाने के कारण वह न सिर्फ लहू-लुहान हो गई थी बल्कि उसका भेजा भी बाहर निकल आया था।

हालत राधा देवी की भी कुछ ठीक नहीं थी। उसकी गरदन और छाती में चाकू के गहरे घाव थे जिनसे बेतहाशा खून बह रहा था।

'इसे फौरन हॉस्पिटल ले चलना होगा।' उसकी हालत देखते ही कर्नल चोपड़ा ने कहा—'मालती तुम पुलिस को फोन करो।'

'शिल्पा कैसी है?' तभी राधा देवी ने कमजोर-सी आवाज में कहा।

'वह मर चुकी है।'

'मेरी बच्ची।' राधा देवी के कंठ से एक कराह फूटी।

'खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो।' कर्नल चोपड़ा ने मुझे डांटते हुए-से स्वर में कहा—'जल्दी से इसे उठाओ और हॉस्पिटल ले चलो।'

'उसकी कोई जरूरत नहीं है।' राधा देवी ने इन्कार करते हुए कहा—'अब मेरा अन्त समय आ गया है···मुझे वह सब

कह लेने दो, जो मैं कहना चाहती हूं।'

मैंने और कर्नल ने राधा देवी को हॉस्पिटल ले जाने की बहुत कोशिश की—किन्तु उसने सहयोग देने से इन्कार कर दिया।

'समय बहुत कम है।' राधा देवी ने कहा—'उस अनन्त यात्रा पर जाते हुए मैं अपने पापों का बोझ अपने साथ नहीं ले जाना चाहती न किसी निर्दोष की बददुआ ही। हां, वह लड़की जिसे हत्या के अपराध में पुलिस ने पकड़ा है, वह निर्दोष है। हत्या शिल्पा ने की थी···पानी।'

मालती दौड़कर गई और पानी ले आई।

'मैंने जीवन में जो कुछ भी चाहा वह मुझे कभी नहीं मिला।' दो घूंट पानी पीने के बाद राधा देवी ने फिर कहना शुरू किया—'मैं एक गरीब परिवार की लड़की थी दुनिया के सारे सुख बटोर लेना चाहती थी। बचपन अभाव में बीता। सोचती थी, शादी के बाद शायद संसार की सारी रंगीनियां मेरे जीवन को अपने इन्द्रधनुषी रंगों से भर देंगी। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। जिस राज कौशल से मेरी शादी हुई थी, वह भी एक मध्यमवर्ग का युवक था। मेरे कहने पर ही उसने कस्बे की अपने पुरखों द्वारा एकत्रित समस्त सम्पत्ति बेची और हम लोग दिल्ली पहुंच गए—बहुत सारा पैसा कमाने के उद्देश्य से। लेकिन बात वहां भी बनती नजर न आई। पास में जो पैसा था उससे सम्पन्नता का ढोंग बनाए रहे। तभी मेरे जीवन में दो व्यक्ति आए। एक जयन्त कोठारी, जिसकी पहली पत्नी बच्चा पैदा होते समय मर चुकी थी और दूसरा बम्बई का मिल-मालिक अरविन्द गुप्ता। यह दोनों ही मेरे रूप पर मोहित थे और मुझे हासिल करना चाहते थे। जयन्त स्वस्थ और सुन्दर था। किन्तु उसके पास पैसा नहीं था। मुझे लगा कि अगर मेरा विवाह अरविन्द से हो जाये तो मेरा ऐश्वर्य भोगने का सपना पूरा हो जाएगा। किन्तु राज कौशल, जो कि मेरा पति था—के रहते यह सम्भव नहीं था।

'लिहाजा मैं अपने पति को अपने रास्ते से हटाने के उपाय सोचने लगी। मुझे लगा कि अरविन्द भीरु है किन्तु जयन्त मुझे हासिल करने के लिए कुछ भी कर सकता है। मैंने उसे ही इस्ते-माल करने की योजना बनाई और उसके दिमाग में यह बात

डालनी शुरू कर दी कि अगर राज कौशल रास्ते से हट जाए तो हम लोगों के मन की मुराद पूरी हो जाएगी। जयन्त तैयार हो गया।

फिर एक रात योजनानुसार जयन्त ने मेरे हाथ-पैर बांधे और राज कौशल की हत्या कर दी। पुलिस को मैंने नकाबपोश की मनगढ़न्त कहानी सुनाई। जयन्त गुप्त रूप से मुझे मिला, लेकिन मेरा उद्देश्य पूरा हो चुका था, इसलिए मैंने जयन्त को दुत्कार दिया। उसके बाद वह न जाने कहां चला गया। बाद में पुलिस ने अपने पति की हत्या के अपराध में मुझे गिरफ्तार कर लिया। मुकद्दमा चला। जयन्त ने मुझसे बदला लेने के लिए पूरे विवरण सहित अदालत को पत्र लिखा जिसमें उसने बताया कि किस प्रकार मेरे उकसाने पर उसने वह हत्या की थी। लेकिन मैंने यही कहा कि जयन्त ने मुझे फंसाने के उद्देश्य से लिखा है। बहरहाल अदालत से मुझे बरी कर दिया गया। किन्तु इतना सब करने के बावजूद भी मैं अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर सकी। अरविन्द गुप्ता मुझसे शादी तो क्या करता बल्कि वह एकदम इतना पीछे हट गया कि हमेशा-हमेशा के लिए मेरी जिन्दगी से निकल गया।

उसके बाद मेरा दिल्ली में रहना भी दूभर हो गया। लोग मुझे पति-हत्यारिनी कहकर छींटे कसते। आखिर तंग आकर मैं नन्हीं शिल्पा के साथ वहां से चल दी। इस बीच कहां-कहां नहीं भटकी मैं। क्या-क्या नहीं सहा मैंने। बचपन से ही जिंदगी की सारी खुशियां समेट लेने की चाह थी मेरी, किन्तु जिन्दगी ने जितने दुख और ठोकरें मुझे दीं—उनके लिए बस यही कह सकती हूं कि भगवान वह सब दुश्मन को भी न दे।

उधर शिल्पा जवान होने लगी थी। उसके साथ उसका रूप भी दिन-ब-दिन खिलता जा रहा था। देह के लोभी भेड़ियों की नजरें उस पर पड़ने लगी थीं। जिन्दगी ने जो दुःख मुझे दिए उनसे शिल्पा को बचाना चाहती थी—इसलिए उसे लेकर यहां भक्तपुर में आकर रहने लगी। बस यही इच्छा थी कि किसी तरह इसके हाथ पीले करके किसी अच्छे घर में इसकी शादी कर दूं, किन्तु अच्छे घर में शादी करने के लिए दहेज चाहिए था और मेरे पास एक कानी कौड़ी भी नहीं थी। हमेशा भगवान से प्रार्थना करती थी कि किसी तरह मेरी नौका पार

करा दे।

फिर लगा जैसे भगवान ने प्रार्थना सुन ली हो। अपने ही पड़ोस के ब्रेहन हाउस में जब यह लोग यहां आकर रहने लगे तो मैंने जयन्त को पहचान लिया। बीस साल के अन्तराल ने कुछ परिवर्तन तो कर दिया था, किन्तु ऐसा नहीं कि उसे पहचाना ही न जा सके। अब वह जयन्त कोठारी नहीं बल्कि जगत ब्रेहन था। एक बहुत ही अमीर और पैसे वाला आदमी··· यानी···।'

मालती ने उसे फिर कुछ घूंट पानी पिलाया।

इस बीच पुलिस भी वहां पहुंच गई थी। इन्स्पेक्टर गजराज सिंह ने उसे तुरन्त हॉस्पिटल ले चलना चाहा, किन्तु राधादेवी ने दृढ़ता से इंकार कर दिया और अपना बयान नोट करने के लिए कहा।

'उसकी सम्पन्नता देखकर एकबारगी तो मेरे कलेजे में हूक-सी उठी कि काश, मैंने अरविन्द गुप्ता के चक्कर में जयन्त को न ठुकराया होता।' राधा देवी ने आगे कहना शुरू किया, 'तब उसकी सब सम्पत्ति की स्वामिनी मैं होती, किन्तु गया वक्त तो फिर कभी लौटकर नहीं आता। जयन्त को जगत ब्रेहन के रूप में मुझे देखकर मुझे लगा कि इससे अपनी बेटी के विवाह के लिए धन वसूल किया जा सकता है—क्योंकि वह अभी भी कानून की नजरों में एक फरार मुजरिम ही था—हत्या का अपराधी।

'बस मैंने उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। इस बीच शिल्पा और जय भी एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हुए और दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगे। मन-ही-मन मैं भी चाहती थी कि यह रिश्ता हो जाये तो अच्छा था, किन्तु मैं यह भी जानती थी कि चाहे कुछ भी हो जाए, जयन्त यानी कि जगत ब्रेहन किसी भी हालत में यह रिश्ता नहीं होने देगा। क्योंकि शिल्पा मेरी बेटी थी। मेरे साथ-साथ वह मेरी हर चीज से नफरत करता था। मेरी बेटी से भी। मेरे द्वारा ब्लैकमेल किए जाने पर उसकी नफरत और भी अधिक बढ़ गई थी, किन्तु मेरी भी विवशता थी। इतनी आसानी से रुपया हासिल करने का और कोई उपाय नहीं था मेरे पास।

जो शक मेरे मन के भीतर था, वह उस दिन साबित भी

हो गया, जब एक रात कोई आठ-साढ़े आठ के करीब जगत त्रेहन हमारे घर आया। उसे शिल्पा और जय के प्रेम का पता लग गया था और उसने स्पस्ट शब्दों में शिल्पा के सामने मुझसे कहा कि मैं अपनी बेटी के बढ़ते हुए कदमों को रोकूं। यह रिश्ता किसी भी हालत में नहीं हो सकता। मैंने शिल्पा को समझाने की बहुत कोशिश की, किन्तु नादान जवानी अक्ल की बात कब सुनती है। उसके बाद भी जगत त्रेहन तीन-चार बार आया हमारे यहां। यही कहने के लिए कि शिल्पा और जय का मिलना-जुलना बन्द होना चाहिए। उसने मेरे सामने यह प्रस्ताव भी रखा कि मैं मुंहमांगा पैसा लेकर शिल्पा के साथ कहीं दूर चली जाऊं, लेकिन मैंने इन्कार कर दिया। एक तो इसलिए कि अब तक की जिन्दगी में मैं इतना भटक चुकी थी कि और भटकने की हिम्मत नहीं थी मुझमें। दूसरे इसलिए भी कि मन में एक आशा थी कि अगर जय ने हिम्मत करके शिल्पा से शादी कर ली तो फिर त्रेहन परिवार को उसे स्वीकारना ही पड़ेगा। क्योंकि जय उनका इकलौता बेटा ही तो था।

फिर पता चला कि पिछले इतवार को बाप-बेटे में काफी झगड़ा हुआ और जय गुस्से में यहां से चला गया। उसके बाद तीन दिन पहले जगत त्रेहन की हत्या हो गई। मुझे नहीं मालूम कि शिल्पा ने यह हत्या कब और कैसे की। शायद मालूम भी न होता अगर आज मुझे शिल्पा का असली रूप देखने को न मिल जाता। आज मुझे पहली बार मालूम हुआ कि अपनी ही बेटी को नहीं पहचानती थी मैं। जिस शिल्पा को मैं उसकी चुप्पी के कारण सीधी-सादी और भोली-भाली समझती थी वह शिल्पा अपनी खामोशी के पीछे एक दहकता हुआ ज्वालामुखी छिपाये थी। आज शाम को वह आये थे हमारे घर।'

अन्तिम शब्द उसने मेरी ओर देखते हुए कहे जिससे एक-बारगी तो सबकी आंखें मुझ पर केन्द्रित हो गईं, किन्तु राधा देवी का बयान जारी था, इसलिए सबकी आंखें उसकी ओर घूम गई थीं।

इनसे भी पहले जय आया था और जबर्दस्ती शिल्पा को अपने साथ ले गया था। राधा देवी कहे जा रही थी—'अपनी मां का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, किन्तु मिसेज त्रेहन ने उन दोनों को ही बुरी तरह अपमानित करके निकाल दिया था

वहां से। जिससे जय को तो ऐसा मानसिक आघात लगा कि डाक्टर बुलाना पड़ा। बेचारा अभी तक बेहोश पड़ा है। आघात शिल्पा को भी लगा था किन्तु उसने जाहिर नहीं होने दिया। फिर जब यह जय की तबियत पूछने के लिए और वहां बातों-बातों से इन्होंने कहा मिसेज ब्रेहन काफी गुस्से में हैं और कह रही हैं कि अगर यह शादी हुई तो वे अपनी समस्त धन-सम्पत्ति दान करके काशी चली जाएंगी तो इनके जाने के बाद शिल्पा अपने असली रूप में आ गई।

'तब मुझे पहली बार मालूम हुआ कि शिल्पा जय के माध्यम से उसकी दौलत हासिल करना चाहती थी। उसे जय से अधिक उसकी दौलत से प्यार था, क्योंकि वह बड़े ही बिफरे हुए स्वर में क्रुद्ध शेरनी की तरह गुर्रा रही थी—मैं उस बुढ़िया को ऐसा नहीं करने दूंगी···वह बुढ़िया ऐसा नहीं कर सकती।'

यहां कुछ क्षण के लिए रुककर राधा देवी ने फिर एक-दो घूंट पानी पिया और फिर बोली—'उसका यह रूप देखकर पहले तो मैं अवाक् रह गई। फिर मैंने पूछ ही लिया कि वह मिसेज ब्रेहन को ऐसा करने से कैसे रोक लेगी? तो उसने एकदम जवाब दिया कि ऐसा होने से पहले वह उन्हें खत्म कर देगी। फिर वह गुस्से में गुर्राती रही—जो भी मेरे रास्ते में आएगा मैं उसे खत्म कर दूंगी···जगत ब्रेहन ने मेरा रास्ता रोकने की कोशिश की थी तो उसे खत्म कर दिया···सोचा था उसके खत्म होने के बाद जय और मेरे बीच की सारी दीवारें खत्म हो जाएंगी···लेकिन अब यह बुढ़िया दीवार बनने की कोशिश कर रही है तो मैं इसे भी खत्म कर दूंगी···। उसकी बातें सुनकर अवाक् रह गई थी मैं। मुझे अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। इसलिए मैंने उससे पूछ ही लिया कि जगत ब्रेहन को क्या उसने ही कत्ल किया है? जिसे स्वीकार किया उसने और बताया कि उस रात आधी रात के करीब उसकी आंख खुल गई। मैं चूंकि नींद की गोली खाकर सोने की आदी थी, इसलिए मुझे नहीं मालूम कि उस रात क्या हुआ। मैं वह बता रही हूं जो शिल्पा ने मुझे बताया। आंख खुलने के बाद शिल्पा को लगा कि जैसे कोई कहीं कुछ खोद रहा है। उसने आवाजों का अनुसरण किया तो ब्रेहन हाउस के बगीचे में

जगत ब्रेहन को कुछ खोदते पाया। उस समय उसके दिमाग में यह नहीं आया कि जगत ब्रेहन क्या खोद रहा है और क्यों खोद रहा है, बस उसे देखते ही उसे लगा कि जय और उसके बीच यही आदमी चट्टान बनकर खड़ा है। अगर इसे रास्ते से हटा दिया तो सारी दिक्कतें खत्म हो जाएंगी। जय ने उसे काठमांडू की यादगार के रूप में दो-तीन खुखरियां उपहार में दी थीं। उन्हीं में से एक खुखरी उसने निकाली और तब जबकि जगत ब्रेहन झुका हुआ था, उसने उसकी गरदन में खुखरी उतार दी और चुपचाप आकर लेट गई।

मैं यकीन नहीं कर पा रही थी कि मेरी भोली-भाली-सी शिल्पा किसी की हत्या भी कर सकती है, लेकिन यह बात वह स्वयं स्वीकार रही थी और साथ ही यह भी कह रही थी कि वह उस बुढ़िया को भी खत्म करके रख देगी। हालात की नजाकत को देखकर मैंने शिल्पा को समझाने की कोशिश कि वह जगत ब्रेहन की हत्या से तो शायद बच जाए किन्तु मिसेज ब्रेहन को मारने की कोशिश की तो न बच सकेगी। पकड़ी गई तो सारी जिन्दगी जेल में सड़ना पड़ेगा। यह भी हो सकता है कि फांसी हो जाए।

किन्तु शिल्पा पर मेरी किसी बात का कोई असर नहीं हो रहा था। लगता था कि जैसे पागल हो गई है वह। उसने अटल निश्चय कर लिया था कि आज रात वह मिसेज ब्रेहन को जिन्दा नहीं छोड़ेगी। तब जय भी उसका होगा और उसकी सारी दौलत भी।

बीस साल पहले का नक्शा मेरी आंखों के आगे घूम गया। तब मैं भी अरविन्द गुप्ता की दौलत देखकर ऐसी पागल हो गई थी कि अपने ही पति की हत्या की योजना बना बैठी थी। मुझे लगा जैसे मेरा वही पाप शिल्पा के रूप में साकार होकर मेरे सामने खड़ा है।

शिल्पा को समझाने की मेरी सारी कोशिशें बेकार हो गईं। बाहर रात का अन्धेरा घिर आया था। शिल्पा बजिद थी कि आज की रात वह मिसेज ब्रेहन को जिन्दा नहीं छोड़ेगी। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करूं और क्या न करूं। आखिर मुझे यही उपाय सूझा कि किसी तरह मिसेज ब्रेहन को सावधान कर दूं। शायद इसी से मेरे

पापों का प्रायश्चित हो सके।

आखिर मैं शिल्पा को बहाने से दूसरे कमरे में भेजकर मिसेज ब्रेहन को सावधान करने के लिए चल दी, लेकिन न जाने कैसे शिल्पा को मेरे इरादे की भनक पड़ गई और वह दूसरी खुखरी निकालकर मेरे पीछे आ गई। मैं उस समय सीढ़ियां पार कर चुकी थी, जब शिल्पा मेरे पास से गुजरकर मिसेज ब्रेहन के कमरे की ओर झपटने को हुई। वह पूरी तरह पगला गई थी। क्योंकि जब मैंने उसे पकड़ा तो उसने मुझ पर ही खुखरी से वार करके मुझे मार डालना चाहा, किन्तु मैंने उसे छोड़ा नहीं। मेरी चीख सुनकर मिसेज ब्रेहन भी बाहर निकल आई थीं। मुझसे छूटकर शिल्पा उनकी ओर झपटी तो मेरे हाथ में उसकी चुटिया आ गई और उसे रोकने के लिए मैंने उसे ही खींच लिया। वह सीढ़ियों से नीचे गिर गई। तब तक आप सब लोग भी आ गए थे।'

राधा देवी ने अपना बयान खत्म किया तो कर्नल चोपड़ा ने कहा—'अब तो तुम्हारे दिल का बोझ उतर गया, इसलिए हॉस्पिटल चलने में एतराज नहीं होना चाहिए। बहुत खून बह चुका है।'

'नहीं, हॉस्पिटल नहीं जाऊंगी मैं।' कमजोर आवाज के बावजूद भी राधा देवी ने दृढ़ता के साथ विरोध किया—'बह जाने दीजिए सारे खून तो। इन्स्पेक्टर साहब ! बयान लिख गया हो तो लाइए मैं दस्तखत कर दूं।'

इन्स्पेक्टर ने बयान पर दस्तखत करवा लिए तो बोला—'ब्रेहन साहब की हत्या की बात को समझ आ गई, लेकिन वह दूसरी लाश···।'

'उसके बारे में मुझे भी नहीं मालूम।' राधा देवी ने कहा, 'शिल्पा ने इस बारे में मुझे कुछ नहीं बताया। बात ही नहीं हुई, लेकिन मेरा ख्याल है कि उसे भी शायद शिल्पा ने मारा होगा, क्योंकि उस आदमी ने जगत के ही कपड़े पहने हुए थे। हो सकता है, धोखे से उसे जगत ब्रेहन समझकर मार डाला हो।'

इन्स्पेक्टर कुछ और पूछने जा रहा था कि तभी कर्नल बोला—'अब बाकी के सवाल-जवाब बाद में कर लीजियेगा। यह अगर अपनी मर्जी से नहीं जा रही तो इसे जबर्दस्ती उठा-

कर हॉस्पिटल ले चलिए। नहीं तो यह मर जाएगी।'

तभी अचानक राधा देवी का शरीर ऐंठा। आंखें उलट गईं और गले से अजीब घर्र-घर्र की आवाजें-सी निकलीं, फिर एक झटके के साथ शरीर एकदम ढीला हो गया।

वह मर चुकी थी।

▭ ▭

इंस्पेक्टर मुझे सिर से लेकर पैर तक इस तरह घूर रहा था, जैसे जिन्दगी में पहली बार देखा हो और फिर घुड़कते हुए-से स्वर में बोला—'तू नंगा क्यों है बे?'

और मुझे पहली बार एहसास हुआ कि मेरे शरीर पर अंडरवीयर के अलावा कुछ नहीं। वह चीख सुनकर मुझे कपड़े पहनने का होश ही नहीं रहा था और कर्नल व मालती के साथ भागा चला आया था। कपड़े मेरे अभी भी वहीं झाड़ियों में पड़े हुए थे।

इंस्पेक्टर के सवाल का मुझे तत्काल ही कोई जवाब न सूझा।

इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, कर्नल चोपड़ा बोल उठा—'मैं बताता हूं इंस्पेक्टर कि इसके कपड़े क्यों उतरे हैं।'

सुनते ही मैं कांप गया और मालती के चेहरे पर लाज की लाली फैल गई।

'उस रोज मुझे इसे पहचानने में धोखा हुआ था न।' कर्नल चोपड़ा कह रहा था—'सो यह मेरी नजर के बारे में मुझसे शर्त लगा बैठा। मैंने कहा कि बेटा अगर हार गए तो नंगी परेड कराऊंगा। यह शर्त हार गया और मैं इमारत के पिछवाड़े इसकी नंगी परेड करा रहा था कि तभी यह हंगामा हो गया और हम लोग यहां दौड़े चले आए।'

न इंस्पेक्टर ने पूछा कि शर्त क्या लगी थी, न कर्नल ने ही शर्त के बारे में विस्तार से कुछ बताया। बल्कि उसके कुछ सवाल करने से पहले ही कर्नल ने मुझसे कहा—'खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो? जाओ जाकर कपड़े पहनो।'

मैं दौड़कर बाहर निकला और झाड़ियों के बीच से कपड़े निकालकर पहने। यहां से आने से पहले रस्सी को झाड़ियों में अच्छी तरह छिपा दिया।

लौटा तो तब तक इंस्पेक्टर दोनों लाशों को वहां से हट-

वाने की व्यवस्था कर चुकने के बाद कर्नल से बोला—'कौन सोच सकता था कि वह सीधी-सादी-सी दिखने वाली लड़की हत्या तक कर सकती है।'

'सोच तो कोई भी नहीं सकता था।' कर्नल ने जवाब दिया—'लेकिन यह काम उसी का था। खुद उसकी मां ने मरने से पहले यह रहस्य खोला है।'

'हां, रहस्य तो खुल गया किन्तु वह दूसरी लाश वाली बात अभी भी समझ में नहीं आ रही। वह आदमी दिल के दौरे से मर चुका था और उसके बाद उसकी छाती में चाकू धंसाया गया है।'

'इस बात का सही जवाब तो शिल्पा ही दे सकती थी और वह मर चुकी है।' कर्नल बोला—'सब, कुछ कैसे हुआ होगा, यह तो मैं नहीं जानता लेकिन बात राधा देवी की ही ठीक लगती है कि चूंकि उस आदमी ने त्रेहन के कपड़े पहन रखे थे और शिल्पा ने उसे त्रेहन समझकर उसकी हत्या कर दी हो।'

'लेकिन उसने त्रेहन साहब के कपड़े क्यों पहने हुए थे?'

'हो सकता है कि वह भी कोई इसकी तरह नंगा-चोर हो और उसने अपना तन ढकने के लिए त्रेहन के कपड़े चुरा लिए हों। लेकिन अब इन सारी बातों पर दिमाग खराब करने का कोई मतलब नहीं।'

'कह तो आप सही रहे हैं। मगर त्रेहन साहब आधी रात के वक्त वह कब्र क्यों खोद रहे थे और वे दोनों नकाबपोश कौन थे जिन्होंने मिसेज त्रेहन को बांधकर डाल दिया था और फिर मिस्टर त्रेहन को जबर्दस्ती अपने साथ खींचकर ले गए।'

'इसका जवाब भी त्रेहन दे सकता था और वह मर चुका है।' कर्नल बोला—'मत भूलो इंस्पेक्टर कि यह वह किस्सा है जो आज से बीस साल पहले शुरू हुआ था और आज खत्म हुआ। इसके प्रमुख पात्र त्रेहन यानी भूतपूर्व जयन्त कोठारी और राधा दोनों ही मर चुके हैं। इन अनसुलझे सवालों का जवाब शायद वे ही दे सकते थे। वैसे अगर तुम्हारी जासूसी की भूख शान्त न हुई हो तो तुम इनके जवाब ढूंढने की कोशिश जारी रख सकते हो। इसके लिए तुम्हें बीस साल पुराना और लम्बा सफर तय करना होगा। लेकिन मेरे ख्याल में अब गड़े मुर्दे उखाड़ने का कोई फायदा नहीं होगा। मरने वाले तो मर

गए, किन्तु वह सब करने से जिन्दा लोगों की परेशानियां बढ़ जाएंगी।'

'आप शायद ठीक कह रहे हैं।' इंस्पेक्टर गजराज ने सह-मति में सिर हिलाते हुए कहा—'अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं।'

पुलिस के वहां से जाने तक सुलोचना भी आ गई थी। उसे सारा हाल मालूम हुआ तो मुंह बिचकाकर बोली—'अच्छा हुआ, दोनों मां-बेटी मर गईं। उनका ही ग्रहण लगा हुआ था हमारे घर को।'

कर्नल ने चाय बनाने के बहाने से सुलोचना को वहां से हटाया और फिर मिसेज ब्रेहन से बोला—'इस घर की इज्जत मेरी इज्जत है भाभी, इसलिए उस इंस्पेक्टर को तो मैंने झूठ बोलकर यहां से भेज दिया, किन्तु यह जो आपकी भतीजी है न? यह कहीं बाजार नहीं गई थी आपके लिए दवाई वगैरह लेने के लिए बल्कि इमारत के पीछे झाड़ियों में इस चोर के साथ ···छी:···छी:—छी:···मुझे तो कहते हुए भी शर्म आ रही है ···लेकिन इस चोर के कपड़े उतरे हुए तो आपने देखे थे न? उसी से समझ लीजिए और ज्यादा मैं कुछ कहना नहीं चाहता।'

मिसेज ब्रेहन को कोई जवाब नहीं सूझा। मेरी भी समझ में नहीं आया कि मैं क्या कहूं। क्योंकि मुझे इसी बात का संतोष था कि वह हमारी यहां की उपस्थिति को उस कुएं के साथ नहीं जोड़ पाया। हालत मालती की भी कुछ ठीक न थी। वह किसी चोरनी की भांति सिर झुकाए खड़ी थी।

कर्नल कुछ नसीहत देने के अन्दाज में मालती से बोला—'तुम एक पढ़ी-लिखी समझदार लड़की हो। तुम्हें यह चोर ही मिला था मुंह काला···।

बस यहीं कर्नल चूक गया।

मालती एकदम भड़ाक कर बोली—'बस कीजिए अंकल। मैंने कोई मुंह काला नहीं किया है। मैं रवि से प्रेम करती — और इससे शादी करने जा रही हूं।'

कर्नल एकदम चौकड़ी-सी भूलते हु—
करने जा रही हो?'

'शादी यानी विवाह।' मालती
देती हुई बोली—'और उस विवाह की

त्रित होंगे।'

'यानी···यानी तुम एक चोर से शादी करने जा रही हो?'

'जी हां?'

'सुन रही हो भाभी।' मालती की बेबाकी से बौखलाए कर्नल चोपड़ा ने शिकायत भरे लहजे में मिसेज ब्रे हन से कहा—'यह लड़की क्या करने जा रही है?'

'मालती पर मुझे पूरा भरोसा है।' मिसेज ब्रे हन ने सधे हुए स्वर में कहा—'यह जो कुछ भी करेगी, सोच-समझकर करेगी।'

'जब तुम्हें ही कोई एतराज नहीं है तो फिर मुझे क्या।' कर्नल चोपड़ा बाहर की ओर जाता हुआ बोला—'जो हो रहा है सो होने दो।'

तब तक सुलोचना चाय ले आई थी और उसने जाते हुए कर्नल को पुकार कर कहा—'कर्नल साहब, चाय।'

'अब तो यहां शादी की दावत खाने ही आऊंगा।'

▭ ▭

'और इस तरह वह किस्सा समाप्त हुआ जो मेरी चन्द्रहार की चोरी की कोशिश के साथ शुरू हुआ था।' रवि ने अपनी कथा समाप्त करते हुए नारायण चौधरी से कहा—'मालती के साथ मेरा विवाह हो गया। विदा के समय उसके गले में एक बहुत ही कीमती हार चमक रहा था, जिसके बारे में मिसेज ब्रे हन ने बताया कि यह वही चन्द्रहार है जिसे चुराने की मैं कोशिश में था।'

'बहुत खूब।' सुनने के बाद नारायण चौधरी ने कहा—'तुम्हारे साथ तो बिलकुल वही हुआ कि बिल्ली के भाग्य से छींका टूट गया।'

'सब आपके आशीर्वाद का फल है। आप हमेशा मुझे सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते थे, लेकिन मुझे सही रास्ता दिखाई ही नहीं देता था। हर बार चारों ओर अन्धेरा-ही-अन्धेरा दिखाई देता था और मैं फिर अपने उसी पुराने रास्ते पर चल पड़ता था। किन्तु अब आप जैसे शुभाकांक्षियों के आशीर्वाद से ईश्वर ने मुझे यह मौका दिया तो मैंने भी अपने आपको पूरी तरह से बदल दिया।'

'लेकिन मलखान के हीरों का क्या हुआ?'

'वे कुएं में पड़े ओवरकोट के बटनों में ही थे जो उसे सौंप दिए गए, इस वायदे के साथ कि वह अब जीवन में कभी भी किसी से वशेशर की चर्चा नहीं करेगा।' रवि ने बताया—'वह हमारी शादी में भी शरीक हुआ था। उसे उम्मीद नहीं थी कि मैं उसे इतनी आसानी से हीरे दे दूंगा। लेकिन जो कुछ मुझे मिल चुका था उसके बाद उन पत्थर के टुकड़ों में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। अब वह पहले से भी गहरा दोस्त बन गया है मेरा और अपराधपूर्ण जिन्दगी से सदा के लिए तौबा कर ली है उसने। गनेशी भी सुधर गया है। उसने भक्तपुर में ही एक बेकरी खोल ली है अपनी।'

'और रमला?' नारायण चौधरी ने पूछा—'उसका क्या हुआ?'

'उसकी और जय की शादी हो गई।' रवि ने बताया—'वे दोनों मिसेज ब्रेहन के साथ वापिस काठमांडू चले गए हैं। ब्रेहन हाऊस मुझे और मालती को दे दिया गया है। हम दोनों अब वहीं रहेंगे।'

'लेकिन एक बात समझ में नहीं आई कि जब रमला ने हत्या की ही नहीं थी तो उसने अपने आपको पुलिस के सम्मुख पेश करके वह इकबालिया बयान क्यों दिया?'

'जय को बचाने के लिए। दरअसल रमला वाकई जय को बेहद प्यार करती थी। उस रात जब वह भागी थी और जय ने उसका पीछा करके उसे पकड़ा था तो उसके दिमाग में यही बात आई थी कि जय ने ही अपने पिता की हत्या की है और उसके सामने वह अपने आपको निर्दोष साबित करने की कोशिश कर रहा है। हालांकि यह बात उसने जय से नहीं कही थी किन्तु जय को हत्यारा समझकर ही वह वहां से भागी थी। जब उसने लाश को छुआ था तो वह गर्म थी। जिसका मतलब था कि हत्या हुए ज्यादा देर न हुई थी। जय की वहां मौजूदगी के कारण उसका शक सीधा उस पर गया। इसीलिए वह जय को जबर्दस्ती अपने साथ वापिस शहर ले गई थी और उसे उसने यह भी समझा दिया था कि वह अपने रात को वहां होने की बात किसी से न कहे। किन्तु जब बाद में उसे अखबारों के माध्यम से यह मालूम हुआ कि जय को हत्या के अपराध में पकड़ लिया गया है तो वह तड़प उठी और जय को बचाने की खातिर सीधा

पुलिस स्टेशन पहुंची और उसने उसका अपराध अपने सिर ले लिया। खुशी की बात यह है कि अन्त में सब ठीक हो गया।'

'खैर, मुझे खशी है कि तुमने चोरी का धंधा छोड़कर एक शरीफ आदमी की तरह जीना शुरू कर दिया है।' नारायण चौधरी ने अपनी घड़ी की ओर देखकर उठते हुए कहा—'रात काफी हो गई है, अब मैं चलता हूं। बहू तो शायद सो गई होगी। मेरी ओर से यह इक्कीस रुपए उसे दे देना मुंह दिखाई के।'

'रुपए लेने के लिए तो मैं जाग रही हूं अंकल।' मालती ने दूसरे कमरे से निकलते हुए कहा।

'रुपयों पैसों के मामले में यह अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं करती।' रवि ने हंसते हुए कहा—'वैसे भी बुजुर्गों ने कहा है कि चोर चोरी से जाए, हेरा-फेरी से न जाए। अपनी भी पुरानी आदत जाते-जाते ही जाएगी।'

रुपए लेकर मालती ने नारायण चौधरी के पैर छुए और फिर उसे एक सौ रुपए देने लगी तो चौधरी ने अचकचाकर पूछा—'यह किस बात के?'

'पैरों पड़ाई के?'

चौधरी के इंकार को मालती के इशरार के आगे हार माननी पड़ी।'

एक सौ रुपए जेब में डालकर जब वह बाहर निकला तो सोच रहा था—'वाह रे चोर! चन्द्रहार चुराने गया था मगर उसके साथ-साथ ऐसी सुगढ़ और सुशील बहू भी उड़ा लाया।'

ooo

हत्या एक हत्यारे की

'विभा।' इन्स्पेक्टर सरीन ने पत्नी को पुकारते हुए कहा, 'मेरी जुराबें कहां हैं?'

नाश्ते की मेज से उठते ही उसने घड़ी की ओर देखा और अपने जूतों की ओर लपका।

विभा रसोईघर से बाहर निकलती हुई बोली—'जुराबें तुम्हारे जूतों में ही हैं। बिना देखे ही चिल्लाने लगते हो और यह क्या? नाश्ता भी पूरा नहीं किया।'

'देर हो रही है भाई।' सरीन जूते उठाकर जुराबें पहनते हुए बोला—'वहां शूटिंग पर भीड़ जमा हो गई होगी। यह फिल्म वाले जब से यहां आए हैं, बस्ती में ऊधम-सा मच गया है। न जाने कहां-कहां से लोग शूटिंग देखने के लिए चले आते हैं। इतनी भीड़ को सम्भालना कोई आसानकाम है क्या?'

'आखिर यह फिल्म वाले यहां से कब जाएंगे?'

'जब इनका काम खत्म हो जाएगा तो चले जाएंगे, लेकिन तुम्हें क्या परेशानी है?'

'मैं आभा की वजह से परेशान हूं। उसे कुछ ऐसा फिल्मी बुखार चढ़ा है कि देखकर डर लगता है।'

'डर कैसा? दो-एक दिन का तमाशा है, फिर सब नार्मल हो जाएगा। मगर आभा है कहां?'

'वह तुमसे पहले ही शूटिंग देखने चली गई है।' विभा बोली—'मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन मेरी सुनती है वो क्या और तुम हो कि उससे कुछ कहते ही नहीं। बहुत छूट दे रखी है तुमने उसे।'

'बच्ची है…।'

'उस बीस वर्ष की धींगरी को तुम बच्ची कहते हो ?'

'मेरे लिए तो वह बच्ची ही है। रिश्ते में चाहे वह साली लगती हो, लेकिन मैंने उसे हमेशा अपनी बेटी ही माना है। बच्चों के दिल में फिल्म के प्रति कुछ ज्यादा ही मोह होता है। हमारी इस पहाड़ी बस्ती में पहली बार शूटिंग हो रही है। जिसने बच्चे तो बच्चे, बड़े-बूढ़ों तक को दीवाना कर दिया है।'

'लेकिन आभा मुझे कुछ ज्यादा ही दीवानी लगती है और वह फिल्म का जो हीरो है···क्या नाम है उसका···?'

'केवल।'

'हां केवल, उसने न जाने आभा को क्या पट्टी पढ़ाई है कि उसके रंग-ढंग ही बदल गए हैं। शीशे के सामने खड़ी-खड़ी अजीब-अजीब हरकतें करती रहती हैं। साज-सिंगार भी उसका पहले से कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है। कल ही कह रही थी मुझसे कि देखना दीदी, एक दिन मैं सबसे बड़ी हीरोइन बनकर दिखाऊंगी।'

'तुम तो नाहक ही परेशान हो रही हो। आभा एक पढ़ी-लिखी लड़की है और उसे अच्छा-बुरा समझने की तमीज है। रही शीशे के सामने खड़े होकर हरकतें करने की बात तो उसकी उम्र मे मैं भी न जाने शीशे के सामने खड़े होकर क्या-क्या किया करता था। मुझे भी उस उम्र में जबर्दस्त फिल्मी बुखार चढ़ा हुआ था और अपने-आपको धर्मेन्द्र से कम नहीं समझता था। उम्र गुजर गई तो बुखार भी उतर गया। अब देख लो, बड़े आराम से बैल की तरह जुते हुए अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींच रहे हैं।'

'तुम तो मेरी बात को हंसी में उड़ा देते हो, लेकिन आभा की हरकतें देखकर मुझे डर लगता है और उस हीरो केवल को भी कोई और काम नहीं है, जो उसे···।'

'वे लोग अगर आभा को कोई महत्व देते हैं तो सिर्फ इस-लिए कि वह यहां के पुलिस इन्स्पेक्टर की साली है। वरना इन लोगों को इतनी फुर्सत कहां कि किसी से सीधे मुंह बात कर सकें। खैर अब मैं चलता हूं। पहले ही काफी देर हो चुकी है।'

'वहां आभा पर नजर रखना।'

पीछे से विमा ने कहा, लेकिन तब तक सरीन बाहर निकल

चुका था।

▭ ▭

'सीन यह है चित्रा जी।' निर्देशक श्रीकान्त ने फिल्म की हीरोइन को सीन समझाते हुए कहा—'आप इधर से भागती हुई उस तरफ पहाड़ी के अन्तिम किनारे तक पहुंचेंगी जैसे आत्महत्या के इरादे से खाई में कूदने ही जा रही हैं कि उधर तभी उधर से केवल जी आकर आपको रोकेंगे, लेकिन आप ऐसा जाहिर करेंगी जैसे उनके बन्धनों से छूटकर कूदने के लिए बेताब हैं, लेकिन केवल जी आपको खींचकर पहाड़ी के किनारे से इस तरफ ले आएंगे और आप खिचती चली आएंगी। ठीक से समझ गई न आप?'

'जी हां, समझ तो गई।'

'एनी प्राब्लम?'

'बस यही प्राब्लम है कि कहीं केवल मुझे किनारे से खींचकर लाने की बजाए पहाड़ी पर से नीचे ही न धकेल दे।'

'क्या कह रही हैं आप?' श्रीकांत ने बात को हंसी में उड़ाते हुए कहा—'ऐसा भी कभी हो सकता है।'

'मैं सीरियस हूं श्रीकांत जी।' चित्रा ने कहा—'पति के रूप में मैं केवल के वे रूप भी देख चुकी हूं जिनके बारे में किसी दूसरे को कोई जानकारी नहीं है। आपका यह महान फ्लाप आर्टिस्ट आदमी के रूप में जानवर है, जानवर यह कब क्या कर जाए कुछ पता नहीं। इससे अलग होने के बाद से जितनी फिल्में भी मैं इसके साथ कर रही थी वह सब मैंने अधूरी छोड़ दी हैं। यह फिल्म भी मैं पूरी कर रही हूं तो सिर्फ आपकी वजह से।'

'मैं जानता हूं चित्रा जी कि आप मुझे कितना सहयोग दे रही हैं। आप निश्चित रहिए। कोई अप्रिय घटना नहीं घटेगी। आप सीन की तैयारी कीजिए, मैं केवल को सीन समझाए देता हूं।'

श्रीकांत शूटिंग-स्थल के दूसरे कोने में इजी चेयर पर बैठे केवल के पास पहुंचकर बोला—'तो केवल जी, सीन यह है कि चित्रा उधर से भागती हुई आएगी और जैसे ही वह पहाड़ी के किनारे पर पहुंचेगी आप उसे लपककर पकड़ लेंगे। वह छूटकर कूदने का प्रयत्न करेगी, लेकिन आप उसे जबर्दस्ती खींचकर वापिस ले आएंगे। ठीक है।'

'ठीक है।'

'इसके लिए आपको उस जगह खड़ा होना है कैमरे की रेंज से बाहर उस निशान पर। जैसे ही चित्रा दौड़ती हुई उस दूसरे निशान तक पहुंचेगी तो आप एकदम हरकत में आ जाएंगे।'

'ठीक है।'

'कोई प्रॉब्लम तो नहीं?'

'नो प्रॉब्लम।'

उसके बाद श्रीकान्त ने कैमरे के निकट अपनी जगह पर पहुंचकर जोरदार आवाज में कहा—'साइलेंस।'

शूटिंग के लिए एकत्रित भीड़ में एकदम सन्नाटा छा गया, जिसे इन्स्पेक्टर सरीन और उसके साथियों ने शूटिंग-स्थल से दूर रोक रखा था।

चित्रा और केवल अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो चुके थे।

'कैमरा···एक्शन···।'

कैमरा चालू हो गया।

चित्रा एकदम एक्शन में आ गई और बदहवास-सी पहाड़ी के किनारे की ओर दौड़ पड़ी।

सभी लोग मूक दर्शक बने देख रहे थे।

दौड़ती हुई जैसे ही वह पहाड़ी के किनारे से कुछ इधर ही जमीन पर खिंची लकीर तक पहुंची कि कैमरे की रेंज से बाहर खड़ा केवल भी एकदम हरकत में आ गया और वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा।

पहाड़ी के किनारे के निकट पहुंचते ही उसने चित्रा को पकड़ लिया। एक क्षण के लिए दोनों एक-दूसरे से उलझते-से दिखाई दिए और अगले ही क्षण दोनों पहाड़ी के किनारे से दूसरी ओर गिर गए।

'ओह माई गॉड।'

अचानक ही एक्शन की जगह खाली देखकर श्रीकांत चिल्लाया और फिर पहाड़ी के किनारे की ओर दौड़ पड़ा, जिधर से नीचे गिरती हुई चित्रा की हृदय-विदारक चीख हवा में गूंजती चली आ रही थी।

किनारे पर पहुंचकर देखा कि चित्रा लगभग तीन-चार

सौ फीट नीचे पत्थरों पर निश्चल पड़ी हुई थी और केवल किनारे से लगभग एक-डेढ़ फीट नीचे एक सूखे हुए पेड़ के तने को पकड़े हुए लटका था।

श्रीकांत के पीछे-पीछे यूनिट के सदस्य एवं अन्य लोग भी पहुंच गए थे जिनमें इन्स्पेक्टर सरीन भी शामिल था। उन लोगों ने मिलकर केवल को ऊपर खींचा।

श्रीकांत अजीब नजरों से केवल को घूर रहा था और उसके मस्तिष्क में चित्रा के शब्द गूंज रहे थे'''कहीं केवल मुझे किनारे से खींचकर लाने की बजाए पहाड़ी पर से धकेल न दे।'

श्रीकांत के मुंह से एक शब्द तक न निकला। वह बस अविश्वसनीय-सी दृष्टि से केवल को घूरे जा रहा था।

'आप लोगों ने तो देखा है कि मैंने उसे खींचने की काफी कोशिश की।' केवल अपने आप ही अपनी सफाई-सी देता हुआ बोला—'लेकिन नेचुरल एक्टिंग के चक्कर में चित्रा कुछ हद से ज्यादा ही गुजर गई और अपने साथ-साथ मुझे भी खींचती ले गई। वह तो भाग्य अच्छा था मेरा जो इस पेड़ की डाल हाथ में आ गई और आप लोग भी वक्त पर पहुंच गए। वरना वह तो मुझे भी अपने साथ खींचकर ले जाती।'

'आपका पूरा बयान तो बाद में ले लिया जाएगा मिस्टर केवल।' इन्स्पेक्टर सरीन ने कहा—'इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद चित्रा जी के जिन्दा बचने की उम्मीद तो नहीं है, लेकिन शायद कोई चमत्कार हो गया हो और आपकी तरह उन्हें भी हमारी मदद की जरूरत हो।'

लेकिन जब वे लोग वहां पहुंचे तो उन्होंने पाया कि चित्रा को किसी की मदद की जरूरत नहीं थी।

वह उन लोगों की पहुंच से दूर जा चुकी थी।

▭ ▭

शाम को जब थका-हारा सरीन घर लौटकर आया तो विभा का चेहरा देखते ही वह समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।

दिन में शूटिंग-स्थल पर उस दुर्घटना के बाद लोगों के बयान लेने और चित्रा की लाश को पोस्टमार्टम के लिए शहर भिजवाने के चक्कर में वह इस बुरी तरह थक चुका था कि तुरन्त ही कपड़े उतारकर लेट जाना चाहता था, ताकि अपनी

क्लान्त देह को कुछ आराम दे सके।

फिर भी विभा का रुष्ट चेहरा देखकर उसने मुस्कराते हुए पूछा—'क्या बात है डीयर ! आज तुम्हारे चेहरे का गुलाब मुरझाया हुआ-सा क्यों है ?'

कहने के साथ ही वह अपनी वर्दी उतारने लगा।

'इस लड़की ने तो मुझे परेशान करके रख दिया है।' विभा जैसे एकदम फट पड़ी हो—'यह फिल्मी भूत न जाने इसका क्या हाल करके छोड़ेगा ?'

'मगर हुआ क्या ?'

'वह हीरोइन आज पहाड़ी से गिरकर मर गई ?' विभा बोली—'सारी बस्ती कह रही है कि जरूर उस हीरो ने ही उसे धक्का दिया होगा। आखिर वे दोनों कभी पति-पत्नी थे और अब पिछले दो साल से दोनों में मन-मुटाव था। यहां तक कि आपस में बोल-चाल भी बन्द थी।'

'मैं दिमाग खराब नहीं कर रही हूं, बल्कि इस आभा का दिमाग खराब हो गया है। कह रही है कि इस फिल्म की नई हीरोइन वह बनेगी।'

'मजाक कर रही होगी। आभा है कहां ?'

'अपने कमरे में अनसन-पाटी लिए पड़ी है।' तुम्हारे लाड़-प्यार ने ही इस लड़की को बिगाड़ रखा है। अगर इसका घर से बाहर आना-जाना बन्द नहीं किया तो समझ लो कि एक दिन यह लड़की हमें कहीं मुंह दिखाने लायक न रखेगी।'

'तुम तो बेकार ही जरा-जरा-सी बात पर घबरा जाती हो। जाओ, अपने कोमल-कोमल हाथों से एक बढ़िया-सी चाय बनाकर लाओ। मैं आभा से बात करता हूं।'

विभा सिर झटककर चली गई।

'आभा।' एक बन्द दरवाजे पर दस्तक देकर सरीन ने कहा—'आभा बेटे, दरवाजा खोलो।'

दरवाजा खुला और एक बीस वर्षीय सुन्दर-सी युवती मुंह फुलाए हुए बाहर निकली।

'क्या बात है बेटे ? क्यों अपनी बहन को नाराज कर रखा है तुमने ?'

'दीदी को तो नाराज होने की बीमारी हो गई है। आप बताइए, अगर मैं अपने पैरों पर खड़ी होकर कुछ बनना चाहती

हूं तो कोई बुरी बात है क्या ?'

'नहीं, कोई बुरी बात नहीं है।'

'फिर यह जरा-सी बात दीदी की समझ में क्यों नहीं आती ?

'हम समझा देंगे उसे। लेकिन तुम्हारा यह हीरोइन बनने वाला क्या चक्कर···?'

'यह कोई चक्कर नहीं है जीजाजी। मैंने फिल्म एक्ट्रेस बनने का पक्का फैसला कर लिया है। केवल जी कहते हैं कि मुझमें टेलेन्ट है, प्रतिभा है, फोटोजेनिक चेहरा भी है। अगर मैं चाहूं तो फिल्म लाइन में बहुत कामयाबी हासिल कर सकती हूं। केवल जी इस मामले में मेरी भरपूर मदद करने के लिए तैयार हैं।'

आभा की बात पर सरीन थोड़ा गम्भीर हो गया।

बोला—'केवल ने जो कहा वह सच हो सकता है, किन्तु फिर भी एक बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए आभा कि हर चमकती हुई चीज़ सोना नहीं होती। दुनिया के रास्ते इतने आसान नहीं हैं जितना कि आदमी समझता है।'

'मैं सब जानती हूं जीजाजी, कोई दूध पीती बच्ची नहीं हूं।'

तभी चाय लेकर भीतर प्रविष्ट होती हुई विभा बोली—'हां···हां क्यों नहीं। तू तो अब हमारी दादी बन गई है।'

'देख रहे हैं आप, दीदी कैसे बात कर रही है ?'

'जो कुछ भी कर रही हूं, तेरे भले के लिए कर रही हूं।' पति को चाय देते हुए विभा ने कहा—'जिस केवल की बातों में आकर तू अपना आपा भूल गई है, उसके बारे में फिल्मी पत्र-पत्रिकाओं में जो कुछ छपता था वह नहीं पढ़ा क्या तूने।'

'मैं बेकार की गासिप पर विश्वास नहीं किया करती।'

'और आज जो उसने अपनी बीवी को पहाड़ी पर से धकल दिया, उस पर भी तू यकीन नहीं करेगी।'

'तुम घर में बैठी हुई अंट-शंट सोचती रहती हो और चाहती हो कि मैं उसे आंखें बन्द करके स्वीकार कर लूं? मैं एक पढ़ी-लिखी और आजाद ख्याल की लड़की हूं।'

'तो मैं अनपढ़ हूं क्या ?'

'मुझे मालूम है कि तुमने बी० ए० किया है। मगर घर की

चहार दीवारी से बाहर निकलकर तुमने दुनिया को नहीं देखा है। घर में बैठे-बैठे ही तुम बाहर के बारे में अपनी उल्टी-सीधी कल्पनाएं बना लेती हो, उन पर यकीन कर लेती हो। आज शूटिंग पर सिर्फ मैंने ही नहीं सैकड़ों आदमियों ने उस दुर्घटना को होते हुए देखा, खुद जीजाजी भी वहां मौजूद थे। सब जानते हैं कि चित्रा को बचाते-बचाते केवल जी स्वयं उसके साथ खाई में गिर गए थे। वह तो सौभाग्य से वह पेड़ की डाली उनके हाथ में आ गई वरना वह खुद भी जिन्दा नहीं बचते। बताइए जीजाजी, बिलकुल ऐसा ही हुआ थाया नहीं ?'

'हां हुआ तो कुछ ऐसा ही था।'

'लेकिन यह दीदी इस बात को मानने के लिए कतई तैयार नहीं है। इतने लोगों ने अपनी आंखों से जो कुछ देखा वह सब गलत है। मगर दीदी को घर बठे-बैठे जो इलाम हो गया वह सच्चा है। जब से आई हूं तब से यही रट लगाए जा रही है कि केवल ने चित्रा को धक्का देकर मार डाला है।'

'मैं मानता हूं कि तुम्हारी दीदी को ऐसा नहीं कहना चाहिए, किन्तु एक बाहरी आदमी के बारे में कही गई बात को लेकर तुम क्यों परेशान हो ?'

'आप ही तो कहा करते थे कि अगर हम किसी आदमी के बारे में कोई अच्छी बात नहीं कह सकते तो हमें इस बात का हक नहीं मिल जाता कि हम उसके बारे में बुरी बात कहें।'

'भई वाह ! तुमने तो लाजवाब कर दिया। चलो अब जल्दी से हंस दो और खाना खा लो।'

आभा धीरे से हंस दी।

'तुमने इस लड़की को बहुत सिर चढ़ा रखा है।' विभा ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

'मगर साहब आपको तो अपने दिल में बिठा रखा है न ?' सरीन ने मुस्कराकर कहा—'चलिए अब आप भी हंस दीजिए और जल्दी से खाना दीजिए। बहुत जोर की भूख लगी है।'

▭ ▭

उस दुर्घटना के दो दिन बाद एक कार उस जगह आकर रुकी जहां फिल्म यूनिट के सदस्यों के ठहरने के लिए तम्बू लगे थे। कार से पैंतीस वर्ष का एक अच्छी कद-काठी और हृष्ट-पुष्ट शरीर का सुन्दर-सा व्यक्ति नीचे उतरा और उसने निर्देशक

श्रीकान्त के बारे में पूछा।

यूनिट के एक आदमी ने एक तम्बू की ओर संकेत करते हुए कहा—'डायरेक्टर साहब का तम्बू वो है।'

वह उधर बढ़ गया।

सूचना मिलने पर श्रीकान्त ने उसे भीतर बुलाया और उसे एक फोल्डिंग कुर्सी पर बैठने का संकेत करता हुआ बोला—'मेरे ख्याल में हम पहले तो कभी नहीं मिले?'

'जी नहीं।' आगन्तुक ने बैठने के बाद जवाब दिया—'वैसे मेरा नाम कैप्टन राकेश है और मैं चित्रा का बड़ा भाई हूं।'

'चित्रा के बड़े भाई हैं आप?' श्रीकान्त ने उसकी ओर देखते हुए कहा—'चित्रा को पिछले दस साल से तो मैं भी जानता हूं। लेकिन उसने कभी अपने किसी बड़े भाई का जिक्र नहीं किया।'

'मेरा जिक्र क्या उसने कभी अपने परिवार का भी जिक्र नहीं किया होगा।'

'हां, यह तो मुझे याद है कि जब भी कभी उसके परिवार का जिक्र आता था तो वह टाल जाती थी। उसने यही प्रचारित कर रखा था कि उसके मां-बाप बचपन में ही मर गये थे। अब उसका इस दुनिया में कोई नहीं। लेकिन उसे ऐसा कहने की क्या जरूरत थी?'

'हमारी मां तो वाकई उसके बचपन में मर चुकी थी। लेकिन बाबूजी जिन्दा थे। उनका देहान्त तीन साल पहले हुआ है। जब चित्रा फिल्म एक्ट्रेस बनने की धुन में घर से भाग गई तो बाबूजी ने उसी दिन हमसे कह दिया था कि वह हमारे लिए मर गई। फिल्म एक्ट्रेस बनने के बाद चित्रा एक दिन घर आई थी। इस उम्मीद में कि शायद उसकी सफलता से खुश होकर बाबूजी उसे माफ कर दें। लेकिन बाबूजी अपनी आन के बड़े पक्के थे। उन्होंने खड़े-खड़े चित्रा को घर से निकाल दिया और हम लोगों से भी वचन ले लिया कि उससे कभी नहीं मिलेंगे। बस वही चित्रा से आखिरी मुलाकात थी।'

'और अब—।'

'अब जब अखबार में उसकी मौत की खबर पढ़ी तो अपने आपको रोक न सका। कुछ भी हो, आखिर थी तो छोटी

बहन ही।'

'प्यार उमड़ा तो सही लेकिन बहुत देर में।'

'लेकिन यह दुर्घटना घटी कैसे ? ऐसे खतरनाक सीन को फिल्माते वक्त कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं की हुई थी आपने ?'

'पहाड़ी के किनारे का सीन जरूर था। लेकिन उसमें खतरे जैसी कोई भी बात नहीं थी। हीरो ने आत्महत्या करने के लिए जाती हीरोइन को किनारे से पकड़कर खींच लेना था। बस इतना-सा ही तो सीन था।'

'लेकिन इतना-सा ही सीन प्राणघातक बन गया।' राकेश बोला—'सुना है केवल और चित्रा के बीच जबर्दस्त मन-मुटाव चल रहा था। आपस में बोल-चाल भी नहीं थी।'

'कहां से सुना आपने ?'

'फिल्मी पत्र-पत्रिकाओं में बहुत-सी बातें छपती रहती हैं जिन्हें हम लोग पढ़ते ही रहते हैं।'

'ओह हां।' श्रीकान्त ने धीरे से सिर हिलाया—'यह तो मैं भूल ही गया था।'

'आप मुझे चित्रा और केवल के आपसी सम्बन्धों के बारे में कुछ विस्तार से बता सकते हैं।'

'आपसी सम्बन्ध तो दोनों के बीच काफी खराब थे।' श्रीकान्त बोला—'दरअसल जब चित्रा ने फिल्मों में प्रवेश किया तो केवल टाप का स्टार था। पहली फिल्म में जब दोनों साथ आये तो दोनों ही एक-दूसरे से ऐसे प्रभावित हुए कि फिल्म पूरी होने से पहले ही विवाह-बन्धन में बंध गये। फिर भाग्य ने पलटा खाया। चित्रा टाप की स्टार बन गई और केवल फ्लाप होता चला गया। अभी केवल पूरी तरह से फ्लाप नहीं हुआ था जब मैंने इन लोगों को लेकर फिल्म शुरू की थी। यह लगभग सात साल पहले की बात है। अपने गिरते कैरियर से परेशान केवल ने बेतहाशा शराब पीनी शुरू कर दी। वह चित्रा की कामयाबी से जलने भी लगा था। दोनों के बीच एक बार जो थुक्का-फजीती शुरू हुई, वह बढ़ती ही गई। नतीजा, दोनों एक-दूसरे से अलग हो गये। केवल ने चित्रा को फ्लाफ करने के लिए कई तरीके अपनाये लेकिन कभी कामयाब नहीं हुआ। चित्रा न केवल एक अच्छी स्टार थी बल्कि बहुत भली

औरत थी। केवल अभिनेता तो बहुत बेहतरीन है लेकिन आदमी के रूप में बहुत गन्दा आदमी है। मुझे याद है कि लगभग दो साल पहले मैंने चित्रा से कहा था कि अगर उसे केवल के साथ फिर से घर नहीं बसाना है तो वह उससे तलाक क्यों नहीं ले लेती।'

'तो चित्रा ने क्या कहा ?'

'उसने इन्कार कर दिया।'

'क्यों ?'

श्रीकान्त के जवाब देने से पहले ही नौकर नाश्ते की ट्रे लेकर आ गया। श्रीकान्त ने राकेश को नाश्ते के लिए आमन्त्रित किया किन्तु राकेश ने शालीनता से इन्कार कर दिया। हां चाय अवश्य स्वीकार ली।

'तलाक न होने की क्या वजह बताई चित्रा ने ?' चाय का घूंट भरकर राकेश ने पूछा।

'उसका यही कहना था कि तलाक के कागजातों पर दस्तखत करने से केवल इन्कार कर देगा। वैसे भी उसका अब दूसरी शादी करने का कोई इरादा नहीं। इसलिए तलाक की कोई जरूरत उसे नहीं है। उसके मुताबिक अलग रहना भी तलाक जैसा ही है।'

'जब इन दोनों के बीच ऐसा मन-मुटाव था तो फिर आपकी फिल्म में एक साथ काम करने के लिए कैसे तैयार हो गये ?'

'दरअसल सबसे पहले तो केवल ने ही मुझे एप्रोच करके कहा था कि मेरा पैसा अधूरी फिल्म में बेकार फंसा हुआ है। उसे पूरी करके मैं अपना पैसा क्यों नहीं निकाल लेता। केवल का लालच मैं अच्छी तरह से समझ सकता था उसे उम्मीद थी कि शायद इस फिल्म के रिलीज होने के बाद उसकी मार्किट फिर से उठ जाये। उसका प्रस्ताव सुनकर मेरा भी लालच जाग गया कि अधूरी फिल्म को पूरा करके फंसा हुआ पैसा क्यों न निकाल लिया जाये। मैंने चित्रा को एप्रोच किया। पहले तो उसने किसी भी कीमत पर केवल के साथ काम करने से इन्कार कर दिया। लेकिन मैंने कहा न कि वह एक बहुत ही भली और नेक दिल औरत थी। मेरे जोर देने पर वह मान गई। तब मुझे क्या मालूम था कि यह सब हो जाएगा ?'

'चित्रा की आर्थिक स्थिति कैसी थी ?'

'बहुत मजबूत। फिल्म लाइन से करोड़ों कमाए उसने और फिजूल खर्च वह थी नहीं। जाहिर है अपने पीछे करोड़ों की सम्पत्ति छोड़कर गई होगी।'

'वह सम्पत्ति अब किसकी होगी ?'

'जाहिर है कि केवल की ही होगी—क्योंकि वह उसका पति है। दोनों चाहे अलग-अलग रहते थे। किन्तु तलाक न होने के कारण कानून की नजर में दोनों पति-पत्नी ही माने जाएंगे।'

'क्या ऐसा नहीं हो सकता कि चित्रा की करोड़ों की सम्पत्ति को हथियाने के लिए शूटिंग के समय केवल ने जान-बूझकर उसे पहाड़ी पर से धकेल दिया हो ?'

'शूटिंग से पहले चित्रा ने यह आशंका व्यक्त की थी। किन्तु मैंने उस पर उस समय कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन उस दुर्घटना के बाद यह बात मेरे दिमाग में आई थी। मुझे ऐसा लगता भी है कि शायद इस दुर्घटना के पीछे केवल की कोई चाल हो, लेकिन अगर कोई चाल है भी तो उसे साबित नहीं किया जा सकता।'

'वह क्यों ?'

'सबसे पहली बात तो यह कि यह दुर्घटना सैंकड़ों-हजारों लोगों के सामने हुई थी और कोई इस बात को दावे के साथ नहीं कह सकता कि केवल ने उसे जान-बूझकर धक्का दिया है। दूसरे यह कि कैमरे के साथ-साथ एक वीडियो कैमरा भी सीन को रिकार्ड कर रहा था।'

'वह क्यों ?'

'ताकि जो सीन लिया गया है, उसका प्रभाव मैं फौरन टी० वी० पर देखकर इस बात का निश्चय कर सकूं कि दूसरा टेक लेने की जरूरत है या नहीं।'

'आह !'

'मैंने इस रिकार्डिंग को एक बार नहीं दसियों बार देख डाला है। उसे देखते समय मेरे साथ यहां का पुलिस इन्स्पेक्टर सरीन भी मौजूद था। हम लोग चाहकर भी कहीं कोई ऐसी बात न पकड़ सके जिससे यह साबित किया जा सके कि केवल ने जान-बूझकर चित्रा को धक्का दिया है। बल्कि उसे देखकर

तो यह साफ लगता है कि केवल ने चित्रा को बचाने की प्राण-पण से कोशिश की थी और इस कोशिश में वह खुद भी उसके साथ पहाड़ी से गिर गया।'

'अगर आपको तकलीफ न हो तो क्या वह सीन आप मुझे टी० वी० पर दिखा सकते हैं?'

'हां···हां क्यों नहीं।'

श्रीकान्त ने अपने आदमी को पुकारा और पांच मिनट बाद वे लोग टी० वी० पर उस दृश्य को देख रहे थे। छोटा-सा पोर्टेबल टी० वी० था। लेकिन उस पर सब-कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था।

राकेश ने उस सीन को बहुत गौर से देखा।

सीन की समाप्ति पर दीर्घ निःश्वास के साथ बोला—'वाकई इसे देखकर तो यह नहीं सोचा जा सकता कि केवल ने चित्रा को धक्का दिया होगा। साफ दिखाई दे रहा है कि उसने चित्रा को बचाने की न सिर्फ अन्तिम क्षण तक कोशिश की, बल्कि उसे बचाते-बचाते खुद भी उसके साथ गिर गया।'

'मैंने पहले ही कहा था आपसे।' श्रीकान्त बोला—'लेकिन फिर भी जो कुछ हमने देखा है, मेरा दिमाग उस पर यकीन करने के लिए तैयार नहीं है। मैंने बताया न कि केवल बहुत जबर्दस्त एक्टर है। उसने सब-कुछ इस ढंग से किया है कि किसी को उसपर शक न हो सके। मुझे पक्का यकीन है कि उसने जान-बूझकर चित्रा को मौत के मुंह में धकेला है।'

'मगर कैसे? वह खुद भी तो उसके साथ गिर गया था। अगर वह नीचे निकले उस पेड़ की टहनी को न पकड़ लेता तो उसका भी हश्र वही होता जो चित्रा का हुआ है।'

'शायद आप नहीं जानते कि हीरो बनने से पहले केवल फिल्मों में फाइट मास्टर था। एक-से-एक खतरनाक स्टन्ट दिया करता था वह। चित्रा के साथ नीचे गिरते समय पेड़ की डाली को पकड़कर लटक जाना उसके लिए मामूली बात है। लेकिन यह भी अपने आपमें एक सच्चाई है कि सिर्फ इस बात की बिना पर उसे चित्रा का कातिल साबित नहीं किया जा सकता। वह बास्टर्ड अपना खेल-खेल गया, काश! मुझमें इतनी हिम्मत होती कि मैं उस हरामी की खोपड़ी तोड़ सकता।'

'आप बता सकेंगे कि मैं केवल से कहां मिल सकता

हूं ?'

'केवल यहीं पास की पहाड़ियों के बीच एक कॉटेज में ठहरा हुआ है।'

'आप लोगों से अलग ?'

'जी हां, दरअसल वह कॉटेज मैंने चित्रा के लिए किराये पर ली थी। एक तो इसलिए कि वह टाप की स्टार थी। दूसरे इसलिए कि वह लड़की थी और उसे इतनी भीड़ में रहने पर कुछ परेशानी होती। लेकिन यहां पहुंचने पर जब केवल को उस कॉटेज के बारे में पता चला तो उसने वहां रहने की जिद्द की। दूसरी कोई कॉटेज अवेलेबल नहीं थी।' इसलिए मैंने चित्रा से रिक्वेस्ट की और वह मान गई। आप नहीं जानते कैप्टन राकेश कि इन एक्टर-एक्ट्रेसों में कितनी भयानक ईगो होती है। वह तो चित्रा बहुत कोआपरेटिव नेचर की थी, वरना एक बेकार की प्राब्लम और खड़ी हो जाती। प्राब्लम तो खैर अब उससे भी बड़ी आ गई है मेरे सामने। मैं नहीं जानता कि चित्रा के बिना अपनी इस अधूरी फिल्म को कैसे पूरी कर पाऊंगा।'

राकेश ने सहानुभूति व्यक्त की।

फिर बोला—'आप मुझे कॉटेज तक पहुंचने का रास्ता बता देंगे।'

तम्बू से बाहर आकर श्रीकान्त ने उसे रास्ता बता दिया और कहा—'आप केवल से मिलने तो जा रहे हैं, लेकिन इस बात का ध्यान रखिएगा कि उससे उलझने की नौबत न आने पाये ?'

'क्या आप मुझे झगड़ालू किस्म का आदमी समझते हैं ?'

'आपके बारे में तो कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि आपकी मेरी मुलाकात पहली बार हो रही है। लेकिन केवल को मैं अच्छी तरह से जानता हूं। उसके बात करने का अन्दाज ही इतना गन्दा होता है कि सामने वाला उत्तेजित हुए बिना नहीं रह सकता।'

'इस सलाह के लिए शुक्रिया। मैं अपने ऊपर पूरा नियंत्रण रखने की कोशिश करूंगा।'

श्रीकान्त से विदा होकर राकेश अपनी कार में सवार हुआ

और उस पहाड़ी कॉटेज की ओर रवाना हो गया।

□ □

राकेश की दस्तक पर केवल ने दरवाजा खोला तो वह अभी अपने स्लीपिंग सूट में ही था। चेहरे के हाव-भाव से लगता था कि उसे सोकर उठे ज्यादा देर नहीं हुई है। रात देर तक व्हिस्की पीते रहने का खुमार अभी भी उसकी आंखों में बाकी था।

उसने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से राकेश की ओर देखा तो उसने अपना परिचय दिया—'मैं राकेश हूं—चित्रा का बड़ा भाई?'

'चित्रा के जीते जी तो कभी उसके किसी छोटे या बड़े भाई के दर्शन नहीं हुए। उसके मरते ही आप कहां से निकल आये?'

राकेश को श्रीकान्त की बात याद आई कि केवल का बात करने का अन्दाज ही इतना गन्दा है कि सामने वाला उत्तेजित हुए बिना नहीं रह सकता।

'मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूं।'

'अभी तो जनाब मैं सोकर ही उठा हूं। पूरी तरह से आंखें भी नहीं खुलीं। अगर आप दोपहर बाद आएं तो ज्यादा बेहतर होगा।'

'मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लूंगा।'

अनजान ही सही लेकिन रिश्ते में साले लगते हैं आप हमारे। कहीं लौटकर यह न कहें कि जीजा से पहली बार मिला और उसने दरवाजे से ही टरका दिया। आपको मालूम है न कि मैं आपका जीजा लगता हूं।'

'जी हां, सुना तो है?'

'जो सुना है उस पर फौरन यकीन कर लीजिए।' केवल मुड़कर कमरे में प्रविष्ट हुआ और राकेश को एक कुर्सी पर बैठने का संकेत करके स्वयं अपने पलंग पर बैठकर एक सिगरेट सुलगाता हुआ बोला—'माफ कीजिएगा, यहां मैं आपकी चाय-पानी से तो कोई सेवा नहीं कर सकूंगा। क्योंकि श्रीकान्त ने जो नौकर दिया था, उसकी शक्ल देखकर ही मुझे मितली आती थी, इसलिए मैंने उसे भगा दिया। हां, सिगरेट पीने का शौक रखते हों तो जरूर पीजिए?'

'जी बस, शुक्रिया। मैं सिगरेट नहीं पीता।'

'बहुत अच्छा करते हैं। अब आप अपने आने का मकसद बताइए।'

'मैं जानना चाहता हूं केवल जी....।'

'जीजाजी कहिए न आप मुझे। मैं आपका जीजा लगता हूं।'

'माफ कीजिएगा, मैं वह तो नहीं कह सकूंगा।'

'कमाल करते हैं आप! अपने जीजा को आप जीजाजी नहीं कह सकते? अब यकीन हो गया कि आप निश्चित रूप से चित्रा के भाई ही हैं। उसकी आदत भी आपकी तरह हकीकत मानने की नहीं थी। खैर छोड़िए, आप बताइए कि आप क्या कह रहे थे?'

'मैं जानना चाहता था कि चित्रा से आपकी मुलाकात कब और किन हालात में हुई?'

'बहुत दूर पहुंच गये आप तो।' केवल ने सिगरेट का एक गहरा कश लेने के बाद उसका धुआं हवा में बिखेरते हुए कहा —'मैं तो सोच रहा था कि आप दो दिन पहले हुई उस दुर्घटना के बारे में बात करेंगे। मगर आप तो बहुत दूर पहुंच गये। मेरी चित्रा से कब और किन हालात में मुलाकात हुई?'

'जी हां।'

'अब सही दिन या महीना तो मुझे याद नहीं है साले साहब। लेकिन बरसों पहले की बात है, जब मैं टाप का स्टार था और चित्रा फिल्मों में काम पाने के लिए भटक रही थी। मुझे उस लड़की पर दया आई और मैंने कोशिश करके उसे अपने सामने हीरोइन का चांस भी दिलवा दिया। मैं बहुत ही जज्बाती और रहम दिल किस्म का इन्सान हूं। किसी का दुख मुझसे देखा नहीं जाता। दूसरों की मदद करने में आनन्द आता है मुझे। जबकि आपकी बहन चित्रा बहुत ही घाघ और तेज किस्म की औरत थी। उसके हर कदम के पीछे कोई न कोई गहरी चाल छिपी होती थी। उसने देखा कि मैं टाप का आर्टिस्ट हूं जिसकी मदद से वह उन बुलन्दियों तक पहुंच सकती है जिन्हें कि वह छूना चाहती है। बस साहब, उसने मेरे इर्द-गिर्द अपना जाल फैलाना शुरू कर दिया। मैं भोला-भाला आदमी उसके जाल में फंस गया और उससे शादी कर बैठा।'

'फिर क्या हुआ ?'

'फिर क्या होना था साले साहब, आपकी बहन मुझे सीढ़ी समझकर सफलता की ऊंचाइयों पर चढ़ती चली गई और मैं बेवकूफ सीढ़ी बना हुआ इसी खुशफहमी में भूला रहा कि मेरी बीवी सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंच रही है। जब होश आया तो मैं नीचे जमीन पर था और वह सफलता की छत पर मजे लूट रही थी। कहा है न कि सफलता को हजम करना बहुत ही मुश्किल काम है। सो आपकी बहन से भी सफलता हजम नहीं हुई। सफलता के नशे ने उसकी खोपड़ी ऐसी खराब की कि वह मुझे ही यानी अपने पति को···खैर पति-वति को तो मारिए गोली···उस आदमी को जिसने उसे सफलता की बुलन्दियों तक पहुंचाने में अपना सर्वस्व होम कर दिया··· अपना कैरियर तबाह कर दिया—उसे ही वह हिकारत और उपेक्षा की नजरों से देखने लगी। बात-बात में गाली गुफ्तार से बात करने लगी। अब साब पहले तो बहुत बर्दाश्त किया मैंने। लेकिन बर्दाश्त की भी एक हद होती है। लिहाजा उससे किनारा करके अलग हो गया मैं और अपने कैरियर पर ध्यान देने लगा।'

बाद में आप दोनों की ओर से समझौता करने की कोई कोशिश की गई थी।'

'मैंने बताया न साले साहब कि मैं बहुत ही जज्बाती और रहमदिल इन्सान हूं। मैंने फिर भी आपकी बहन को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उस घमण्डी औरत ने मेरी उस कोशिश को भी गलत रूप में लिया। उसने समझा कि मैं उसके तलवे चाटकर उससे माफी मांगना चाहता हूं। बस जब मुझे उसका ऐसा रवैया दिखाई दिया तो मैंने उसकी ओर से पूरी तरह मुंह फेर लिया।'

'जब आपको समझौते की कोई गुंजाइश नहीं दिखाई दी तो आपने तलाक लेने की कोशिश क्यों नहीं की ?'

'अब इसका क्या जवाब दूं मैं आपको।' केवल ने पहली सिगरेट के अन्तिम टुकड़े से दूसरी सिगरेट सुलगाते हुए कहा— 'बस यह समझ लीजिये कि कभी यह बात मेरे दिमाग में नहीं आई। वैसे भी मैं चित्रा को सच्चे दिल से प्यार करता था। मुझे इस बात की पूरी उम्मीद थी कि जिन्दगी में कभी न कभी

उसे अपनी गलती का एहसास होगा और वह मेरे पास जरूर लौटकर आएगी। मगर अफसोस...।'

उसने वाक्य अधूरा छोड़कर सिगरेट का एक गहरा कश लिया और छत की ओर मुंह करके धुआं छोड़ने लगा।

'जब आप दोनों के बीच ऐसी भयानक अनबन थी तो फिर आप दोनों फिर से इस फिल्म में एक साथ काम करने के लिए कैसे तैयार हो गए?'

'मैंने बताया न कि मैं बहुत ही जज्बाती और रहमदिल इन्सान हूं। जब श्रीकांत मेरे पास आकर कहने लगा कि मैं उसकी अधूरी फिल्म को किसी तरह पूरी करवा दूं तो मैंने उससे कहा कि मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन चित्रा को मना ले। उसने किसी तरह चित्रा को मना लिया। सैट पर शूटिंग के अलावा हम दोनों में कभी कोई बात नहीं होती थी। वैसे भी हम लोग प्रोफेशनल हैं। हम लोगों के आपसी लड़ाई-झगड़ों की वजह से किसी तीसरे आदमी का नुकसान क्यों हो?'

श्रीकांत और केवल की बात के अन्तर को नोट किया राकेश ने। श्रीकांत का कहना था कि केवल ने उसे एप्रोच किया था जबकि केवल यह बता रहा था कि श्रीकांत ने उसे एप्रोच किया था।

बात उसे श्रीकांत की ही सही लग रही थी। केवल उसे भी कोई खास पसन्द नहीं आया था। उसके बात करने का ढंग वाकई उत्तेजना दिलाने वाला था, लेकिन वह अपने पर संपूर्ण नियंत्रण रखे हुए केवल को एकदम दो दिन पहले की घटना तक लाने की बजाए धीरे-धीरे वहां तक ले आया था।

'दो दिन पहले जो वह दुर्घटना हुई, उसके बारे में आपकी क्या राय है?' उसने धीरे से पूछा।

'उस दुर्घटना के बारे में मेरी और क्या राय हो सकती है। मैं तो खैर उस दुर्घटना का एक हिस्सा था, लेकिन वहां जो कुछ भी हुआ उसे एक-दो नहीं, बल्कि सैंकड़ों हजारों आदमियों ने अपनी आंखों से देखा था। मैं डायरेक्टर के निर्देशानुसार चित्रा को पकड़ने के लिए वहां पहुंचा, किन्तु चित्रा को न जाने क्या हो गया था कि वह अपना सन्तुलन न बनाए रख सकी और उसने अपने साथ मुझे भी पहाड़ी से गिरा दिया।'

'यानी यह मानना गलत होगा कि आपने उन्हें जान-बूझ-

कर पहाड़ी से धक्का दिया है।'

'एकदम गलत होगा साले साहब। केवल ने तनिक तीव्र स्वर के साथ कहा—'अगर मेरी बात पर यकीन न हो तो श्रीकांत के पास जाकर उस वीडियो फिल्म को देख लें जिस पर उसने हाथ के हाथ नतीजा देखने के लिए इस सीन को रिकार्ड किया था। उससे आपको पता लग जाएगा कि आप कितना गलत कह रहे हैं। आपको साफ दिखाई देगा कि किस तरह मैं चित्रा को बचाने की कोशिश में उसके साथ ही पहाड़ी से नीचे गिर गया था। वह तो संयोग से उस नीचे उभरे हुए पेड़ की डाली मेरे हाथ में आ गई थी और समय पर अन्य लोग मेरी सहायता के लिए वहां पहुंच गए। वरना मेरा भी हश्र चित्रा जैसा ही हो चुका होता।'

'सुना जाता है कि हीरो बनने से पहले आप फिल्मों में फाइट मास्टर थे और स्टन्ट सीन किया करते थे। उस हालत में यह अनुमान लगाना कोई मुश्किल तो नहीं कि आप जान-बूझकर चित्रा के साथ नीचे गिर गये थे। क्योंकि पहाड़ी की चोटी के नीचे उभरे उस पेड़ को आपने पहले से ही देख लिया था और नीचे गिरते समय उस पेड़ की डाली को पकड़कर लटक जाना आपके लिए कोई मुश्किल काम नहीं था।'

जवाब में केवल ने अपने तकिये के नीचे हाथ सरकाया और वहां से एक पिस्तौल निकालकर बोला—'यह पिस्तौल देख रहे हैं आप, यह मेरे पास पिछले पन्द्रह साल से है। अगर मैं चित्रा की हत्या करना चाहता तो आज से पहले कभी भी उसे बड़े आराम से मौत के घाट उतार सकता था। बस, मुझे एक गोली चलाने की जरूरत पड़ती।'

'अगर ऐसा करते, तब आप फांसी के फंदे पर भी पहुंच चुके होते।'

'और अब?' केवल ने पिस्तौल वापस तकिये के नीचे रखकर एक नई सिगरेट सुलगाते हुए पूछा—'अब क्या ख्याल है आपका?'

केवल के इस सवाल पर एकबारगी अचकचा गया राकेश! मगर तुरन्त ही सम्भलकर बोला—

'अब तुमने काम इतनी सफाई से किया है कि कानून के हाथ तुम तक न पहुंच सकें। वह फिल्म जो तुम्हारे गुनाह का

दस्तावेज बन सकती थी, वही तुम्हें बेगुनाह साबित कर रही है। बहुत गहरी चाल खेली है तुमने केवल। तुमने न सिर्फ वहां मौजूद सैकड़ों हजारों लोगों की आंखों को ही नहीं बल्कि कैमरे को भी धोखा दे दिया है।'

'लगता है, श्रीकांत के पास से वह फिल्म देखकर आ रहे हो तुम ?' केवल ने धीरे से मुस्कराते हुए पूछा।

'इसलिए तो कह रहा हूं कि तुमने बहुत होशियारी के साथ यह खेल खेला है।'

'वैसे साले साहब हैं क्या मैं जान सकता हूं कि आप बेचते क्या हैं ?'

'भारतीय सेना में कैप्टन हूं मैं।'

'तभी इतनी जोर से राष्ट्रीय गीत गा रहे हो।' केवल ने लापरवाही के साथ सिगरेट का कश लेते हुए कहा—'अब आप जैसे आदमी के साथ झूठ क्या बोलना। सच्चाई मैं आपको बता ही दूं। मैंने जान-बूझकर चित्रा को उस पहाड़ी से नीचे धकेला है। इस बात को अगर आप साबित कर सकते हैं तो कोशिश करके देख लीजिए ?'

केवल की इस स्वीकारोक्ति पर राकेश कुछ देर के लिए हतप्रभ-सा रह गया। उसे इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी जल्दी अपना अपराध इतनी बेबाकी से स्वीकार कर लेगा।

केवल ने मानो उसके मानसिक विचारों को पढ़ लिया था।

बोला—'मेरे यह बात स्वीकार कर लेने के बावजूद भी आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते साले साहब, क्योंकि फिल्म की शूटिंग की रील, विडियो रिकार्डिंग और वहां मौजूद लोग, सब इतने जोर-शोर से मेरी बेगुनाही को साबित करेंगे कि अपना अपराध स्वीकार करने के बावजूद भी तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।'

कहते-कहते केवल एकदम उठकर कमरे में चहल-कदमी करने लगा।

'इस खोपड़ी में इतनी अक्ल भरी हुई है साले साहब, जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते।' केवल गर्वपूर्ण मुस्कराहट के साथ बोला—'जो आदमी मौत को और कैमरे की

आंख को धोखा दे सकता है, उसे साधारण आदमी समझने की भूल मत करना कैप्टन। हां, चित्रा को मारा है मैंने। जान-बूझकर उसे उस पहाड़ी से धकेला है मैंने। शूटिंग से पहले ही उस जगह का निरीक्षण करके उस पेड़ को मैंने देख लिया था और तभी उसे खत्म करने की तरकीब मेरे दिमाग में आ गई थी। हजारों लोगों की आंखों के सामने मैंने वह कत्ल किया है, लेकिन कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह फिल्म मेरी बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत है।'

'और अगर वह सबूत नष्ट हो जाए तो?'

'तो भी मुझे कोई कानून सजा नहीं दे सकता। श्रीकांत के साथ-साथ यूनिट के बाकी लोगों ने ही नहीं, बल्कि यहां के पुलिस इन्स्पेक्टर सतीन ने भी उस फिल्म को देखा है और सबने माना है कि मैंने चित्रा को बचाने की अन्तिम क्षण तक कोशिश की है। ग्रेट आर्टिस्ट केवल अपने अभिनय से सब लोगों को बेवकूफ बनाने में कामयाब रहा। तुम फिल्म नष्ट कर सकते हो, लेकिन क्या सब देखने वालों को भी जान से मार दोगे। नहीं कैप्टन, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बल्कि सबूत नष्ट करने के जुर्म में तुम्हें जेल हो जाएगी।'

'लेकिन तुमने ऐसा किया क्यों केवल?'

'क्यों किया मैंने ऐसा? क्योंकि चित्रा नासूर बनकर मेरी जिन्दगी में जहर घोल रही थी। जिस जगह कभी मेरे यश का सितारा चमचमाता था, उन बुलन्दियों पर अब वह चमक रही थी। कभी उसे काम की तलाश थी—आज मुझे काम की तलाश है। पास का पैसा खत्म हो चुका था और वह करोड़ों की दौलत कमाकर नागिन की तरह उस पर कुण्डली मारे बैठी थी।'

'तो उसका पैसा हासिल करने के लिए तुमने उसे मारा।'

'यह भी एक वजह थी। उसका पति होने के नाते अब उसकी सारी दौलत मेरी है। फिल्मों में काम मिले या न मिले, मेरी बाकी जिन्दगी अब आराम से कट जाएगी।'

'जिन्दगी तो तब आराम से कटेगी केवल, जब मैं उसे कटने दूंगा।'

राकेश की बात पर केवल भावनाओं के बहाव से बाहर

निकला और उसने चौंककर उसकी ओर देखा।

'तुम क्या कर लोगे मेरा ? जिन गुमनामियों के अन्धेरों से निकलकर आए हो कैप्टन, उन्हीं में जाकर गुम हो जाओ तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा। वरना लोग यह समझने लगेंगे कि जिस बहन को जीते जी न पूछा, उसके मरते ही उसका भाई कुत्ते की तरह उसकी दौलत पर दांत गड़ाने के लिए आ गया।'

'जबान को लगाम दो केवल।'

'सच्चाई सुनते ही तिलमिला गए साले साहब, लेकिन मैं क्या करूं मुझे, सच बोलने की बीमारी है। तभी तो तुम्हारे सामने अपने अपराध को इतनी आसानी से स्वीकार कर लिया है मैंने। सच बोलने से बाज नहीं आ सकता मैं। बहुत वक्त बर्बाद कर दिया तुमने मेरा। अब अपनी पूंछ टांगों में दबाकर यहां से चलते-फिरते नजर आओ। बहुत काम करने हैं मैंने। अभी तो नहाया-धोया भी नहीं।'

'लेकिन जाने से पहले एक उपहार दे जाना चाहता हूं।'

राकेश ने उठते हुए कहा और फिर इतना जोरदार घूंसा केवल के पेट में मारा कि उसके दोनों पैर फर्श से उखड़ गए और वह दीवार से जाकर टकराया।

दीवार के साथ रगड़ खाता हुआ ही वह फर्श पर आ गिरा और वहां अजीब ढंग से सर को झटके देने लगा, मानो समझने की कोशिश कर रहा हो कि यह एकदम क्या हो गया।

'यह उन सुन्दर विशेषणों के लिए धन्यवाद है, जो तुमने मेरे लिए प्रयुक्त किए हैं।' राकेश से कहा और फिर कॉटेज से बाहर निकल आया।

लेकिन तुरन्त ही ठिठककर खड़ा हो गया। एक अत्यन्त ही खूबसूरत लड़की हाथ में एक छोटा-सा सूटकेस लिए कॉटेज की ओर बढ़ी आ रही थी।

उसके देखते-ही-देखते वह कॉटेज में प्रविष्ट हो गई।

राकेश ने अजीब ढंग से अपने सिर को हिलाया और अपनी कार की ओर बढ़ गया।

▭ ▭

'आभा तुम ?'

उस खूबसूरत लड़की के भीतर प्रविष्ट होते ही केवल के

एकदम चौंककर पूछा। वह फर्श से उठकर खड़ा हो चुका था और अपना पेट सहला रहा था।

'हां केवल !' आभा ने अपना छोटा-सा सूटकेस पलंग पर रखते हुए कहा—'मैं आ गई हूं तुम्हारे पास—हमेशा-हमेशा के लिए।'

'यह क्या बचपना है ?'

'यह कोई बचपना नहीं, बल्कि बहुत सोच-समझकर उठाया हुआ कदम है। तुमने कहा कि मुझमें टैलेन्ट है, प्रतिभा है, टॉप की हीरोइन बन सकती हूं। सो मैं आ गई हूं तुम्हारे पास। अब इस कच्ची मिट्टी को गढ़कर ऐसी मूर्ति बना दो जिसकी सारी दुनिया पूजा करे।'

'वह सब तो हो जाएगा, लेकिन इस तरह नहीं जिस तरह तुम सोच रही हो। अभी मैं बहुत परेशान हूं। तुम अपने घर जाओ। इस बारे में फिर बात करेंगे।'

'तुम अपनी परेशानियां मुझे दे दो।'

'इस वक्त मैं फिल्मी डायलॉग सुनने के मूड में नहीं हूं।' केवल ने एक नई सिगरेट सुलगाते हुए कहा, 'लोग वैसे ही मुझे शक की नजरों से देख रहे हैं। तुम्हारी इस हरकत से तो मैं और ज्यादा बदनाम हो जाऊंगा।'

'किस बात का शक किया जा रहा है तुम पर ?'

'यही कि चित्रा को मैंने जान-बूझकर धकेला है।'

'झूठ है यह सब। दुनिया जानती है कि तुमने उसे बचाने की पूरी कोशिश की थी। बल्कि उसे बचाते-बचाते खुद मौत के मुंह में गिर गए थे।'

'लेकिन दुनिया में चांद पर थूकने वालों की भी कमी नहीं है। चित्रा का भाई आया हुआ है यहां और वह मुझे उसका कातिल ठहराने की कोशिश कर रहा है।'

'तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।'

'मैं जानता हूं कि मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन तुम्हारी इस हरकत से वह मुझे बदनाम करने की कोशिश कर सकता है। मेरे तुम्हारे पवित्र प्रेम पर कीचड़ उछाल सकता है।'

'मुझे किसी की परवाह नहीं।'

'परवाह तो मुझे भी नहीं है किसी की, लेकिन जिस समाज

में हम रहते हैं, उसकी परवाह हमें न चाहते हुए भी करनी पड़ेगी। इस मामले को जरा ठण्डा पड़ जाने दो। फिर बैठकर बातें करेंगे।'

'मैं मरती मर जाऊंगी, लेकिन उस घर में वापस नहीं जाऊंगी।'

'होश से काम लो आभा।'

'मैंने पूरे होशो-हवास में यह फैसला किया है। अब अगर तुम मेरा साथ नहीं देना चाहते तो कोई बात नहीं। मैं अपना रास्ता खुद चुन लूंगी, लेकिन जो फैसला करके घर से निकल चुकी हूं, उसे नहीं बदलूंगी।'

'अजीब मुसीबत में फंसा दिया तुमने मुझे ?'

'तुम तो कह रहे थे कि तुम दुनिया में मेरे लिए कुछ भी कर सकते हो और अब मैं एकदम तुम्हारे लिए मुसीबत बन गई।'

'तुम गलत समझ रही हो मुझे जानेमन।' केवल ने उसे छाती से लगाकर चूमते हुए कहा—'मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे भी तोड़ सकता हूं, लेकिन यह चित्रा वाला जो हादसा हुआ है इसे तो थोड़ा ठण्डा पड़ जाने देतीं।'

'मैं कुछ नहीं जानती मैं तुम्हारे लिए सब-कुछ छोड़-छाड़कर आ गई हूं। लोक-लाज की मुझे कोई परवाह नहीं…।'

'देखो, तुम एक काम करो। अगर घर लौटकर नहीं जाना चाहतीं तो कोई बात नहीं। तुम यहां से किसी तरह अकेली बम्बई पहुंच सकती हो ?'

'तुम्हारे लिए तो मैं चांद पर भी जा सकती हूं।'

'तुम बम्बई पहुंच जाओ और वहां किसी होटल में नाम बदलकर रहो। मैं दो-चार दिन बाद यहां से बम्बई पहुंचता हूं। वहां फिर इत्मीनान से बैठकर आगे का प्रोग्राम बनाएंगे।'

'ठीक है, लेकिन तुम्हें कैसे पता चलेगा कि मैं किस होटल में ठहरी हूं ?'

'हां, यह भी सोचने की बात है।' केवल ने कहा और वह अपनी सिगरेट के गहरे-गहरे कश लेने लगा।

कुछ देर तक उसकी ओर से कोई जवाब न मिलने पर आभा ने कहा—'क्यों न मैं बम्बई में तुम्हारी कोठी पर ही पहुंच जाऊं।'

'मरवाओगी क्या ? तुम्हारा जीजा पुलिस इन्स्पेक्टर है। जहन्नुम तक पीछा नहीं छोड़ेगा हमारा।'

'कोई हमारा कुछ नहीं कर सकता। मैं बालिग हूं और अपनी मर्जी की मालिक हूं।'

'देखो, तुम थोड़ी देर के लिए खामोश हो जाओ और मुझे कुछ सोचने दो। ऐसा करो तुम थोड़ी देर आराम से बैठो। तब तक मैं कुछ सोचता हूं और साथ ही नहा भी लेता हूं।'

केवल के बाथरूम में घुसने के बाद वह पलंग पर अधलेटी-सी मुद्रा में बैठकर कुछ गुनगुनाने लगी। तकिये पर रखी कोहनी को उसके नीचे किसी सख्त चीज का आभास मिला। तकिया हटाकर देखा तो उसके नीचे पिस्तौल रखा नजर आया।

वह पिस्तौल उठाने ही जा रही थी कि तभी किसी के आने की आहट सुनकर उसने फुर्ती के साथ उसे फिर से तकिये के नीचे दबा दिया और उस पर कोहनी रखकर बैठ गई।

▭ ▭

'चित्रा की मौत उस दुर्घटना में नहीं हुई है इन्स्पेक्टर बल्कि उसकी हत्या की गई है।'

इन्स्पेक्टर सरीन पुलिस स्टेशन में ही मिल गया था राकेश को। अपना परिचय देने और उसके दफ्तर में एक बड़ी-सी मेज के आर-पार उसके सामने बैठने के बाद राकेश ने कहा।

जवाब देने से पहले इन्स्पेक्टर सरीन ने अपनी पीठ कुर्सी की पुश्त से लगाई और बोला—'मैं समझता हूं कि हत्या का शक आपको फिल्म के हीरो केवल पर ही है।'

'जी हां।'

'तब मैं कहना चाहूंगा कैप्टेन कि आपका शक बे बुनियाद है। मैं एक भाई के जज्बात को समझ सकता हूं। लेकिन जब यह दुर्घटना घटी तो मैं मैं मौके बारदात पर मौजूद था और हजारों लोगों के साथ मैंने भी उस दृश्य को देखा था।'

'हे किन आंखें धोखा भी खा सकती हैं।'

'आपकी इस बात से इन्कार नहीं है मुझे। सच पूछें तो उस समय मुझे भी ऐसा महसूस हुआ था कि मेरी आंखें शायद धोखा खा गई हैं और केवल ने जान-बूझकर चित्रा को धक्का

दिया है। उन दोनों के बीच जो मन-मुटाव चल रहा था उससे अपरचित नहीं था मैं। लेकिन जब डायरेक्टर श्रीकान्त के साथ मैंने वह वीडियो फिल्म देखी तो मुझे मानना पड़ा कि केवल पर शक नहीं किया जा सकता। उसने अपनी तरफ से चित्रा को बचाने की पूरी कोशिश की थी।'

'कैमरा भी तो एक किस्म की आंख ही है इन्स्पेक्टर। अगर केवल आदमी की आंखों को धोखा दे सकता है तो क्या कैमरे की आंख को धोखा देना उसके लिए कोई मुश्किल बात होगी ?'

'इस बारे में तो मैं निश्चत रूप से कुछ नहीं कह सकता। उस फिल्म को कई बार देखा है मैंने। इस उम्मीद में कि शायद कहीं केवल के खिलाफ कुछ मिल जाए। लेकिन ऐसा कुछ नहीं मिला मुझे। वह फिल्म केवल की बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत है।'

'लेकिन...।'

'लगता है अभी आपने इस फिल्म को देखा नहीं है। मेरी गुज़ारिश है कि आप एक बार उस फिल्म को देख लें। तब आपको मेरी बात से सहमत होने में दिक्कत नहीं आयेगी।'

'मैं उस फिल्म को श्रीकान्त के साथ देख चुका हूं।'

'उसे देखने के बाद आप किस नतीजे पर पहुंचे ?'

'मैं मानता हूं कि उस फिल्म से केवल के अपराध को साबित नहीं किया जा सकता।'

'मैंने कहा न कि वह फिल्म उसकी बेगुनाही का इतना बड़ा सबूत है कि केवल के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती।'

'वह फिल्म देखने के बाद मैं केवल से मिला था।'

'तो ?'

'वह एक निहायत ही बदतमीज और बद दिमाग किस्म का आदमी है।'

'इससे क्या साबित किया जा सकता है ?'

'वह अपने आपको दुनिया का बहुत ही होशियार और चालाक आदमी समझता है।'

'आपके दुख को मैं समझ सकता हूं कैप्टेन ! लेकिन आप भावनाओं के बहाव में बहकर अपना और मेरा दोनों का वक्त

बरबाद कर रहे हैं। वह बद दिमाग है, अपने आपको दुनिया का सबसे चालाक आदमी समझता है। इन सब बातों का मेन केस से क्या ताल्लुक ?'

'अपनी होशियारी का बखान करने के चक्कर में वह मेरे सामने इस बात को स्वीकार कर चुका है कि उसने चित्रा की हत्या की है।'

'क्या ?'

'जी हां, उसने मेरे सामने स्वीकार किया है कि चित्रा को दौलत के लालच में उसने उसे पहाड़ी से धकेला है। उसके साथ स्वयं भी इसलिए गिर पड़ा कि किसी को उस पर शक न हो। शूटिंग से पहले ही उसने उस स्थल का निरीक्षण करके उस उभरे हुए पेड़ को देख लिया। हीरो बनने से पहले वह फिल्मों में फाइट मास्टर था, जिसका मतलब है कि अजीबो-गरीब स्टंट करने का माहिर है वो। पहाड़ी से गिरते समय पेड़ की टहनी पकड़कर लटक जाना उसके लिए एक बहुत मामूली बात थी।'

सरीन कुछ बोला नहीं। खामोशी के साथ राकेश की ओर देखता रहा।

'मेरी बात का यकीन कीजिए इन्स्पेक्टर।' राकेश मेज पर आगे की ओर झुकता हुआ अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला—'उसने यह सब मेरे सामने स्वीकार किया है।'

'जरूर किया होगा कैप्टन ?'

'तो फिर ऐसे आदमी को गिरफ्तार करने में आपको क्या परेशानी है जिसने अपना अपराध खुद स्वीकार कर लिया है।'

उत्तर में सरीन धीरे से मुस्कराया और बोला।

'लगता है कि फौज में रहने के बाद आपने बाहरी दुनिया से कोई ज्यादा ताल्लुक नहीं रखा कैप्टन ! वरना ऐसी बात न कहते। जब आप कह रहे हैं कि केवल अपने आपको दुनिया का बहुत ही चालाक और होशियार आदमी समझता है तो क्या आपके दिमाग में यह बात नहीं आई कि वह आदमी सब-कुछ स्वीकार करने के बाद अपने बयान से साफ मुकर सकता है।'

'मैं जानता हूं कि वह अपने बयान से मुकर जाएगा।'

'फिर हम किस आधार पर उसे गिरफ्तार कर लें ?'

'आधार अथवा सबूत तो फिलहाल कोई नहीं है। लेकिन

आप मेरा साथ दें तो मुझे उम्मीद है कि हमें कोई न कोई ऐसा सबूत अवश्य मिल जाएगा जिससे उसे अपराधी साबित किया जा सके।'

'आप हम पुलिस वालों की दिक्कतों को नहीं जानते कैप्टन ! अगर बिना उचित सबूतों के आधार पर हम किसी आदमी पर हाथ डाल दें—चाहे हमें उसके अपराधी होने का कितना ही पक्का यकीन क्यों न हो—तो न सिर्फ अदालत और प्रेस में ही हमारी छीछालेदरी होती है बल्कि खुद हमारे अफसर ही हमारी ऐसी-तैसी करके रख देते हैं। सॉरी कैप्टन मुझे अफसोस है कि मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकूंगा।'

'मैंने तो सुना था कि आप एक कर्मठ और धुन के पक्के पुलिस ऑफीसर हैं !'

'लेकिन इतना कर्मठ और धुन का पक्का नहीं कि चट्टान से टकराकर अपना सिर तोड़ लूं। वह फिल्म केवल की बेगुनाही का इतना बड़ा सबूत है कि उसके खिलाफ अगर हमने कोशिश करके कोई छोटा-मोटा सबूत जुटा भी लिया तो वह आंधी में तिनके की तरह उड़ जाएगा।'

'लेकिन आप एक काम तो कर सकते हैं ?'

'क्या ?'

'आप एक बार मेरे साथ केवल के पास तक तो चल सकते हैं।'

'उससे क्या होगा ?'

'केवल ने दम्भ में आकर मेरे सामने तो अपना अपराध स्वीकार कर लिया है, हो सकता है कि वह जोश में आकर आपके सामने भी कोई ऐसी बात कह जाये जिससे…।'

'वह सब बेकार है कैप्टन !' सरीन ने जोर से अपनी गरदन को झटका देकर कहा—'केवल अब अगर मेरे सामने तो क्या सौ आदमियों के सामने भी अपना अपराध स्वीकार कर ले तो भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता। वह अदालत में जाकर अपने बयान से मुकर जाएगा और अपने पक्ष में उस फिल्म को पेश करके साफ बरी हो जायेगा।'

'मैं आपकी दिक्कतों को समझ सकता हूं इन्स्पेक्टर। लेकिन फिर भी अगर आप एक बार मेरे साथ केवल के पास चले चलते तो बहुत मेहरबानी होती।'

'मैं आपकी हर सम्भव सहायता करना चाहता हूं कैप्टन। लेकिन आप रेत से तेल निकालने की कोशिश कर रहे हैं और मैं जानता हूं कि इससे कुछ हासिल होने वाला नहीं है।'

'हासिल होगा इन्स्पेक्टर ?'

'क्या ?'

'अभी सिर्फ केवल ने मेरे सामने ही अपना अपराध स्वीकार किया है और मेरी पोजीशन यह है कि आप जैसा आदमी भी मेरी बात पर पूरी तरह यकीन करने को तैयार नहीं। अगर आपके सामने केवल के मुंह से कोई ऐसी बात निकल गई, जो उसके अपराध को उजागर करती हो, तब एक जैसा सोचने वाले एक की जगह दो आदमी हो जाएंगे।'

'हम चाहे एक जैसा सोचने वाले कितने ही आदमी क्यों न हो जावें, मगर…।'

इन्स्पेक्टर सरीन ने काफी इन्कार करने की कोशिश की। लेकिन जब राकेश ने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी तो वह उसके साथ चलने के लिए तैयार होता हुआ बोला—

'मैं सिर्फ इसलिए आपके साथ चल रहा हूं कि एक सैनिक होने के नाते आप एक प्रकार से मेरे हमपेशा ही हैं। लेकिन यह बात याद रखिएगा कि इस सबसे हासिल कुछ नहीं होगा।'

▭ ▭

जिस समय राकेश इन्स्पेक्टर सरीन के साथ उस पहाड़ी कॉटेज में पहुंचा तो वहां का भयानक दृश्य देखकर चौंक उठा। कमरे में केवल मौजूद था और उसकी शक्ल देखकर इस बात का अन्दाजा लगाया जा सकता था कि वह नहा चुका है। साथ ही मौजूद थी एक लाश—उसी खूबसूरत-सी लड़की की जिसे उसने यहां से निकलते समय एक छोटे-से सूटकेस के साथ आते हुए देखा था।

उन्हें देखते ही केवल राकेश को पूर्ण रूप से नकारता हुआ बोला—'आइए इन्स्पेक्टर साहब, सही मौके पर आ गये आप। मैं अभी आपको खबर करने वाला था।'

लेकिन इन्स्पेक्टर सरीन उसकी बात का कोई जवाब न देने की बजाए फटी-फटी आंखों से उस लाश को देख रहा था, जिसकी गरदन में गोली का सुराख था खून अभी भी उसके गले

से बह रहा था जिसका मतलब था कि उसे मरे ज्यादा देर नहीं हुई है।

'आभा—' अस्फुट स्वर में सरीन के गले से केवल यही शब्द निकला और फिर उसने खूनी नजरों से केवल की ओर देखते हुए कहा—'तुमने मेरी बच्ची को मार दिया?'

'अच्छा तो यह आपकी बेटी है।' केवल ने बड़े ही शान्त स्वर में कहा और एक सिगरेट सुलगाने लगा। वैसे उसकी आवाज में मजाक का पुट था।

'यह मेरी बेटी नहीं बल्कि मेरी साली है, मेरी पत्नी की बहन।' सरीन केवल को घूरते हुए बोला, 'क्यों मार डाला तुमने इसे, क्या बिगाड़ा था इसने तुम्हारा?'

'तुम्हें मेरे बारे में गलतफहमी हो रही है इन्स्पेक्टर…।'

'अब मुझे तुम्हारे बारे में कोई गलतफहमी नहीं रही है।' केवल को खूनी आंखों से घूरता हुआ सरीन अत्यन्त ही खतरनाक स्वर में बोला।—'अब मुझे यकीन हो गया है इस बात का कि तुम एक निहायत ही खतरनाक किस्म के कातिल हो। शूटिंग के वक्त तुमने अपनी बीवी को मार दिया और अब आभा को। तुम्हारा खुला घूमना शरीफ आदमियों की जिन्दगी के लिए बहुत खतरनाक है।'

'आदमियों की नहीं औरतों की बात करो। क्योंकि अभी तक तो मुझ पर औरतों के कत्ल का ही इलजाम लगाया जा रहा है।'

'कत्ल करने के बाद रंगे हाथों पकड़े गए हो तुम और इसके बावजूद भी तुम्हारे चेहरे पर शर्मिन्दगी के कोई आसार नहीं। लगता है, तुम अपने आपको दुनिया का सबसे होशियार और चालाक आदमी समझते हो जिसे इस बात का यकीन है कि वह…।'

'यह बात तो सही है इन्स्पेक्टर कि मैं अपने आपको दुनिया का बहुत चालाक और होशियार आदमी समझता ही नहीं हूं, बल्कि हूं भी।'

'थाने पहुंचने के बाद तुम्हारी यह सारी चालाकी और होशियारी नाक के रास्ते बाहर न निकाल दी तो मेरा भी नाम इन्स्पेक्टर सरीन नहीं।'

'अच्छा?'

उपेक्षा के साथ केवल ने कहा और अजीब ढंग से मुस्कराते हुए उसने चुटकी बजाकर सिगरेट की राख झाड़ी।

राकेश खामोश खड़ा हुआ केवल और इन्स्पेक्टर की बातों को सुन रहा था। लाश के पास खड़ा केवल जिस ढंग से बात कर रहा था, उससे लगता था कि वह उस सम्पूर्ण स्थिति का भरपूर आनन्द ले रहा है। कहीं यह आदमी पागल तो नहीं है—सोचा राकेश ने।

फिर उनकी नजर लाश के पास पड़े पिस्तौल पर पड़ी और वह बोला—'यह पिस्तौल इसी आदमी का होना चाहिए इन्स्पेक्टर! पिछली बार जब मैं यहां आया था तो इसने तकिए के नीचे से वह पिस्तौल निकालकर मुझे दिखाया था।'

'आपको किसी किस्म की गवाही देने की जरूरत नहीं साले साहब।' केवल उसकी ओर उपेक्षा से देखता हुआ बोला—'मैं स्वीकार करता हूं कि यह पिस्तौल मेरा है और इस पर मेरी उंगलियों के निशान भी मिल सकते हैं! कहो तो मैं साथ में यह भी स्वीकार किए लेता हूं कि इसकी हत्या मैंने की है। बस अब तो खुश?'

'मैं आपको हत्या के जुर्म में गिरफ्तार करता हूं मिस्टर केवल।'

'छोड़ो इंस्पेक्टर! किस बेकार के चक्कर में पड़ रहे हो।' केवल ने लापरवाही से कहा—'यह बताओ कि इस मामले को रफा-दफा करने का क्या लोगे?'

तुम्हारी इतनी हिम्मत कि एक सरकारी अफसर को रिश्वत देने की जुर्रत करो।' इन्स्पेक्टर सरीन ने एकदम कड़क कर कहा—'तूने मेरी बेटी जैसी आभा को जान से मार दिया कुत्ते। तुझे तो मैं फांसी पर चढ़ाकर ही दम लूंगा।'

'मगर उससे पहले अगर अकेले में मेरी एक बात सुन लो तो बेहतर रहेगा।'

'अब तुम्हारी सारी बातें तो मैं थाने में ही सुनूंगा। फिल-हाल तो तुम अपने आपको हिरासत में समझो।'

'तुम जो कहोगे मैं वही समझ लूंगा इन्स्पेक्टर! लेकिन तुम्हारी भलाई इसी में है कि एक मिनट अकेले में मेरी बात सुन लो। ऐसा न हो कि अपनी नादानी में तुम कहीं ऐसा गलत कदम उठा जाओ, जिसके लिए तुम्हें जिन्दगी भर पछताना

पड़े।'

'तुम मुझे रौब देना चाहते हो कि तुम्हारे बड़े-बड़े आदमियों से सम्बन्ध होंगे। कान खोलकर सुन लो केवल कि तुम्हारे सम्बन्ध चाहे सीधे पी० एम० से ही क्यों न हों, लेकिन मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।'

खामोशी के साथ उन लोगों की बात सुनते हुए राकेश ने कहा—'इसकी बात सुन लेने में कोई हर्ज नहीं है इन्स्पेक्टर! कम-से-कम इस बात का पता तो चल जाएगा कि कौन हैं इसके सरपरस्त, जिनके दम पर यह इतना ऐंठ रहा है।'

'चाहे चित्रा के भाई हैं हमारे साले साहब, लेकिन खोपड़ी में अक्ल रखते हैं।' केवल ने सिगरेट का अन्तिम कश लेकर उसे अपने हवाई चप्पल पहने पैर से कुचलते हुए कहा—'आओ इन्स्पेक्टर दूसरे कमरे में तुम्हारे कानों में वह मंत्र फूंक दूं जिससे तुम्हारी खोपड़ी में जो मेरे खिलाफ जहर भरा हुआ है, वह उतर जाए।'

'आप यहां का ध्यान रखना कैप्टन।'

सरीन ने कहा और केवल के साथ दूसरे कमरे में चला गया।

राकेश ने बन्द होते दरवाजे को देखा और फिर फर्श पर पड़ी आभा की लाश को देखते हुए सोचने लगा कि अभी कुछ देर पहले उसने इस खूबसूरत लड़की को जीता-जागता देखा था और अब यह मृत पड़ी थी।

उसे अब कोई शक नहीं रहा था कि केवल आदमी के रूप में शैतान से कम नहीं। यह लड़की इन्स्पेक्टर की साली है। जरूर केवल के फिल्मी ग्लैमर की शिकार हो गई होगी। मगर उसकी हवस का शिकार होने से इन्कार कर दिया होगा और उस नराधम ने इसे जान से मार दिया। उसे खुशी थी कि वह इन्स्पेक्टर सरीन को सही मौके पर अपने साथ ले आया।

अब यह आदमी सजा से न बच सकेगा।

▭ ▭

आध घन्टे बाद जब कमरे का दरवाजा खुला तो राकेश इंस्पेक्टर सरीन की हालत देखकर दंग रह गया। जिस दबंग और दिलेर इंस्पेक्टर सरीन को उसने भीतर घुसते हुए देखा था उसकी जगह एक पस्तहिम्मत और दब्बू से सरीन को बाहर निक-

लते देखा उसने। जबकि केवल की ऐंठ और अकड़ पहले से भी ज्यादा बढ़ गई थी और वह बड़ी शान के साथ एक नई सुलगाई हुई सिगरेट के कश ले रहा था।

'क्या हुआ इंस्पेक्टर?' राकेश अपने आपको पूछने से न रोक सका।

'कुछ नहीं कैप्टन।' सरीन ने खोखली-सी आवाज में कहा —'मामला वह नहीं है जो हम समझे थे। आभा ने आत्महत्या की है।'

'यह क्या कह रहे हैं आप?'

'सही कह रहा हूं मैं।' सरीन बोला—'आभा फिल्मों की दीवानी थी। उसके सिर पर हीरोइन बनने का भूत चढ़ा हुआ था। बस्ती में फिल्म की शूटिंग हो रही है यह सुनकर वह पागल-सी हो गई थी और रोज शूटिंग देखने के लिए पहुंच जाती थी। इलाके के पुलिस इंस्पेक्टर की साली है, इसलिए फिल्म के लोग उसे कुछ ज्यादा ही आदर दे दिया करते थे। जिसका उसने गलत अर्थ लगाया और वह समझी कि यह लोग उसे बला की खूबसूरत और ऊंचे दर्जे की कलाकार समझते हैं। मिस्टर केवल से भी वह शूटिंग के दौरान मिला करती थी और उल्टे-सीधे सवाल किया करती थी फिल्मों के बारे में। अपने हीरोइन बनने के बारे में। मिस्टर केवल उसे खुश करने के लिए उसके मन-माफिक जवाब दे दिया करते थे। लेकिन आभा ने उसका गलत अर्थ लगाया। चित्रा की मृत्यु के बाद न जाने क्यों आभा को यह वहम हो गया कि अब इस फिल्म की हीरोइन वही बनेगी। बस आज उसने अपने छोटे-से सूटकेस में अपना सामान समेटा और घर से भागकर मिस्टर केवल के पास आ गई। मिस्टर केवल ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु उसकी अक्ल में कोई बात नहीं आई। उसने कहा कि वह अब घर लौटकर नहीं जाएगी और अगर मिस्टर केवल ने उसकी मदद नहीं की तो वह आत्महत्या कर लेगी। मिस्टर केवल ने उसकी बात को गम्भीरता से नहीं लिया और कहा कि वे नहा-धोकर तयार होने के बाद उसे घर छोड़ आएंगे। यह कहकर वह नहाने के लिए चले गए। यह बात वे भूल गए थे कि उनका पिस्तौल तकिए के नीचे रखा हुआ है। क्योंकि इस पहाड़ी कॉटेज में अकेले रहते थे इसलिए सुरक्षा के नाते अपना पिस्तौल

तकिए के नीचे रखकर सोते थे। अभी वे नहा ही रहे थे कि तभी उन्हें गोली चलने की आवाज सुनाई दी। वे तुरन्त बाहर निकले और देखा कि आभा ने आत्महत्या कर ली है। वे इस घटना की सूचना मुझे देने के लिए तैयार होने ही जा रहे थे, तभी हम लोग वहां पहुंच गए। यह है असली किस्सा।'

कैप्टन राकेश आश्चर्य के साथ इंस्पेक्टर की बात को सुन रहा था। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि एकदम सारा नक्शा इस तरह से बदल जाएगा। अभी कुछ देर पहले तक जो इंस्पेक्टर केवल को फांसी पर चढ़ा देने की बात कर रहा था, वही अब उसे निर्दोष साबित करने की कोशिश कर रहा था।

'नहीं इंस्पेक्टर, यह असली किस्सा नहीं है।' राकेश शब्दों को चबा-चबाकर बोला—'असली किस्सा यह है कि केवल ने उस कमरे में ले जाकर तुम्हारे मुंह प इतना बड़ा चांदी का जूता मारा है कि तुम अपना फर्ज और ईमान सब-कुछ भूल गए। सोने के सिक्कों की चमक ने तुम्हारी लालची आंखों को इस बुरी तरह चौंधियां दिया है कि तुम भूल गए कि यह आदमी उस लड़की का हत्यारा है, जिसे कुछ देर पहले तक तुम बेटी कह रहे थे।'

'मैं तुम्हारी कोई भी बकवास नहीं सुनना चाहता कैप्टन।' सरीन ने तीव्र स्वर में कहा—'इस लड़की ने आत्महत्या की है। यह एक कमजोर दिमाग की फैशनपरस्त लड़की थी, इस बात को मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता क्योंकि इस लड़की को बचपन से मैंने पाला है, अब आप यहां से जाइए और मुझे कानूनी कार्यवाही पूरी करने दीजिए।'

'जाने से पहले यह जानना चाहूंगा इंस्पेक्टर कि जिस लड़की को तुमने बचपन से पाला है, उसकी हत्या के मामले को रफा-दफा करने के लिए तुमने इस आदमी से कितने पैसे खाए हैं?'

'अगर तुम एक मिनट में यहां से नहीं चले गए कैप्टन तो मैं तुम्हें कानूनी कार्यवाही में बाधा डालने के आरोप में गिरफ्तार कर लूंगा।'

राकेश ने सरीन को घूरा और महसूस किया कि अब यहां रुके रहने से कोई फायदा नहीं। इंस्पेक्टर गिरगिट की तरह रंग बदल गया है।

जाने से पहले उसने केवल की ओर देखा, जो बड़े आराम से सिगरेट के कश ले रहा था।

राकेश वहां से बाहर निकल आया।

▭ ▭

यह साला इन्स्पेक्टर सरीन भी उस केवल के हाथों बिक गया है। केवल ने उसकी साली आभा की भी हत्या कर दी। पहले तो बहुत गरज रहा था कि उसे फांसी के फंदे तक ही पहुंचाकर दम लेगा। लेकिन बन्द कमरे में उन लोगों की सौदेबाजी हुई और उस इन्स्पेक्टर का सारा गर्जन-तर्जन कढ़ी के उबाल की तरह बैठ गया, लेकिन मैं भी इन लोगों को छोड़ने वाला नहीं हूं।'

राकेश कॉटिज से निकलने के बाद सीधा उस जगह आया, जहां फिल्म यूनिट का कैम्प लगा हुआ था। श्रीकांत से मिलकर उसे सारी बात बताई। श्रीकांत खामोशी से सुनता रहा।

जब राकेश अपने दिल का गुबार हल्का कर चुका तो वह बोला—'लेकिन आप कर भी क्या सकते हैं ?'

'मैं इन लोगों के षड्यन्त्र का पर्दाफाश करके रहूंगा ?'

'कैसे ?'

श्रीकांत के इस सवाल पर क्षण भर के लिए तो राकेश अचकचा-सा गया। फिर बोला—'जैसे भी सम्भव हो सकेगा। आखिर एक इन्स्पेक्टर ही तो कोई सबसे बड़ी आथोरिटी नहीं है। उससे ऊपर भी एक से एक बड़े अफ़सर हैं। मैं उन तक यह बात पहुंचा आऊंगा।'

'मेरा इरादा आपको हताश करने का नहीं है कैप्टन।' श्रीकांत बोला—'लेकिन मैं समझता हूं कि मौजूदा हालत में इन लोगों का कुछ भी नहीं बिगाड़ा जा सकता। चाहे केवल ने आपके सामने चित्रा की हत्या की बात को स्वीकार कर लिया है, लेकिन उसे किसी भी हालत में साबित नहीं किया जा सकता। वह फिल्म उसकी बेगुनाही का सबसे बड़ा सबूत है।'

'मान लिया कि चित्रा की हत्या के अपराध से वह साफ बरी हो जायेगा, लेकिन आभा की हत्या के अपराध से तो वह इतनी आसानी से न बच सकेगा। अगर उसे आभा की हत्या के अपराध में भी सजा हो गई तो मैं समझूंगा कि चित्रा की मौत का बदला ले लिया है मैंने ?'

'आभा की हत्या के मामले में भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता।' श्रीकांत बोला—'क्योंकि आपके कथनानुसार खुद आभा का जीजा इन्स्पेक्टर शरीन उसकी मौत को आत्महत्या साबित करने पर तुला हुआ है। उस लड़की को मैंने देखा है। वह अक्सर शूटिंग देखने के लिए आती थी। इन्स्पेक्टर की सम्बन्धी होने के नाते हम उसे कुछ विशेष महत्व भी देते थे। केवल की ओर वह कुछ जरूरत से ज्यादा ही आकर्षित थी। फिल्मी हीरो के इर्द-गिर्द भोली-भाली या बेवकूफ लड़कियां तितलियों की तरह मंडराती ही हैं। कुछ तो यहां तक दीवानी होती हैं कि अपने खून से प्रेम-पत्र तक लिख देती हैं। दीवानगी के जोश में वह लड़की आत्महत्या कर गई हो तो कोई ताज्जुब नहीं।'

'लेकिन केवल ने मेरे और इस इन्स्पेक्टर के सामने आभा की हत्या का अपराध स्वीकार किया है।'

'जरूर किया होगा, लेकिन क्या वह इन्स्पेक्टर आपकी बात की ताईद करने के लिए तैयार होगा?'

'शायद नहीं।'

'तब कौन आपकी बात पर यकीन करेगा? मैं केवल को आपसे कहीं ज्यादा अच्छी तरह जानता हूं। वह सौ हरामियों का एक हरामी है। मैं यह बात तो मान सकता हूं कि केवल ने उस लड़की को अपने जाल में फंसा लिया हो। क्योंकि केवल जबर्दस्त वूमैनाइजर है। वह उस लड़की को कोई पट्टी पढ़ाकर कहीं भाग जाने के लिए कहता, जहां बाद में उससे मिलता रहता, यह बात भी समझ में आती है, लेकिन यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि उसने उस लड़की की हत्या की होगी। हो सकता है कि वह लड़की घर से भाग जाने के इरादे से ही केवल के पास आई हो और केवल ने उसे वापिस लौट जाने के लिए कहा हो…।'

'लगता है, आप भी उस आदमी को बेकसूर साबित करने पर तुले हुए हैं।'

'कतई नहीं। मेरी चित्रा के साथ तो हमदर्दी थी और अब भी है, किन्तु केवल के साथ न कभी कोई हमदर्दी थी, न है। आदमी को ज़िन्दगी और व्यापार में कुछ समझौते करने पड़ते हैं। सो यह फिल्म पूरी करने के लिए मैंने भी केवल से सम-

झौता किया, लेकिन केवल के साथ कोई हमदर्दी नहीं है मेरी। मैं अब भी यह मानता हूं कि शायद उसने चित्रा को पहाड़ी पर से जान-बूझकर धक्का दिया है, लेकिन अफसोस यह है कि इस बात को हम कभी भी साबित नहीं कर सकेंगे।'

'इस बात को साबित किया जा सके या न किया जा सके, किंतु मैं केवल को उसके किए की सजा दिलवाए बिना यहां से नहीं जाऊंगा, सजा चाहे उसे चित्रा की हत्या के बदले में हो या आभा की हत्या के बदले में। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

'आपकी मर्जी।' श्रीकांत बोला—'वैसे मेरी सलाह तो यह थी कि इस मामले में आप ज्यादा पंगा न लें तो ज्यादा बेहतर होगा। कहीं ऐसा न हो कि कि आप बेकार ही किसी भारी मुसीबत में फंस जाएं।'

'कैसी मुसीबत ?'

'यह तो मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता, लेकिन और कुछ नहीं तो आप पर कीचड़ उछालने के लिए वह यही कह सकता है कि जीते जी तो बहन का मुंह देखा नहीं, अब उसके मरने के बाद···।'

'यह बात तो उसने मुझसे कह दी है। आपको कैसे पता चला ?'

'यह स्वाभाविक सवाल है जो हर आदमी के मन में उभरता है। कुछ लोग कह देते हैं कुछ नहीं कहते। आपको पहली बार जब देखा था, तब मेरे दिमाग में भी यही बात आई थी, लेकिन मैंने कहा नहीं। केवल ने कह दिया और यहां आने के बाद आपने यह तक नहीं पूछा कि चित्रा की लाश का क्या हुआ ? सीधे आते ही केवल को कातिल साबित करने में जुट गए।'

'हां, यह बात तो मैं जानना चाहता था कि चित्रा की लाश का क्या हुआ ?'

'उसे पुलिस ने देहरादून पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया था, लेकिन केवल अपने फिल्मी प्रभाव से जल्दी-जल्दी पोस्टमार्टम करवाकर उसकी लाश को वहां से ले आया और अन्तिम संस्कार कर दिया। उसकी अस्थियां भी वह हरिद्वार नहीं ले गया बल्कि यहीं एक पहाड़ी नदी में बहा दीं।' श्रीकांत ने कहा और फिर राकेश को घूरता हुआ बोला—'लेकिन जो सवाल

आपने अब मेरे कहने पर पूछा है, वह आपको आते ही पूछना चाहिए था।'

'दरअसल अखबार में जब मैंने चित्रा की मौत की खबर पढ़ी तो मुझे इस बात का यकीन हो गया था कि केवल ने चित्रा की हत्या की है, यानी उसे पहाड़ी से धकेला है और मैं''''।'

'हो सकता है, आपके इरादे बिलकुल सही हों मिस्टर राकेश ! जिस तरह आपने खबर पढ़ते ही बिना किसी बात को जांचे-परखे, बिना किसी सबूत के केवल को हत्यारा मान लिया, उसी तरह अगर आपको देखकर लोग यह सोचने लगें कि यह वह भाई है जिसने जीते अपनी बहन का मुंह नहीं देखा, लेकिन उसके मरते ही करोड़ों की दौलत के लालच में आ गया और अब केवल को चित्रा का कातिल साबित करके उस करोड़ों की दौलत को हासिल करना चाहता है।'

'यह झूठ है ?'

'हो सकता है किन्तु इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि तुम यहां केवल को चित्रा का कातिल साबित करने के इरादे से ही आये हो और जब उस फिल्म को देखने के बाद तुम्हें इस बात का यकीन हो गया कि केवल को चित्रा का हत्यारा साबित नहीं किया जा सकता तो तुम निराश हो गए। फिर भी तुम केवल से मिलने के लिए गए। तुम्हारी केवल से तू-तू मैं-मैं हुई। तुम्हें वहां से निकल जाने के लिए कहकर केवल नहाने के लिए बाथरूम में घुस गया। तभी वहां आभा पहुंची। उससे पहले केवल अपने तकिए के नीचे रखा पिस्तौल तुम्हें दिखा चुका था। बस केवल को फंसाने की तरकीब तुम्हारे दिमाग में आ गई और तुमने आभा की हत्या कर दी और सीधे इन्स्पेक्टर सरीन के पास गए और उसे केवल के कॉटेज पर ले गए ताकि आभा की लाश देखकर वह केवल को अपनी साली का हत्यारा समझे और गिरफ्तार कर ले, लेकिन तुम्हारी चाल कामयाब न हो सकी।'

हक्का-बक्का राकेश श्रीकांत की बातों को सुने जा रहा था।

'यह सब झूठ है।' उसने जोरदार शब्दों में विरोध किया।

'मैं नहीं जानता कि यह सब झूठ है या सच है।' श्रीकांत बोला—'लेकिन आपने पूछा कि आप किस बड़ी मुसीबत में

फंस सकते हैं—सो मैंने बता दिया। अब जबकि वह इन्स्पेक्टर भी केवल के साथ मिल गया है तो जरा सोचिये कि उन दोनों ने मिलकर अगर आपके खिलाफ यह लाइन ऑफ एक्शन लिया तो आप कितनी बड़ी मुसीबत में फंस जाएंगे ?'

श्रीकांत के तम्बू से जब राकेश बाहर निकला तो उसका सिर घूम रहा था और सारा बदन पसीने से सराबोर था।

'नहीं, राकेश मैं तुम्हारी इस बात पर यकीन नहीं कर सकता कि सरीन उस फिल्मी हीरो से पैसे खा गया होगा।' सुपरिन्टेंडेंट भटनागर ने जोरदार शब्दों में विरोध करते हुए कहा—'सरीन को मैं व्यक्तिगत रूप से अच्छी तरह जानता हूं और यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि सरीन और चाहे जो कुछ कर जाये किन्तु पैसे के आगे झुकने वाला आदमी नहीं है।'

श्रीकांत के तम्बू से बाहर निकलने के बाद राकेश काफी देर तक पहाड़ी रास्तों पर अपनी गाड़ी को दौड़ाता रहा। उसकी बातें सुनकर उसका सिर भांय-भांय-सा करने लगा था। एक बार को तो लगा था कि कहीं श्रीकांत भी तो केवल से मिला हुआ नहीं है, लेकिन फिर लगा कि शायद वह श्रीकांत के बारे में गलत सोच रहा है। अगर श्रीकांत केवल से मिला हुआ होता तो उसे फंसाने की जो तरकीब उसने उसे बताई थी उसका जिक्र भी न करता, लेकिन इसमें उसे कोई शक नहीं था कि केवल और इन्स्पेक्टर सरीन चाहें तो दोनों आपस में मिलकर उसे इस आरोप में फंसाने की कोशिश कर सकते हैं। क्योंकि इन्स्पेक्टर सरीन केवल का जरखरीद गुलाम बन चुका था। श्रीकांत ने उसे पहले से ही उनकी चाल के बारे में सावधान करके उस पर उपकार ही किया है।

लेकिन श्रीकांत को इस बात का पता कैसे चला ?

अगले क्षण राकेश को लगा कि इस सवाल का जवाब कोई ज्यादा मुश्किल नहीं है। अगर वह किसी अन्य व्यक्ति के रूप में अपने बारे में पूछे तो निम्नलिखित सवाल दिमाग में उभरने लाजिमी हैं।

१—जीते जी तो बहन का मुंह देखने नहीं आया। मरी हुई बहन की करोड़ों की सम्पत्ति हथियाने का लालच नहीं है तो और क्या है ?

२—सम्पत्ति हासिल करने के लिए चित्रा के पति केवल को रास्ते से हटाना जरूरी है। इसलिए अगर केवल को फंसाने के लिए आभा का कत्ल कर दिया हो तो कोई ताज्जुब की बात होगी क्या?

सोचते-सोचते राकेश को लगा कि वाकई वह दूसरे लोगों की नजरों में सन्देह से परे नहीं हो सकता। दूसरे सवाल के जवाब में वह कह सकता है कि अगर उसे यही करना होता तो वह आभा का कत्ल करने की बजाए सीधे केवल का कत्ल न कर देता, लेकिन वह जानता था कि उसके इस जवाब में कोई दम न था।

बल्कि श्रीकांत की बात में दम था कि इन्स्पेक्टर सरीन केवल से मिल गया है तो वह उसे किसी बड़ी भारी मुसीबत में फंसा सकता था।

केवल की तो उसे कोई खास चिन्ता नहीं थी, लेकिन इस इन्स्पेक्टर सरीन का क्या तोड़ किया जाए?

तभी उसे अपने पिता के मित्र सुपरिंटेंन्डेंट भटनागर का ध्यान आया जो देहरादून में एस० पी० थे।

बस उसने कार का रुख देहरादून की ओर मोड़ा और एस० पी० भटनागर से मिलकर सारी बात बताई। एस० पी० साहब ने सारी बात ध्यानपूर्वक सुनी और इन्स्पेक्टर सरीन के बारे में अपनी राय से अवगत कराया।

'तो आप क्या समझते हैं अंकल कि मैं झूठ बोल रहा हूं?'

'मैं यह नहीं कह रहा, किन्तु सरीन हमारे यहां के बेहतरीन अफसरों में एक है और उसे बिलकुल बेदाग माना जाता है।'

'लेकिन आप ये क्यों भूल जाते हैं अंकल कि आदमी का स्वभाव परिवर्तित होता रहता है। आदमी की नीयत कब और किन हालात में बिगड़ जाए, इस बारे में क्या कहा जा सकता है।'

'मैं इस बात को जानता भी हूं और मानता भी हूं।'

'फिर आप सरीन पर इतना भरोसा कैसे कर सकते हैं?'

'उसका अब तक का रिकार्ड भरोसेमन्द ही रहा है, लेकिन तुमने जो कुछ कहा, उसे भी नहीं नकारा जा सकता। मैं कल ही इस मामले की जांच के लिए किसी अन्य आदमी को भेजता

हूं।'

'यह बात मैं आपके कान में डाल चुका हूं कि शायद केवल के दबाव में आकर सरीन मुझे आभा की हत्या के अपराध में फंसाने की कोशिश करे।

'सरीन ऐसा नहीं करेगा और अगर उसने कोई गलत काम किया है या करने की कोशिश की तो बच भी न सकेगा।' एस० पी० भटनागर ने कहा—'वैसे तुम ठहरे कहां हो ?'

'अभी तो कहीं नहीं ठहरा हूं।'

'तो मेरे साथ घर क्यों नहीं चलते।'

'जी-शुक्रिया। मैं सोच रहा हूं कि वापस लौटकर उस फिल्म डायरेक्टर श्रीकांत से चित्रा और केवल के सम्बन्धों के बारे में कुछ और जानकारी हासिल कर लूं। शायद कोई ऐसी बात मालूम हो जाए जिससे केवल के अपराध को उजागर करने में मदद मिल सके।'

'जैसी तुम्हारी मर्जी। वैसे अब जबकि इस सारे मामले की पड़ताल के लिए मैं अपने आदमी भेज ही रहा हूं तो तुम इस मामले में और ज्यादा न उलझो तो ज्यादा बेहतर होगा।'

जब राकेश एस० पी० साहब से विदा लेकर उनके ऑफिस से बाहर निकला तो सूरज डूब चुका था।

उस पहाड़ी बस्ती में उसने अभी अपने ठहरने की व्यवस्था नहीं की थी। उसे यह भी मालूम नहीं था कि वहां कोई होटल वगैरा भी हैं या नहीं। इसलिए एक बार तो इरादा भी हुआ कि यहीं देहरादून में किसी होटल में ठहर जाए।

लेकिन फिर इरादा बदलकर उस बस्ती में लौटने का ही फैसला किया। कोई होटल नहीं हुआ तो श्रीकांत के डेरे में ही कहीं ठहरने की व्यवस्था कर लेगा, नहीं तो अपनी कार तो है ही। रात में श्रीकांत से चित्रा के बारे में कुछ और बातें जान लेगा।

उसने गाड़ी का रुख पहाड़ी की ओर मोड़ दिया।

जब तक उस बस्ती की ओर जाने वाली पहाड़ी सड़क पर वह पहुंचा, तब तक अन्धेरा आकाश से उतरकर धरती पर फैल गया था।

उसने अपनी कार की हैडलाइट्स जला लीं।

□ □

मुख्य शहर से उस पहाड़ी बस्ती तक का रास्ता कार से लगभग घंटा भर का था। इस बीच रात की गहरी कालिमा चारों ओर छा चुकी थी। बस्ती की जलती हुई रोशनियां दूर से ही राकेश की नजर आने लगी थीं। उससे पहले उसे केवल के कॉटेज की रोशनी दिखाई देने लगी थी जो सबसे अलग-थलग एक पहाड़ी कोने में किसी अकेले सितारे की तरह चमक रहा था।

एक बार तो राकेश की इच्छा हुई कि वह अपनी कार को कॉटेज के पास से निकालकर सीधा श्रीकान्त और उसकी यूनिट के डेरे की ओर ले जाएगा और उससे बस्ती में किसी होटल वगैरह के बारे में पूछताछ करेगा। अगर उसका संकेत समझकर श्रीकान्त ने डेरे में ही कहीं उसके रात गुजारने की व्यवस्था कर दी तो ठीक, वरना कुछ और सोचेगा।

लेकिन तभी राकेश के दिमाग में विचार आया कि श्रीकान्त के डेरे की ओर जाने की बजाए वह पहले केवल से एक बार मिल ले। उसे मालूम था कि केवल उससे सीधे मुंह बात नहीं करेगा। लेकिन यह उम्मीद भी थी कि शायद अपनी चालाकी और होशियारी के जोश में आकर वह यह उगल दे कि उसने इंस्पेक्टर सरीन को कितने में खरीदा है।

इस बीच वह कॉटेज एक पहाड़ी के पीछे छिप गया था। उस पहाड़ी का मोड़ काटते ही कॉटेज की रोशनी फिर से दिखाई देने लगी थी। साथ ही उसे अपनी कार की हैडलाइट्स में एक और चीज की झलक-सी भी दिखाई दी थी। लगा जैसे पुलिस की वर्दी पहने कोई व्यक्ति सड़क से नीचे पहाड़ी की कच्ची ढलान पर उतर गया हो।

अच्छी तरह देख नहीं पाया था वह पुलिस की वर्दी पहने उस आदमी को, फिर भी उसका ख्याल था कि उसने इंस्पेक्टर सरीन को ही देखा है।

यह एक और सबूत था इन्स्पेक्टर सरीन और केवल की मिली भगत का।

लेकिन इस सबूत पर यकीन कौन करेगा? सोचा उसने।

उसने कार को कॉटेज के सामने खड़ा किया और फिर कार का इंजिन बंद करने के साथ-साथ हैडलाइट्स बुझाकर

नीचे उतर आया।

चूंकि कॉटेज का दरवाजा खुला था, इसलिए बिना कोई आवाज अथवा दस्तक दिए ही वह भीतर घुसता चला गया। मगर कुछ कदम बढ़ने के बाद ही एकदम ठिठक कर रुक गया।

सामने केवल की लाश पड़ी हुई थी। मुंह के बल औंधी। उसकी गरदन से खून उबल-उबलकर फर्श पर गिर रहा था, जिसका साफ मतलब था कि उसकी हत्या हुए कुछ मिनट से ज्यादा नहीं हुए हैं।

राकेश ने किनारे की मेज पर रखी व्हिस्की की बोतल और गिलास को देखा। जिसका साफ मतलब था कि हत्या के समय केवल अकेला ही पी रहा था।

उसने झुककर केवल का निरीक्षण किया कि वह मर चुका है अथवा उसमें जीवन का कोई चिन्ह शेष भी है। उसे लगा कि वह मर चुका था।

तभी पीछे से इंस्पेक्टर सरीन की कड़कती-सी आवाज सुनाई दी—'खबरदार! जो अपनी जगह से हिलने की कोशिश की। वरना गोली मार दूंगा।'

वह अपनी जगह स्थिर का स्थिर रह गया।

'अपने हाथ सिर से ऊपर उठाकर घूमो।' राकेश अपने हाथ ऊपर उठाकर घूमा।

दरवाजे के बीच अपना पिस्तौल लिए हुए इंस्पेक्टर सरीन खड़ा था।

'तो आखिर तुमने केवल से अपनी बहन चित्रा की मौत का बदला ले ही लिया?' इंस्पेक्टर सरीन ने उसे घूरते हुए कहा।

लेकिन जवाब देने की बजाए राकेश का दिमाग तेजी के साथ सोचने में लगा हुआ था कि यहां आते समय उसे एक पुलिस वाले की झलक-सी मिली थी, जिसके बारे में उसका ख्याल था कि वह सरीन ही था।

और अब उसे यहां पहुंचे देर भी नहीं हुई कि सरीन ऊपर से यहां पहुंच भी गया।

तभी उसकी नजर सरीन की पैंट पर लगे खून के दाग पर पड़ी और सब खेल उसकी समझ में आ गया।

सरीन यहां से केवल की हत्या करके भागा था। मगर उसे

कॉटेज में घुसता देखकर वह पीछे से आ गया और उसे केवल की हत्या के आरोप में फांसने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन सरीन ने केवल की हत्या क्यों की ?

इन सब बातों को बाद में सोचना बेटे, राकेश ने अपने आप से कहा—अभी यहां से भाग निकलने का उपाय करो। इस इंस्पेक्टर के सिर पर खून सवार है। यह तुम्हारी भी हत्या कर सकता है। अगर तुमने अपने आपको इसके हवाले कर दिया तो कोई ताज्जुब नहीं कि यह सवेरा होने से पहले ही तुम्हें मार डाले। भागने की कोशिश की तो भी यह तुम्हें जान से मारने की कोशिश करेगा। लेकिन उस कोशिश में तुम बचकर निकल भी सकते हो और बाद में इसके अपराध का परदाफाश भी कर सकते हो। भटनागर अंकल को भी मालूम हो जाएगा कि उनके इस ईमानदार और बेदाग इन्स्पेक्टर की असलियत क्या है। भागो राकेश भागो, यहां से।

उसे बातों में उलझाने के लिहाज से राकेश ने कहा—'देखो इन्स्पेक्टर, मैं अभी-अभी देहरादून से यहां आया हूं और…।'

'मैं कोई बकवास नहीं सुनना चाहता।' इन्स्पेक्टर ने उसकी बात काटते हुए कहा—'जो कुछ भी कहना है, अदालत में कहना। फिलहाल तो अपने आपको चुपचाप पुलिस के हवाले कर दो।'

इन्स्पेक्टर सरीन ने उसकी बातों में न उलझने की पूरी कोशिश की। किन्तु फिर भी राकेश किसी तरह उसे भुलावा देकर उसके निकट तक पहुंचने में कामयाब हो गया।

फिर सैनिक की-सी फुर्ती के साथ उसने सरीन पर छलांग लगा दी। बचने के लिए सरीन एक ओर को हटा। दरवाजा खाली मिलते ही राकेश तीर की-सी तेजी से वहां से निकल गया।

कहीं सरीन उस पर फायर न कर दे, इसलिए राकेश ने कार द्वारा भागने का इरादा छोड़ दिया। क्योंकि कार का इंजिन स्टार्ट करने के चक्कर में सरीन उसे गोली मार सकता था और बाद में बयान दे सकता था कि केवल का कत्ल करके उसने भागने की कोशिश की और मारा गया।

वह कॉटेज के पास की झाड़ियों के पार कूदकर कच्ची

पहाड़ी ढलान पर उतरता चला गया।

▭ ▭

वह अभी झाड़ियों में पहुंचा ही था कि तभी पीछे से गोलियों की बौछार-सी हुई। बाल-बाल बचा राकेश। एक गोली उसकी गरदन से रगड़ खाती हुई गुजर गई। बाकी अंधेरे को कंपकंपाती हुई कहां गई? उसे कुछ नहीं मालूम।

लेकिन इससे यह तो साबित हो गया कि इंस्पेक्टर सरीन का इरादा उसे जान से मारने का था। वह उसे केवल की हत्या के अपराध में बलि का बकरा बनाकर फंसा देना चाहता था अथवा जान से मार देना चाहता था।

लेकिन केवल की हत्या सरीन ने की क्यों?

उसने फिर अपने सिर को झटका देकर इस सवाल को खोपड़ी से बाहर निकालने की कोशिश करते हुए अपने आपको समझाया कि इस तरह के सवालों को सोचने में अपना वक्त खराब करने की बजाए फिलहाल वह अपनी जान बचाने की कोशिश करे।

सरीन उसे मौत के घाट उतार देने के लिए उतारू है।

अगर जिन्दा रहा तो इस सवाल का तो क्या उसे बाकी के भी सब सवालों का भी जवाब मिल जाएगा।

अगर कहीं सरीन के हाथों मर गया तो सारे के सारे सवाल अधूरे रह जाएंगे।

किसी सोच-विचार में फंसने की बजाए उसे सबसे पहले अपनी जान बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

लेकिन बचकर जाए कहां।

यह सारा पहाड़ी प्रदेश उसके लिए अजनबी है। यहां के रास्तों और पगडंडियों के बारे में कोई जानकारी नहीं है उसे। ऊपर से यह घनघोर अंधेरा। अगर एक भी गलत कदम बढ़ाया तो खतरा था कि पहाड़ी ढलान से लुढ़क कर वह किसी गहरी खाई में जा गिरेगा चिथड़ा की तरह।

अगर वह खाई में गिरकर मर गया तो भी सरीन का उद्देश्य तो पूरा हो जाएगा। वह कह सकता है कि उसने राकेश को केवल की हत्या करते हुए देख लिया और उसे पकड़ने की कोशिश की, किन्तु राकेश उसे धक्का देकर भाग लिया। उसने उस पर फायर किए, मगर बच गया और बचने की कोशिश में

ही उसका पैर पहाड़ी से फिसला और वह गहरी खाई में गिरकर मर गया।

अपना अपराध उसके सिर मढ़कर सरीन साफ बच जाएगा, बेदाग।

सोचने की कोशिश न करने के बावजूद भी राकेश सोच रहा था।

तभी उसे सरीन की आवाज सुनाई दी—'अपनी जान के दुश्मन मत बनो कैप्टन। अपने आपको मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें फांसी की सजा नहीं होने दूंगा। अगर तुमने आराम से अपना अपराध स्वीकार कर लिया तो मैं यकीन दिलाता हूं कि मैं अदालत से कम-से-कम सजा दिए जाने की सिफारिश करूंगा। अपने आपको मेरे हवाले कर दो।'

लेकिन राकेश के लिए वे सारे शब्द और वायदे महत्वहीन थे। यह ऐसा ही था, जैसे कोई कसाई बकरे को धार के नीचे लाने के लिए फुसला रहा हो।

उसने आवाज से अपने पीछे सरीन की उपस्थिति का अनुमान लगाया। सैनिक अनुशासन से नियंत्रित शरीर तुरन्त अपने दुश्मन को घेरने के लिए सन्नद्ध हो चुका था। वह जानता था कि भागने की कोशिश में कहीं भी लुढ़क पड़ने का खतरा है। जबकि सरीन अभी अकेला है। सेना में तो उन्हें एक साथ कई-कई दुश्मनों से निपटने की शिक्षा दी जाती है। फिर अकेले सरीन को सम्हालना उसके लिए क्या मुश्किल है।

बिना कोई जवाब दिए वह जमीन पर सांप की तरह रेंगता हुआ सरीन के पीछे पहुंच गया। सरीन पिस्तौल हाथ में लिए हुए उसे अंधेरे में इधर-उधर ढूंढने की कोशिश कर रहा था।

राकेश ने सबसे पहले पिस्तौल वाले हाथ पर झपट्टा मारकर उसे एक झटके के साथ उमेठ दिया। उस आकस्मिक हमले के कारण पिस्तौल सरीन के हाथ से निकल गई। फिर भी उसने अपने दूसरे हाथ की कुहनी की चोट राकेश के पेट में मारकर अपने को छुड़ाने की कोशिश की।

दोनों एक-दूसरे से उलझे हुए जमीन पर गिर गए। एक-दूसरे से गुथे हुए वे पहाड़ी ढलान से नीचे लुढ़क चले गए। शुक्र यही था कि वहां कोई गहरा खड्ड या खाई नहीं थी। बल्कि एक चौकोर-सी पहाड़ी जगह पर जाकर वे रुक गए।

वहां पहुंचते ही राकेश ने अपने आपको सम्हाला और फिर सरीन की ऐसी धुनाई की कि वह बुरी तरह पस्त हो गया।

▭ ▭

सरीन ने किसी तरह घुटनों और कुहनियों के बल उठने की कोशिश की। किन्तु शारीरिक क्षमता जवाब दे चुकी थी और वह फिर जमीन पर औंधा गिरकर लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा।

राकेश ने उसे पलटकर सीधा किया और फिर उस पर झुकता हुआ बोला—'अब बोलो इंस्पेक्टर कि केवल का कातिल मैं हूं या तुम?'

सरीन ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उखड़ी-उखड़ी सांसें लेता हुआ फटी-फटी आंखों के साथ उसकी ओर देखता रहा।

'बोलो इन्स्पेक्टर।' राकेश उसके सिर के बाल पकड़ कर उसे जमीन के साथ टकराता हुआ बोला—'वरना मैं तुम्हारा सिर नारियल की तरह फोड़ डालूंगा।

सिर जमीन से टकराते ही सरीन के गले से एक जबर्दस्त चीख निकली।

'बोलो इन्स्पेक्टर।' राकेश गुर्राया—'वरना यूं चीखते-चीखते ही मर जाओगे।'

'बताता हूं। मेरे बाल छोड़ो।' सरीन बिलबिलाया—'हां, मैंने ही केवल की और आभा की हत्या की है।'

उस पर झुका हुआ राकेश सरीन की स्वीकारोक्ति को सुन रहा था।

'मैं ही उन दोनों का हत्यारा हूं।' सरीन कहे जा रहा था —'और अपने अपराध से बचने के लिए मैं तुम्हें केवल का कातिल ठहराना चाहता था। भागते समय अगर तुम मर भी जाते तो मैं कह देता…।'

सरीन कहे जा रहा था और राकेश विस्फारित नेत्रों के साथ सुने जा रहा था। क्योंकि सरीन झूठ बोल रहा था।

केवल की हत्या तो उसने की होगी लेकिन राकेश यह बात दावे के साथ कह सकता था कि आभा की हत्या उसने नहीं की। क्योंकि जब वे केवल के कॉटेज पर पहुंचे थे तो आभा की हत्या हुए मुश्किल से पन्द्रह-बीस मिनट हुए होंगे। जबकि सरीन आब

घण्टे से भी ज्यादा समय से उसके साथ था।

सरीन जो कुछ कह रहा था, उसे पूरी तरह से सुन नहीं रहा था राकेश। उसका दिमाग यह सोचने में लगा हुआ था कि आखिर अब किसे बचाने के लिए सरीन आभा की हत्या का अपराध भी अपने सिर ले रहा है।

'नहीं विभा नहीं।'

अचानक सरीन जोर से चिल्लाया और उसके साथ ही उसने राकेश का हाथ पकड़कर उसे एक ओर को धकेल दिया।

उस अप्रत्याशित झटके के कारण राकेश एक ओर जा गिरा।

अभी वह पूरी तरह से सम्हल भी नहीं पाया था कि तभी उसे सरीन की हृदय विदारक चीख सुनाई दी।

उसने देखा कि सरीन की छाती पर एक बड़ा-सा पत्थर रखा हुआ था और वह उसके नीचे बिन पानी की मछली की तरह तड़प रहा था।

पास ही मौजूद एक स्तब्ध-सी नारी आकृति में अजीब-सी हरकत हुई और—'हे भगवान!' की चीख के साथ वह पागलों की तरह सरीन की छाती पर रखे पत्थर को हटाने लगी।

▭ ▭

'हमारा परिवार एक सुखी परिवार था।' विभा ने बयान दिया—'आभा मेरी छोटी बहन थी। लेकिन हम दोनों ही उसे अपनी बेटी की तरह मानते थे। जब हम लोगों की शादी हुई तो आभा आठ-नौ बरस की थी। मैं उस समय देहरादून में नर्स की नौकरी करती थी जब मेरी सरीन साहब से पहली बार मुलाकात हुई। उस समय यह पुलिस सब-इन्स्पेक्टर थे और बैंक लूटकर भागते हुए लुटेरों को पकड़ने के चक्कर में बुरी तरह घायल हो गये थे। जब इन्हें हॉस्पिटल में लाया गया तो वह जिन्दगी और मौत के बीच झूल रहे थे। इनकी देखभाल की जिम्मेदारी मेरी थी। उसी दौरान हम दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित हुए और इनके ठीक होकर हॉस्पिटल से बाहर निकलने के बाद ही हम लोगों ने शादी कर ली। मेरे मां-बाप पहले ही मर चुके थे, लिहाजा आभा को पालने-पोसने की

जिम्मेदारी मेरी थी। शादी के बाद आभा हमारे साथ रहने लगी। इन्होंने भी उसे मेरी तरह अपनी बेटी जैसा ही समझा। जब इन्हें इन्स्पेक्टर बनाकर इस पहाड़ी बस्ती में भेजा गया तो मुझे नर्स की नौकरी छोड़ देनी पड़ी।"

'हमारे अपने कोई सन्तान नहीं हुई; इसलिए अपना सारा प्यार-दुलार हमने आभा पर ही लुटा दिया। देहरादून के ही एक कॉलिज से उसने बी० ए० किया। आभा नौकरी करना चाहती थी किन्तु हमारी इच्छा थी कि उसके हाथ पीले करके अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएं। सरीन साहब उसके लिए योग्य वर की तलाश कर रहे थे।

अचानक ही कुछ दिन पहले यह फिल्म कम्पनी शूटिंग के लिए हमारी बस्ती में आई और हमारे शान्त सुखी पारिवारिक जीवन में एकदम भूचाल-सा आ गया। आभा के रंग-ढंग एकदम बदल गये। वह फिल्मों में हीरोइन बनने के सपने देखने लगी। उसके बदले तौर-तरीके देखकर मैं चिन्तित हो उठी। सरीन साहब से शिकायत की तो उन्होंने मेरी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, उन्हें आभा पर पूरा भरोसा था और मेरे शिकायत करने पर ये यह कहकर मुझे चुप करा देते कि आभा एक पढ़ी-लिखी समझदार लड़की है। वह कोई ऐसा कदम नहीं उठाएगी जो गलत होगा।

लेकिन मैं जानती थी कि फिल्मी चकाचौंध ने आभा की सारी समझदारी गायब कर दी थी। उस फिल्मी हीरो केवल ने न जाने उसे क्या घुट्टी पिलाई थी कि वह दिन भर उसी का राग अलापती रहती और घंटों शीशे के सामने खड़ी अजीब-अजीब हरकतें करती रहती। मैं उसे समझाने की कोशिश करती तो वह तुर्की-ब-तुर्की जवाब देती। शूटिंग के समय हुई उस दुर्घटना में चित्रा की मौत के बाद से तो उसका फिल्मी बुखार और भी अधिक बढ़ गया। वह कहने लगी थी कि अब इस फिल्म की हीरोइन वह बनेगी। उसके बदले हुए तौर-तरीके देखकर मैं किसी अनिष्ट की आशंका से भीतर ही भीतर कांप जाती थी। सरीन साहब से कुछ कहती तो वह मेरी बात पर ध्यान ही न देते।

आज सरीन साहब के ड्यूटी पर जाने के बाद आभा के तौर-तरीकों से चिन्तित होकर मैं उसे समझाने लगी तो बात-

बात में बात बढ़ गई और गुस्से में आकर उसने एक छोटे से सूटकेस में अपना जरूरी सामान डाला और फिर उस घर में कभी न आने की कसम खाकर वहां से चल दी।

उसकी इस हरकत पर पहले तो मैं हक्की-बक्की रह गई। आभा ऐसा भयानक कदम उठा जाएगी, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी। काफी देर तक तो मेरी कुछ समझ में न आया कि मैं क्या करूं? फिर इससे पहले कि आभा कहीं दूर निकल जाये और भागने की खबर बस्ती में फैल जाने के कारण हमारी बदनामी हो, मैं उसे समझा-बुझाकर लौटा लाने के उद्देश्य से उस फिल्मी हीरो केवल के कॉटेज की ओर चल दी। आभा की बातों से इतना तो मैं अनुमान लगा ही चुकी थी कि वह यह सब-कुछ केवल की शह पर ही कर रही है—इसलिए मुझे यकीन था कि घर से निकलने के बाद वह केवल के पास ही जाएगी।

कॉटेज पहुंचने पर मैंने आभा को वहीं पाया। केवल कहीं दिखाई नहीं दिया। मैंने आभा को समझा-बुझाकर वापिस लौटा ले चलने की काफी कोशिश की। लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। उसका यही कहना था कि एक बार उसने घर छोड़ दिया सो छोड़ दिया। अब वह किसी भी कीमत पर उस घर में वापिस लौटकर नहीं जाएगी।

'तुम अगर घर छोड़कर जाओगी तो पहले मुझे जान से मारना होगा।' मैंने उसे प्रभावित करने के उद्देश्य से कहा—'अपने जीते-जी तो मैं तुम्हें घर छोड़कर कहीं नहीं जाने दूंगी।'

मेरा ख्याल था कि मेरी इस बात को सुनकर आभा पिघल जाएगी। लेकिन उस वक्त मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब आभा ने बड़े आराम से तकिये के नीचे से पिस्तौल निकाल कर मेरी ओर तान दी और बोली—'कहो तो तुम्हारी यह इच्छा अभी पूरी कर दूं।'

मैं तो अवाक रह गई वह सब देख सुनकर। मेरी अपनी ही बहन जिसे मैंने बेटी की तरह पाला—मुझे ही मारने के लिए मेरे सामने पिस्तौल ताने खड़ी थी। मेरी खोपड़ी ने काम करना बन्द कर दिया। अपनी आंखों पर यकीन नहीं आ रहा था मुझे; आभा के चेहरे से मुझे लगा कि जो कुछ वह कह रही

है उसे कर गुजरने में वह हिचकेगी नहीं। मैं नहीं जानती कि मैं वहां से डरकर लौट क्यों नहीं आई। मुझे बस इतना याद है कि आभा के हाथ से पिस्तौल छीनने के लिए मैं उस पर झपट पड़ी। उस छीना-झपटी में न जाने कब पिस्तौल चल गई और गोली आभा की गरदन में जा धंसी। पिस्तौल की आवाज सुनते ही मैंने घबराकर आभा को छोड़ दिया और पीछे हट गई। मेरे देखते-देखते आभा निर्जीव होकर फर्श पर गिर पड़ी। पिस्तौल उसके हाथ से छूटकर पहले ही गिर चुका था।

आभा मेरी बहन। कहकर मैं आभा की ओर झपटने ही जा रही थी कि तभी एक दरवाजा खुला और तौलिया लपेटे केवल मेरे सामने खड़ा था। उसे देखते ही मैं और भी अधिक घबरा गई और वहां से एकदम भाग ली। केवल ने मेरा पीछा करने की कोई कोशिश नहीं की।

वहां से भागने के बाद सीधे घर आकर ही दम लिया मैंने। जो कुछ हुआ था, उसकी दहशत मेरे ऊपर छाई हुई थी और मैं नहीं जानती थी कि अब क्या होगा? मैं यही सोच-सोचकर कांप रही थी कि केवल ने मुझे देख लिया है और उसकी गवाही मुझे फांसी के फंदे तक पहुंचा देगी। केवल के प्रति मेरे दिल में नफरत के शोले भड़कने लगे। अगर उसने आभा को न बहकाया होता तो आज जो कुछ घटा, उसकी नौबत न आई होती।

दोपहर बाद सरीन साहब आये और सारी बात सुनकर मुझे डांटने-फटकारने लगे कि अगर मैं वहां से भागी न होती तो अदालत में सच्ची बात बताकर मुझे बचाया जा सकता था। लेकिन वहां से भागकर न सिर्फ मैंने अपने आपको अपराधी साबित कर दिया है, बल्कि उनकी गरदन भी अब हमेशा के लिए केवल के चंगुल में फंसी रहेगी।'

मुझे मालूम है कि मेरे पति एक कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार पुलिस ऑफीसर हैं और उन्होंने जिन्दगी में कभी कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे किसी के सामने उन्हें अपनी गरदन झुकाने की जरूरत महसूस हो। मेरी वजह से उनकी गरदन केवल जैसे कमीने आदमी के सामने झुके, यह मैं कभी बरदाश्त नहीं कर सकती थी। हमारे घर की सुख-शान्ति उजाड़ने वाला केवल ही था। जब तक वह जिन्दा रहेगा, तब तक हमारा

जीवन कभी भी सामान्य न हो सकेगा। लिहाजा मैंने केवल को खत्म करने का फैसला कर लिया। लेकिन अपने इस इरादे की भनक सरीन साहब को न लगने दी। क्योंकि मैं जानती थी कि अगर उन्हें पता चल गया तो वे मुझे ऐसा कभी न करने देंगे।'

'सरीन साहब वापिस ड्यूटी पर चले गये थे। बाहर जब रात का अन्धेरा अच्छी तरह से उतर आया तो मैंने सरीन साहब की अलमारी में से चाकू निकाला और उसे अपने कपड़ों के भीतर छिपाकर केवल के कॉटिज की ओर चल दी। वह उस समय शराब पी रहा था। मुझे देखते ही उसकी बांछें खिल गईं। जब मैंने उसे बताया कि मैं उसका शुक्रिया अदा करने के लिए आई हूं तो उसके चेहरे पर कामुकता के भाव उभर आए। वह ओछी हरकतों पर उतर आया। मौके की तलाश में मैं उसकी उन बेहूदा हकरतों को सहती रही और जबवह मेरी पिंडलियों को सहलाने के लिए नीचे झुका तो मैंने उसकी गरदन में चाकू उतार दिया। वह वहीं ढेर हो गया।'

अपना काम पूरा करते ही मैं तुरन्त वहां से निकल आई, लेकिन बाहर निकलते ही मुझे किसी के आने की आहट मिली और मैं पास की झाड़ियों में छिप गई। वे सरीन साहब थे। मेरे देखते-देखते वे कॉटेज में घुस गए। मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि सरीन साहब मेरे पीछे-पीछे वहां कैसे पहुंच गये? मैं उस समय उनके सामने नहीं पड़ना चाहती थी—क्योंकि खतरा था कि कहीं कोई अन्य व्यक्ति भी वहां न पहुंच जाये। इसलिए चुपचाप झाड़ियों में से निकली और सड़क पार करके पहाड़ी की ढलान पर उतर गई।

अभी ज्यादा दूर नहीं जा पाई थी कि तभी पीछे से किसी वाहन की रोशनी की चमक ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। मैंने मुड़कर देखा तो सरीन साहब को अपने पीछे ढलान पर उतरते पाया। मैंने अपनी चाल और तेज कर दी। इस जल्दबाजी में मेरी चप्पल मेरे पैर से निकल गई। मैंने घूमकर देखा। सरीन साहब वापिस ऊपर की तरफ लौट रहे थे। हालांकि मैं जल्दी से जल्दी वहां से चली जाना चाहती थी किन्तु चप्पल छोड़कर जाना मूर्खता थी। मैं चप्पल तलाश करने लगी। लेकिन अन्धेरे के कारण चप्पल दिखाई न दी और काफी खोज-

बीन के बाद जब चप्पल मिली तो तभी मुझे फायरों की आवाज सुनाई दी। मेरा कलेजा एकदम धक से रह गया। न जाने मुझे क्यों ऐसा लगा कि सरीन साहब जबर्दस्त खतरे में हैं और मैं बरबस ही वापिस लौट पड़ी।

'जब आवाजों का अनुसरण करते हुए मैं कॉटेज के पिछवाड़े की तरफ पहुंची तो मैंने सरीन साहब को जमीन पर पड़े हुए और एक अन्य आदमी को खतरनाक ढंग से उन पर झुके देखा। उससे पहले सरीन साहब की चीख मैं सुन ही चुकी थी। मुझे लगा कि यह आदमी मेरे पति को जान से मार देना चाहता है। बस मैंने आव देखा न ताव, अपने पति को बचाने की खातिर उस आदमी के सिर पर दे मारने के लिए पास ही पड़े एक बड़े से पत्थर को उठा लिया।

तभी न जाने क्या हुआ कि वह आदमी एकदम बीच में से हट गया और पत्थर सरीन साहब की छाती पर पड़ा। जब मुझे एहसास हुआ कि यह मुझसे क्या हो गया तो मैं चीख मारकर छाती से पत्थर हटाने के लिए झपटी। उस आदमी ने भी मेरी मदद की जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह चित्रा के भाई कैप्टन राजेश थे। उन्होंने मेरे साथ मिलकर मेरे पति को उठाया और कार में डालकर फौरन देहरादून इस हॉस्पिटल में ले आये। मेरे पति बच तो जाएंगे न सर?'

सारा बयान देने के बाद यह अन्तिम सवाल विभा ने एस० पी० भटनागर से किया था।

▭ ▭

राकेश की समझ में इतना तो आ गया था कि जिस औरत ने अचानक उस पर हमला किया था, वह इन्स्पेक्टर सरीन की पत्नी विभा थी। बाद में उसके बयान से भी समझ में आ गया था कि उसने उस पर हमला क्यों किया था। किन्तु यह बात अभी तक समझ में न आ सकी थी कि सरीन ने उसे क्यों बचाया। जो व्यक्ति थोड़ी देर पहले तक उस पर पिस्तौल की गोलियां बरसाता हुआ उसे मौत के घाट उतारने की कोशिश कर रहा था, उसने क्यों एकदम उसे बचाने के लिए अपनी जान को खतरे में डाल दिया? वह इस सच्चाई से इन्कार नहीं कर सकता था कि अगर सरीन ने उस समय उसे न बचाया होता तो शायद इस समय वह जीवित न होता।

यही कारण था कि जब विभा अपने पति की छाती से पत्थर हटाने लगी तो उसने तुरन्त उसकी सहायता की। उस वजनी पत्थर की चोट से सरीन की छाती की हड्डियां और पसलियां टूट गई थीं और उसकी हालत काफी खराब थी।

बस्ती में तो कोई हॉस्पिटल था नहीं, लिहाजा राकेश ने सरीन को विभा की सहायता से कार में डाला और तुरन्त देहरादून के लिए चल दिया। रास्ते भर सरीन दर्द के मारे कराहता रहा और विभा एक नर्स की तरह उसकी देखभाल करती रही।

सरीन को हॉस्पिटल में भरती कराने के बाद राकेश ने वहां मौजूद पुलिस की सहायता से तुरन्त एस० पी० भटनागर को फोन करके सूचना दी। वे फौरन हॉस्पिटल पहुंचे। वहीं से एक पुलिस पार्टी को आवश्यक कार्यवाही के साथ केवल की लाश उठाने के लिए उस बस्ती की ओर रवाना होने का हुक्म दिया। उसके बाद विभा का बयान लिया गया।

लेकिन सरीन अगले दिन से पहले बयान देने के काबिल हो सका।

'आभा के बदले हुए तौर-तरीकों के बारे में मेरी पत्नी विभा मुझे सूचना देती रहती थी।' इन्स्पेक्टर सरीन ने अपने बयान में कहा—'लेकिन मैंने कभी उसकी बात को गम्भीरता से नहीं लिया। मैं यही समझता था कि आभा एक पढ़ी-लिखी और समझदार लड़की है। वह कोई गलत कदम उठा ही नहीं सकती। पिछले दिन जब मैं कैप्टन राकेश के आग्रह पर केवल के कॉटेज में पहुंचा तो वहां आभा की लाश देखकर स्तब्ध रह गया। मैंने यही समझा कि केवल ने आभा के साथ कोई अनुचित हरकत करनी चाही होगी जिसका आभा ने विरोध किया होगा और उसने गुस्से में आकर उसे मार डाला। वह आदमी शुरू से ही मुझे आधा पागल-सा लगता था। मुझे इस बात का भी शक था कि उस आदमी ने अपनी एक्ट्रेस पत्नी चित्रा की भी हत्या की है। हालांकि अपनी बात को साबित करने के लिए मेरे पास कोई सबूत नहीं था। डायरेक्टर श्रीकांत ने जो उस दुर्घटना वाले सीन की वीडियो फिल्म दिखाई थी, वह उसी के पक्ष में जाती थी।

बहरहाल मुझे इस बात का पूरा यकीन था कि उस व्यक्ति

ने ही आभा की हत्या की है और मैं उसे गिरफ्तार करने के लिए बजिद था। किन्तु केवल का व्यवहार मुझे न केवल उत्तेजित कर रहा था, बल्कि साथ ही साथ विचलित भी। जब उसने मुझे रिश्वत देने की पेशकश की, उस समय तो मैं अपना आपा ही खो बैठा। बाद में उसने मुझसे अकेले में बात करने का आग्रह किया। पहले तो मैंने इन्कार किया किन्तु फिर कैप्टन राकेश के आग्रह पर यह जानने के लिए कि वह किन बड़े आदमियों का नाम लेकर मुझ पर दबाव डालना चाहता है, मैं उसके साथ दूसरे कमरे की ओर चल दिया।

हालांकि मैं इस बात के लिए पूरी तरह तैयार होकर गया था कि केवल के किसी भी दबाव के आगे नहीं झुकूंगा। लेकिन केवल ने उस बन्द कमरे में जो कुछ मुझे बताया, उसने मेरे पैरों तले की जमीन खिसका दी। मुझे लगा जैसे मेरी सारी दुनिया ही ताश के पत्तों के महल की तरह बिखर गई हो। हालांकि मुझे इस बात पर यकीन नहीं आ रहा था कि विभा ने उस आभा का कत्ल कर दिया होगा जिसे हमने बेटी की तरह पाला है, लेकिन घर में पिछले दिनों हुई घटनाएं एक बार फिर मेरे सामने साकार हो उठीं। पिछले कुछ दिनों से दोनों बहनों में झगड़ा होता ही रहता था। मैं नहीं समझता था कि उस झगड़े ने इतना उग्ररूप धारण कर लिया होगा कि विभा आभा की हत्या कर दे, लेकिन फिर भी मन में आशंका का नाग अपना फन उठा चुका था और मुझे लगा कि शायद ऐसा ही हो गया हो अन्यथा केवल आभा की लाश के पास पकड़ा जाने के बावजूद इतना निश्चिन्त और आश्वस्त नहीं होता।

शायद केवल ने भी मेरे भीतरी विचारों को मेरे चेहरे से पढ़ लिया था क्योंकि उसने मुझे सलाह दी कि मैं कोई भी गलत कदम उठाने की बजाए पहले इस बारे में विभा से बात कर लूं। मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि केवल ने आभा की हत्या का आरोप सीधे-सीधे विभा पर लगाने के बाद मेरी मदद करने का नाटक क्यों किया, लेकिन मेरा ख्याल है कि शायद उसे लोगों को अपने कब्जे में करने का शौक था। मेरी मदद करने के बहाने वह मेरे रहस्य का भागीदार बनकर मुझे अपने कब्जे में कर ही सकता था, लेकिन अपनी पत्नी विभा को, जिसे कि मैं अपनी जिन्दगी से भी ज्यादा चाहता हूं। बचाने के

लिए मैं कुछ भी करने को तैयार था। बहरहाल उस समय केवल की बात मानने में ही मुझे अपनी भलाई नजर आई और मैंने प्रचारित कर दिया कि आभा ने आत्महत्या की है। आभा तो मर गई थी, अब मैं हर कीमत पर विभा को बचाना चाहता था। तब मुझे क्या मालूम था कि नियति मेरे साथ कितना निर्मम खेल खेलने जा रही है।

दोपहर बाद घर लौटकर मैंने विभा से सारी बात जाननी चाही और उसने मुझे सब-कुछ सच-सच बता दिया। मैंने उसे वहां से भाग आने के लिए डांटा और कहा कि अगर वह वहीं रहती अथवा पुलिस स्टेशन आकर सब-कुछ सच-सच बता देती तो सारे मामले को एक दुर्घटना बताकर, जो कि वह वास्तव में थी, उसे साफ बचाया जा सकता था। मैंने शायद यह भी कह दिया था कि अब सारी जिन्दगी मेरी गरदन उस केवल के हाथ में फंसी रहेगी।

आभा के मामले को पूरी तरह आत्महत्या का रूप देने के उद्देश्य से मैं फिर पुलिस स्टेशन लौट आया। शाम को अंधेरा होने के बाद जब घर लौटा तो विभा को घर न पाकर चकित हुआ। न जाने क्यों मेरे मन में यह ख्याल आया कि कहीं वह केवल की ओर ही न गई हो। मैं तुरन्त कच्चे पहाड़ी रास्ते से केवल के कॉटेज की ओर चल दिया। क्योंकि मुझे विश्वास था कि अगर विभा उधर गई होगी तो उसी रास्ते से गई होगी।

मेरा इरादा विभा को रास्ते में ही पकड़ लेने का था। किन्तु विभा तो न मिली हां, कॉटेज में केवल की लाश जरूर मिली। उसकी गरदन में मेरा ही चाकू धंसा हुआ था। उस चाकू को देखकर मुझे इस बात में कोई सन्देह न रहा कि यह काम विभा का ही है। उसे बचाने के उद्देश्य से मैंने उसकी गरदन से चाकू निकाला और वहां से चल दिया। मेरा इरादा चाकू को किसी ऐसी जगह दबाने देने का था जहां वह किसी को न मिल सके। चाकू लेकर अभी सड़क पार करके मैं कच्चे पहाड़ी के रास्ते के किनारे पर पहुंचा ही था कि अचानक मुझे किसी कार की हैडलाइट्स की चमक दिखाई दी। मैं फुर्ती के साथ वहां से नीचे को उतर गया और अपने आपको झाड़ियों के पीछे छिपाकर उस कार को देखने लगा। वह कार कॉटेज के सामने रुकी और उसमें से कैप्टन राकेश को उतरते देखा मैंने।

उसे देखते ही एकदम मेरे दिमाग में यह विचार कौंधा कि अगर केवल की हत्या के अपराध में राकेश को फंसा दिया जाए तो विभा को साफ बचाया जा सकता है। हालांकि एक निर्दोष व्यक्ति को झूठे अपराध में फंसाने के लिए मेरी अन्तरात्मा मुझे धिक्कार रही थी, किन्तु फिर भी विभा को बचाने की खातिर मैंने अपनी अन्तरात्मा की आवाज को अनसुना करके अपना पिस्तौल निकालकर राकेश को पकड़ने के उद्देश्य से मैं वहां पहुंच गया।

जब राकेश मुझे धक्का देकर वहां से भागा तो मैं चाहकर भी उस पर गोली न चला सका। क्योंकि भीतर से कोई बार-बार मुझसे कह रहा था कि मैं बहुत बड़ा अनर्थ करने जा रहा हूं। इसी दुविधा में फंसा होने के कारण मैं उस पर गोली न चला सका और वह बाहर की ओर भाग गया किन्तु तभी मेरे स्वार्थी मन ने मुझे चेताया कि अगर राकेश को केवल का कातिल न साबित किया गया तो उसके कातिल की तलाश जारी रहेगी। हो सकता है कि उसकी तलाश में राजधानी से जासूस भेजे जाएं, तब कहीं ऐसा न हो कि उन लोगों की वह तलाश विभा पर जाकर ही खत्म हो। लिहाजा मैं सारे विवेक और नैतिकता को ताक पर रखकर राकेश को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के इरादे से गोलियां बरसाता हुआ उसके पीछे भागा।

लेकिन होनी को तो कुछ और मंजूर था। मैं तो राकेश को क्या पकड़ पाता, उसने ही मुझे पीछे से पकड़कर ऐसा पस्त कर दिया कि मैं उठने के काबिल भी न रहा जब उसने केवल के कातिल के बारे में जानना चाहा तो मैंने विभा को बचाने के उद्देश्य से कह दिया कि केवल और आभा दोनों के कत्ल मैंने किए हैं।

मैं जमीन पर चित पड़ा हुआ था और केवल मेरे ऊपर झुका हुआ था। जब मैंने देखा कि विभा एक बड़ा-सा पत्थर उठाए उस पर वार करने जा रही है। मैं नहीं जानता कि किस भावना के आधीन जिस आदमी को मैं थोड़ी देर पहले मारने जा रहा था, उसे ही बचाने के लिए मैंने उसे एक ओर धकेल दिया। इस बात का मुझे कोई पश्चात्ताप नहीं है कि उसे बचाने की खातिर मैं बुरी तरह घायल हो गया। पश्चात्ताप तो इस बात का है कि अपने निजी स्वार्थ में अन्धा होकर मैं

अपने कर्त्तव्य से भटक गया। काश ! केवल की बातों में आकर मैंने विभा को बचाने की कोशिश न की होती और सारे मामले पर कानूनी ढंग से अमल किया होता तो विभा भी बच जाती और हालात ने इतना खतरनाक मोड़ भी न लिया होता, लेकिन होनी को कौन टाल सकता है।'

इन्स्पेक्टर सरीन शायद अपना बयान देने के लिए ही जिन्दा रहा था। क्योंकि बयान देने के बाद उसकी हालात एकदम बिगडनो शुरू हो गई और दो घण्टे बाद ही वह मर गया।

विभा पर मुकद्दमा चला।

आभा वाले मामले में तो उसे बाइज्जत बरी कर दिया गया। मगर केवल की हत्या के आरोप में उसे दस साल की सजा हुई, जो हाईकोर्ट में सात साल की कर दी गई।

आभा के मुकद्दमे का खर्च राकेश ने ही उठाया और उसे बचाने के लिए काफी भाग-दौड़ भी की। क्योंकि वह इस बात को नहीं भूल पाया था कि यह उस आदमी की पत्नी है जिसने उसे बचाने के लिए अपनी जान दी थी।

विभा की जो चल-अचल सम्पत्ति उसे मिली, उससे उसने एक ट्रस्ट की स्थापना करके एक धर्मार्थ हॉस्पिटल खोल दिया था जिसमें एक प्रमुख पद खाली पड़ा था।

वह पद विभा के जेल से रिहा होने का इन्तजार कर रहा था।

●●●

डायमंड पाकेट बुक्स में

लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार

वेद प्रकाश काम्बोज

का नया जासूसी उपन्यास

आखिरी बाज़ी